



# भारत का राजपत्र

# The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० ८]

नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 21, 1981/फाल्गुन 2, 1902

No. 8] NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 21, 1981/PHALGUNA 2, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाले जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

भाग II—संख्या 3—उप-संख्या (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं  
Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India  
(other than the Ministry of Defence)

गृह मंत्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 7 फरवरी, 1981

दृष्टा०आ० ५९६.—केन्द्रीय मरकार, आयुध अधिनियम, 1959  
(1959 का 54) की धारा 45 के खण्ड (ख) के उपखण्ड (i) के अनुसरण में, निर्देश देती है कि उक्त अधिनियम की कोई भी बात, विक्रम साराधार्इ अन्तरिक्ष केन्द्र, निवेद्धम के अमोनियम परक्लोरेट प्रयोगीय संयंव, अलवे, केंगल के किए गये अर्जन, कब्जे, वहन, विनिर्माण, मरम्मन, सपरिवर्तन, परीक्षण या मनून और परिवहन को, जिसमें भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन, अन्तरिक्ष विभाग के अन्तरिक्ष अनुसंधान क्रियाकलापों के मध्यन्द में प्रयोग के लिए अमोनियम परक्लोरेट के विनिर्माण के विभिन्न प्रक्रम अन्वर्तित हैं, नाम नहीं होगी।

[एफ०स० V-11018/3/79-जी०पी०ए-५]

ओ०आ० श्रीमिवासन, उप सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

ORDER

New Delhi, the 7th February, 1981

S.O. 596.—In pursuance of sub-clause (i) of Clause (b) of section 45 of the Arms Act, 1959 (54 of 1959), the Central Government hereby directs that nothing in the said Act shall apply to the acquisition, possession, carrying, the manufacture, repair, conversion, test or proof and transport carried out at the Ammonium Perchlorate Experimental Plant, Alwaye, Kerala of the Vikram Sarabhai Space Centre, Trivandrum involving various stages of manufacture of Ammonium Perchlorate for use in connection with the space research activities of the Indian Space Research Organisation, Department of Space.

[F. No. V. 11018/3/79-GPA. V]

O. R. SRINIVASAN, Dy. Secy.

## वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 21 नवम्बर, 1980

आयकर

**का०आ० 597.**—केन्द्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 80-छ की उपधारा (2) (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, “श्री कण्ठेश्वर मंदिर, कण्ठेश्वर, दक्षिण कन्नड, कर्नाटक” को उक्त धारा के प्रयोजनों के लिए कर्नाटक राज्य के सर्वेत्र विद्युत लोक-पूजा के स्थान के रूप में अधिसूचित करती है।

[मा० 3752/फा०सं० 176/31/80-आई०टी० (ए-1)]

## MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 21st November, 1980

## INCOME-TAX

**S.O. 597.**—In exercise of the powers conferred by sub-section (2)(b) of Section 88-G of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies “Shri Kantheshwara Temple, Kantheshwara, Dakshina Kannada, Karnataka” to be a place of public worship of renown throughout the State of Karnataka for the purposes of the said Section

[No. 3752/F. No. 176/31/80-JT(AD)]

नई दिल्ली, 28 नवम्बर, 1980

**का०आ० 598.**—केन्द्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 80-छ की उपधारा (2) (ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, अरुलमिगु वैकटाचलपती मन्दिर, तिरुनेल्वेली में संलग्न) को उक्त धारा के प्रयोजन के लिए तमिलनाडु राज्य में सर्वेत्र विद्युत लोक-पूजा के स्थान के रूप में अधिसूचित करती है।

[मा० 3754/फा०सं० 176/51/79-आई०टी० (ए-1)]

बी०बी० थीनिवासन, उप सचिव

New Delhi, the 28th November, 1980

**S.O. 598.**—In exercise of the powers conferred by sub-section (2)(b) of Section 80-G of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies Arulmigu Venkatachalapathy Temple, Krishnapuram (Attached to Arulmigu Nelliappar Temple, Tirunelveli) to be a place of public worship of renown throughout the State of Tamil Nadu for the purpose of the said section.

[No. 3754/F. No. 176/51/79-IT(AI)]

V. B. SRINIVASAN, Dy. Secy.

नई दिल्ली, 6 जनवरी, 1981

आयकर

**का०आ० 599.**—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उपखण्ड (iii) का अनुसरण करते हुए तथा भारत सरकार के राजस्व विभाग

की दिनांक 11 जनवरी, 1980 की अधिसूचना सं० 3121 (फा०सं० 404/127 क०व०आ०-आगरा 79-आ०क०स०क०) का अधिलंघन करते हुए केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा श्री बी०पी० बहुखंडी को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी है, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत करती है।

2. यह अधिसूचना श्री बी०पी० बहुखंडी द्वारा कर वसूली अधिकारी के पद का कार्यभार हण करने की तारीख में लागू होगी।

[संख्या 3788/फा०सं० 398/25/80-आ०क०स०क०]

New Delhi, the 6th January, 1981

## INCOME-TAX

**S.O. 599.**—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), and in supersession of Notification of the Government of India in the Department Revenue No. 3121 (F. No. 404/127/TRO-Agra/79-ITCC) dated 11-1-1980, the Central Government hereby authorises Shri B. P. Bahukhandi, being a Gazetted Officer of the Central Government, to exercise the powers of a Tax Recovery Officer under the said Act.

2. This Notification shall come into force with effect from the date Shri B. P. Bahukhandi takes over charge as Tax Recovery Officer.

[No. 3788 (F. No. 398/25/80-ITCC)]

नई दिल्ली, 16 जनवरी, 1981

**का०आ० 600.**—आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उप खण्ड (iii) का अनुसरण करते हुए तथा भारत सरकार के राजस्व विभाग की दिनांक 15-7-80 की अधिसूचना सं० 3587 (फा०सं० 398/23/80-आ०क०स०क०) का अधिलंघन करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा, श्री डी०एम० मीरचन्दानी को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी हैं, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी की शक्तियों का प्रयोग करते के लिए प्राधिकृत करती है।

2. यह अधिसूचना श्री डी०एम० मीरचन्दानी द्वारा कर वसूली अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने की तारीख में लागू होगी।

[मा० 3798/फा०सं० 398/23/80-आ०क०स०क०]

New Delhi, the 16th January, 1981

**S.O. 600.**—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), and in supersession of Notification of the Government of India in the Department of Revenue No. 3587 (F. No. 398/23/80-ITCC) dated 15-7-80, the Central Government hereby authorises Shri D. M. Mirchandani, being a gazetted Officer of the Central Government, to exercise the powers of a Tax Recovery Officer under the said Act.

2. This Notification shall come into force with effect from the date Shri D. M. Mirchandani takes over charge as Tax Recovery Officer.

[No. 3798/F. No. 398/23/80-ITCC]

**का०आ० 601.**—प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उपखण्ड (iii) का अनुसरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा श्री टी०डी० पाटिल को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी है, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत करती है।

2. यह अधिसूचना श्री टी०डी० पाटिल द्वारा कर वसूली अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से लागू होगी।

[मा० 3800(फा०सं० 398/23/80-प्रा०क०स०क०)]

**S.O. 601.**—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of Section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby authorises Shri T. D. Patil being a gazetted Officer of the Central Government, to exercise the powers of a Tax Recovery Officer under the said Act.

2. This Notification shall come into force with effect from the date Shri T. D. Patil takes over charge as Tax Recovery Officer.

[No. 3800 (F. No. 398/23/80-ITCC)]

**का०आ० 602.**—प्रायकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उपखण्ड (iii) का अनुसरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा कुमारी एस० मी० छत्रपति को, जो केन्द्रीय सरकार की राजपत्रित अधिकारी हैं, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत करती है।

2. यह अधिसूचना कुमारी एस०सी० छत्रपति द्वारा कर वसूली अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से लागू होगी।

[मा० 3802 (फा०सं० 398/23/80-प्रा०क०स०क०)]

**S.O. 602.**—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of Section 2 of the Income-tax Act, 1961, (43 of 1961), the Central Government hereby authorises Miss S. C. Chatrapathi being a gazetted Officer of the Central Government, to exercise the powers of a Tax Recovery Officer under the said Act.

2. This Notification shall come into force with effect from the date Miss S. C. Chatrapathi takes over charge as Tax Recovery Officer.

[No. 3802 (F. No. 398/23/80-ITCC)]

**का०आ० 603.**—प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उपखण्ड (iii) का अनुसरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा श्री आई० डिओरी को, जो केन्द्रीय सरकार के राजपत्रित अधिकारी हैं, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत कर वसूली अधिकारी की शक्तियों का प्रयोग करने के लिए प्राधिकृत करती है।

2. यह अधिसूचना श्री आई० डिओरी द्वारा कर वसूली अधिकारी के पद का कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से लागू होगी।

[मा० 3804(फा०सं० 398/14/80-प्रा०क०स०क०)]

**S.O. 603.**—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby authorises Shri I. Deori, being a gazetted Officer of the Central Government, to exercise the powers of a Tax Recovery Officer under the said Act.

2. This Notification shall come into force with effect from the date Shri I. Deori takes over charge as Tax Recovery Officer.

[No. 3804 (F. No. 398/14/80-ITCC)]

**का०आ० 604.**—प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 2 के खण्ड (44) के उपखण्ड (iii) का अनुसरण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा भारत सरकार के राजस्व विभाग की 15 मई 1978 की अधिसूचना सं० 2296 (फा०सं० 404/127/77-प्रा०क०स०क०) में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् उक्त अधिसूचना में “श्री ए०के० डे तथा श्री पी०एम० चौधरी” शब्दों और अक्षरों के स्थान पर “श्री ए०के० डे” शब्द और अक्षर प्रति स्थापित किए जाएंगे।

[सा० 3805 (फा०सं० 398/14/80-प्रा०क०स०क०)]

एच० वेंकटरामन, उप सचिव

**S.O. 604.**—In pursuance of sub-clause (iii) of clause (44) of Section 2 of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the M/o Finance, Department of Revenue No. 2296 (F. No. 404/127/77-ITCC) dated 15-5-1978; namely in the said Notification for the words and letters “Sarvashri A. K. Dey and P. M. Choudhury” the words and letters “Shri A. K. Dey” shall be substituted.

[No. 3805 (F. No. 398/14/80-ITCC)]

H. VENKATARAMAN, Dy. Secy.

आदेश

नई दिल्ली, 23 जनवरी, 1981

स्टाम्प

**का०आ० 605.**—भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2) की धारा 9 की उपधारा (1) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा उम्मीद को माफ करती है, जो चण्डीगढ़ हाउसिंग बोर्ड द्वारा जारी किये गए एक सौ दस लाख रुपये के ऋण पद्धतों पर, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत प्रभार्य है।

[सा० 2/81-स्टाम्प फा०सं० 33/41/80-बिंकर]

ORDER

New Delhi, the 23rd January, 1981

STAMPS

**S.O. 605.**—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the debentures to the value of One hundred and ten lakhs rupees, floated by the Chandigarh Housing Board are chargeable under the said Act.

[No. 2/81-Stamp F. No. 33/41/80-ST]

नई दिल्ली, 27 जनवरी, 1981

**का०आ० 606.**—भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2) की धारा 9 की उपधारा (1) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा उस शुल्क को माफ करती है, जो हाउसिंग एंड अर्बन डिवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा चालू वित्तीय वर्ष में जारी किए जाने वाले दस करोड़, पन्द्रह लाख रुपये मूल्य के ऋणपत्रों और उनके परवर्ती अन्तरणों, परिवतनों तथा उप विभाजनों के साक्षीभूत दस्तावेजों पर, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत प्रभार्य हैं।

[स० 3/81-स्टाम्प फा०स० 33/29-80-बि०कर]

New Delhi, the 27th January, 1981

**S.O. 606.**—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the debentures of the value of ten crores and fifteen lakhs of rupees to be floated in the current financial year by the Housing and Urban Development Corporation Limited, New Delhi and the documents evidencing subsequent transfers, conversions and sub-divisions of the same are chargeable under the said Act.

[No. 3/81-Stamp F. No. 33/29/80-ST]

नई दिल्ली, 28 जनवरी, 1981

**का०आ० 607.**—भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2) की धारा 9 की उपधारा (1) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा उस शुल्क को माफ करती है, जो कनटिक राज्य वित्तीय निगम द्वारा जारी किये जाने वाले सत्ताईम लाख पचास हजार रुपये मूल्य के प्रोमिसरी नोटों के रूप में बंध पत्रों पर उक्त अधिनियम के अन्तर्गत प्रभार्य हैं।

[स० 4/81-स्टाम्प फा०स० 33/12/80-बि०कर]

New Delhi, the 28th January, 1981

**S.O. 607.**—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the bonds in the form of promissory notes to the value of twenty seven lakhs and fifty thousand of rupees to be issued by the Karnataka State Financial Corporation, are chargeable under the said Act.

[No. 4/81-Stamp F. No. 33/12/80-ST]

**का०आ० 608.**—भारतीय स्टाम्प अधिनियम 1899 (1899 का 2) की धारा 9 की उपधारा (1) के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा उस शुल्क को माफ करती है, जो जम्मू तथा कश्मीर राज्य वित्तीय निगम द्वारा प्रोमिसरी नोटों के रूप में जारी किये गए व्यापी लाख पचास हजार रुपये मूल्य के जम्मू तथा कश्मीर राज्य वित्तीय निगम बन्ध पत्र 1995 (10 वीं श्रृंखला) पर उक्त अधिनियम के अन्तर्गत प्रभार्य हैं।

[स० 5/81-स्टाम्प फा०स० 33/6/80-बि०कर]

जी०एम० मेहरा, अव० मन्त्री

**S.O. 608.**—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (1) of section 9 of the Indian Stamp Act, 1899 (2 of 1899), the Central Government hereby remits the duty with which the Jammu and Kashmir State Financial Corporation Bonds, 1955 (Tenth Series) in the form of promissory notes to the value of Eighty two lakhs and fifty thousands of rupees, floated by the Jammu & Kashmir State Financial Corporation, are chargeable under the said Act.

[No. 5/81-Stamp-F. No. 33/6/80-ST]

G. S. MEHRA, Under Secy.

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 5th February, 1981

**S.O. 609.**—In partial modification to this Department's notification No. 8(41)/80-AC dated 6-10-1980 appeared as S.O. No. 2881 in Part II-Section 3-Sub-section (ii) of the Gazette of India dated 25-10-1980, the following may be added after the words "various villages in Srikakulam District" appearing therein :

"for the period from the date of publication of this notification in the Gazette of India to 28th February, 1981".

[No. 8(41)/80-AC]

INDRANI SEN, Under Secy.

CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES

CORRIGENDUM

New Delhi, the 3rd February, 1981

**S.O. 610.**—In the Board's notification No. 3790 (F No. 261/19/80) dated 9-1-1981 the following corrections shall be made :

1. Under column 2 of the Schedule against "Commissioner of Income-tax (Appeals), Rajasthan-I, Jaipur" for the words :

"All wards/circles at  
1—Jaipur"

Read—"All wards/circles at

1—Jaipur excepting Central circles at Jaipur".

2. Under column 2 of the said Schedule against "Commissioner of Income-tax (Appeals) Rajasthan-II, Jaipur" for the words :

"All wards/circles at

1—Estate duty-cum-Income tax Circle, Jodhpur  
etc. etc."

The following shall be substituted :

1—Central circles at Jaipur

2—Estate duty-cum-Income tax Circle, Jodhpur".

"All wards/circles at :

- 3—Jodhpur
- 4—Bharatpur
- 5—Pali
- 6—Barmer
- 7—Jalore
- 8—Bikaner
- 9—Nagaur
- 10—Churu
- 11—Sriganganagar
- 12—Hanumangarh"

[No. 3827 (F No. 261/19/80)]

AJAI SINGH, Under Secy.

## केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहृतीस्थ, मध्य प्रदेश

इंदौर, 29 दिसम्बर, 1980

## विनिमित तमाखू उत्पाद-4/80

विषय:- केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 1944 के नियम 94 के अन्तर्गत समाहृती की शक्तियों का प्रत्यायोजन

**का०आ० 611.**—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 1944 के नियम 5 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मैं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के सहायक समाहृतीओं को उनके संबंधित अधिकार क्षेत्र में, आर०जी० 12 के स्तरमें 12 से 15 में शामिल किये जाने के लिए, तैयार चर्चण तमाखू के बजान व कोमत का प्रभावित करते बाले प्रमुख अवयवों का विनिर्दिष्ट करते के लिए, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियमावली, 1944 के नियम 94 के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों को प्रत्यायोजित करता है।

[अधिसूचना सं० 7/80-V(4) फा०सं०/30-18/80 के०उ०ग०]  
एस०के० धर, समाहृती

CENTRAL EXCISE COLLECTORATE, MADHYA  
PRADESH

## Manufactured Tobacco Products-4/80

Indore, the 29th December, 1980

Subject : Delegation of Collectors Powers under Rule 94 of Central Excise Rules, 1944.

**S.O. 611.**—In exercise of the powers vested in me under Rule 5 of Central Excise Rules, 1944, I hereby delegate the powers vested in me under Rule 94 of the Central Excise Rules, 1944 to be exercised by the Assistant Collector of Central Excise in their respective jurisdiction for specifying selected ingredients which add to the weight and value of the finished chewing tobacco for purposes of accounting in Columns 12 to 15 of RG. 12.

[Notification No. 7/80 C. No. V(4)30-18/80/CX]  
S. K. DHAR, Collector

## काण्डिय भवालय

## मुख्य नियंत्रक आयात-निर्यात का कार्यालय

## आदेश

नई दिल्ली, 2 जनवरी, 1981

**का०आ० 612.**—श्री बलजीत सिंह पुत्र श्री सुरजान सिंह माराम रतन बूट हाउस, मन्जी मुल्लानपुर, जिला लुधियाना (पंजाब) को सामान्य मुद्रा क्षेत्र के अन्तर्गत 32 बोर का एक रिवाल्वर आयात करने के लिये 2000 रुपए (दो हजार रुपए मात्र) के लिये एक सीमा शुल्क निकासी परमिट सं० पी०जे०/3059578/एन/एम एन/76/एच/80/ए० एल एस, दिनांक 18-9-1980 प्रदान किया गया था आवेदक ने उक्त सीमा शुल्क निकासी परमिट की अनुलिपि प्रति जारी करने के लिये इस आधार पर आवेदन किया है कि मूल सीमा शुल्क निकासी परमिट खो गया अथवा अस्थानस्थ हो गया है। आगे यह भी बताया गया है कि सीमा शुल्क निकासी परमिट किसी भी तात्पर अधिकारी न पापम अंजीकूण नहीं प्राप्त गया था और इस पकार सीमा शुल्क निकासी परमिट को विलुप्त भी उपयोग में नहीं लाया गया है।

2. अबते तर्क के समर्थन में आवेदक ने नोटरी परिस्लिक लुधियाना (पंजाब) के समक्ष विधिवत् शपथ लेते हुए एक स्टाम्प कागज पर एक शपथ-पत्र दाखिल किया है। तबनुसार, मैं मन्तुष्ट हूँ कि आवेदक द्वारा मूल सीमा शुल्क निकासी परिस्लिक सं० पी०जे०/3059578/एन/एम एन/76/एच/80/ए० एल एस दिनांक 18-9-80 खो गया अथवा अस्थानस्थ हो गया है। ममय-समय पर यथा मरणाधित आयात (नियवण) आदेश, 1955 दिनांक 7-12-1955 की उप-धारा 9 (सी सी) के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए श्री बलजीत सिंह को जारी किये गये उक्त मूल सीमा-शुल्क निकासी परिस्लिक सं० पी०जे०/3059578/एन/एम एन/76/एच/80/ए० एल एस दिनांक 18-9-80 को एनद्वारा रद्द किया जाता है।

3. पार्टी को अलग से सीमा शुल्क निकासी परिस्लिक की अनुलिपि प्रति जारी की जा रही है।

[सं० 13/253/ए० एम-81/ए० एल एस/1317]

## MINISTRY OF COMMERCE

(Office of the Chief Controller of Imports &amp; Exports)

## ORDERS

New Delhi, the 2nd January, 1981

**S.O. 612.**—Shri Baljit Singh S/o Shri Surjan Singh C/o Rattan Boot House, Mandi Mullanpur, Distt. Ludhiana (Punjab) was granted a CCP No. P/J/3059578/N/MN/76/H/80/ALS dated 19-8-80 for Rs. 2000 (Rupees two thousand only) for import of one 32 bore revolver under GCA. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned CCP on the ground that the original CCP has been lost or misplaced. It has further been stated that the CCP was not registered with any Customs authority and as such the value of CCP has not been utilised at all.

2. In support of their contention, the licensee has filed an affidavit on stamped paper duly sworn in before a Notary Public Ludhiana (Punjab). I am accordingly satisfied that the original CCP No. P/J/3059578/N/MN/76/H/80/ALS dated 18-9-80 has been lost or misplaced by the applicant. In exercise of the powers conferred under sub-clause 9(e) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7-12-1955 as amended from time to time the said original CCP No. P/J/3059578/N/MN/76/H/80/ALS dated 18-9-80 issued to Shri Baljit Singh is hereby cancelled.

3. A duplicate copy of CCP is being issued to the party separately.

[No. 13/253/AM-81/ALS/1317]

नई दिल्ली, 3 फरवरी 1981

**का०आ० 613.**—श्री शिवनाथ नाय बजाज, 185-189 राजा बोंगजे रोड, बैकोक, थाईलैंड को स्थायी आवास के लिये भारत वापस आ रहे भारतीयों के लिये विशेष सुविधाओं के अन्तर्गत (1) 10 लेपल करघे (2) 4 पाइरन वाईडिंग मशीन (3) 1 वाईडिंग मशीन (4) 1 वाइशिंग मशीन (5) 2 कार्ड पंचिंग मशीन (6) 1 जैक्वार्ड कार्ड लेसिंग मशीन और (7) 1 भल्टी कमर लेबल प्रिंटिंग मशीन का आयात करने के लिये 7,45,300 रुपए (91,824/-य०एस० डालर) मात्र के लिये एक आयात लाइसेंस सं० पी०सीजी०/2075568/एन/एस एन/75/एच/79, दिनांक 19-8-80 प्रदान किया गया था। आवेदक ने अपर्युक्त आयात लाइसेंस की अनुलिपि प्रति जारी करने के लिये इस आयात पर आवेदन किया है कि मूल आयात लाइसेंस खो गया है या अस्थानस्थ

हो गया है। आगे यह भी बताया गया है कि भूल आयात लाइसेंस किसी भी सीमा-जुल्क प्राधिकारी के पास पंजीकृत नहीं था और इस प्रकार आयात लाइसेंस के मूल्य का बिल्कुल भी उपयोग नहीं किया गया।

2. अपने तर्क के समर्थन में लाइसेंसधारी ने भारतीय दूतावास बैंकों के सामने विधिवत् शपथ लेकर एक शपथ पत्र दाखिल किया है। मैं तदनुसार भंतुष्ट हूँ कि आवेदक द्वारा मूल आयात लाइसेंस मं० पी/सी जी/2075568/एन/एन/एन/75/एच/79 दिनाक 19-8-80 खो गया या अस्थानस्थ हो गया है। समय-समय पर यथा संशोधित आयात (नियंत्रण) आदेश, 1955 दिनाक 7-12-1955 की उप-धारा 9(सीसी) के अन्तर्गत प्रदत्त प्रधिकारी का प्रयोग करते हुए श्री शिवानाथ राय बजाज को जारी किये गये उक्त मूल आयात लाइसेंस मं० पी/सी जी/2075568/एन/एन/एन/75/एच/79 दिनाक 19-8-80 को एतद्वारा रद्द किया जाता है।

3. पार्टी को आयात लाइसेंस की अनुलिपि प्रति अलग से जारी की जा रही है।

[सं० 56/आईएनएनए/79-80/बीएलएस/2074]  
ए० एन० कौल, उप-मुख्य नियंत्रक,  
आयात-नियंत्रित

New Delhi, the 3rd February, 1981

S.O. 613.—Shri Shivnath Rai Bajaj, 185-189, Rajawongse Road, Bangkok, Thailand was granted an Import Licence No. P/CG/2075568/N/MN/75/H/79 dated 19-8-80 for Rs. 7,45,300/- (US \$ 91,824) only for the import of (i) 10 Label Looms (ii) 4 Piron Winding Machines (iii) 1 winding machine (iv) one warping machine (v) two card punching machines (vi) one jacquard card lacing machine and (vii) one Multicolour label Printing Machine under special facilities for Indians returning to India for permanent settlement. The applicant has applied for issue of Duplicate copy of the above mentioned Import Licence on the ground that the original Import Licence has been lost or misplaced. It has further been stated that the Original Import Licence was not registered with any Customs authority and as such the value of the Import Licence has not been utilised at all.

2. In support of his contention the licensee has filed an affidavit duly sworn before the Embassy of India, Bangkok. I am accordingly satisfied that the original Import Licence No. P/CG/2075568/N/MN/75/H/79 dated 19-8-80 has been lost or misplaced by the applicant. In exercise of the powers conferred under Sub-clause 9(ce) of the Import (Control) Order, 1955 dated 7-12-1955 as amended from time to time the said original Import Licence No. P/CG/2075568/N/MN/75/H/79 dated 19-8-80 issued to Shri Shivnath Rai Bajaj is hereby cancelled.

3. A duplicate copy of the Import Licence is being issued to the party separately.

[No. 56/INS/79-80/BIS/2074]  
A. N. KAUL, Dy. Chief Controller  
Imports & Exports

आयात-नियंत्रित के उप-मुख्य नियंत्रक का कार्यालय

जयपुर, 13 जनवरी, 1981

सेवा में १०

1. मै० माया मैटल इन्डस्ट्रीज,  
70 लिंगोनिंग बाजार, जयपुर

2. मै० माया मैटल इन्डस्ट्रीज,

रोड नं० 12 प्लाट नं० 161-एफ

विश्वकर्मा श्रीद्वीपिक क्षेत्र, जयपुर।

विषय: आयात (नियंत्रण) आदेश 1955 दिनाक 7-12-55 यथा संशोधित की 9वीं धारा के अन्तर्गत आयात अनुज्ञा पत्र (लाइसेंस) को रद्द करने के लिए अधिसूचना।

महोदय,

का०आ० 614.—चूंकि आपने “कास्ट आयरन पाइप्स” के अक्तूबर, 79 से दिसम्बर 79 तक की अवधि के नियंत्रित के आधार पर आयात निति के इंजीनियरिंग वर्ग ए-7 (II) के अन्तर्गत वर्गीकृत कर रु० 289243 के “हाट रोल्ड कार्बन स्टील स्टीप्स/क्वायल्स” के लिये एक आयात अनुज्ञा-पत्र (लाइसेंस) क्रमांक पी एल 2824745 दिनांक 11-3-80 प्राप्त किया है।

2. और चूंकि पंजीकृत नियंत्रितों को आयात नीति 1979-80 के अन्तर्गत “कास्ट आयरन पाइप्स” के नियंत्रित आधार पर कोई भी आरा०ई०पी० लाइसेंस उपलब्ध नहीं था।

3. और चूंकि उक्त लाइसेंस आपके भान्तिपूर्ण दावे पर इस कार्यालय से भूल से जारी हो गया था। अतः आयात (नियंत्रण) आदेश दिनांक 7-12-55 यथा संशोधित की 9(क) धारा के अन्तर्गत उक्त अनुज्ञा पत्र (लाइसेंस) को रद्द करना प्रस्तावित है।

4. अब अतः आप अथवा कोई बैंक, अथवा अन्य कोई व्यावसायिक संस्था को, जिसका उक्त लाइसेंस क्रमांक पी/एल 2824745 दिनांक 11-3-80 में स्वार्थ निहित हो, इस अधिसूचना के जारी होने के 15 दिन के अन्दर कारण बताने के लिये कहा जाता है, कि क्यों न उक्त लाइसेंस को रद्द करने की प्रस्तावित प्रक्रिया की जावे।

5. यदि आप उक्त दावे के सन्दर्भ में व्यक्तिगत रूप से कुछ कहना चाहते हैं तो आप निम्न हस्ताक्षरकर्ता से दिनांक 29-1-81 को दिन के 11 बजे माध्यात्कार हेतु सम्पर्क करें।

6. यदि निर्धारित समय में कोई उत्तर प्राप्त न हुआ और यदि आपने निर्धारित समय और दिवस पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित न हुए तो यह समझा जावेगा कि आपको इस संबंध में कुछ नहीं कहना है। तथा गृण दोष के आधार पर एक तरफा निर्णय कर लिया जावेगा।

7. इसी बीच आप अथवा बैंक अथवा अन्य कोई व्यावसायिक संस्था को जिसके पास उक्त अनुज्ञा पत्र (लाइसेंस) हो, यह निर्देश दिया जाना है कि उक्त लाइसेंस को किसी

भी रूप में चालन में न लावें और उक्त लाइसेंस के सत्तर्व में कोई वायदे न करे और निम्न हस्ताक्षरकर्ता के पास उक्त लाइसेंस को शीघ्रतांशीघ्र लौटा दें।

[फा० सं० आर.ई.पी/ठन्जि-3, 5, 7 और 8/ओ.डी-79/डी.सी.सी.आई.एप्ल.ई/राज]

**Office of the Dy. Chief Controller of Imports and Exports**

Jaipur, the 13th January, 1981

To

1. M/s. Maya Metal Industries,  
70, Tripolia Bazar,  
Jaipur.

2. M/s. Maya Metal Industries,  
Road No. 12, Plot No. 161, F.  
Vishwakarma Industries Area,  
Jaipur.

Subject : Notice under clause 9 of the Imports (Control) Order, 1955, dated 7-12-55, as amended, for cancellation of Import Licence.

Gentlemen,

**S.O. 614**—Whereas you obtained import licence No. P/L/2824745 dated 11-3-80 for Rs. 289240 for the import of Hot rolled Carbon Steel Strips/Coils against export of Cast Iron Pipes, during the months of October 1979 to December 1979 classifying it under Engineering group-A 7(ii) of the Import Policy for 1979-80.

2. And whereas export of Cast Iron Pipes did not qualify for any REP licence, under the Import policy of Registered Exporters according to Import Policy Book for 1979-80.

3. And whereas, it is therefore proposed to cancel the said import licence under clause 9(a) of the imports (Control) order, dated 7-12-55, as amended from time to time, for the reason that it had been wrongly claimed by you and issued through mistake.

4. Now, therefore you or any Bank or any other party having interest in the said Licence No. P/L/2824745, dated 1-3-80 are called upon to show cause within 15 days from the date of this notice as to why the action as proposed should not be taken to cancel the said licence.

5. If you want to be heard in person also claim your case you may call on the undersigned at 11 A.M. on 29-1-81, for personal hearing.

6. If no reply is received within the stipulated period and if you fail to call on the undersigned on the appointed day and time, it will be presumed that you have nothing to say in the matter and decision will be taken ex parte on merits.

7. Meanwhile you or the Bank or any other person having possession of the licences are hereby directed not to operate upon the said licences in any manner or to make any commitments against the same and return the said licences immediately to the undersigned.

[File No REP/Engg 3, 5, 7 & 8/OD. 79/DCCI&E Raj]

आवेदन

जयपुर, 4 फरवरी, 1981

विषय : मैसर माया मैटल इंडस्ट्रीज, 1/70, लिपोलिया बाजार, जयपुर और 11(रोड नं० 12, प्लाट नं० 161 एफ, विश्वकर्मा औद्योगिक भवन, जयपुर को जारी किया गया, रु. 289240 का हाट रोल्ड कार्बन स्टील स्ट्रिप/क्वायल्स के आयात के लिये आयात अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) क्रमांक पी/एल/2824745 दिनांक 11-3-80 को रद्द करने हेतु।

**का०आ० 615.**—मैं माया मैटल इंड०, 70 लिपोलिया बाजार, जयपुर ने कास्ट आयरन पाइप को अक्तूबर, 79 में दिसम्बर, 79 तक की अवधि में निर्यात की आयात नीति के इंजीनियरिंग बगं ॥-7 के अन्तर्गत वर्गीकृत करने रु. 289240 के हाट रोल्ड कार्बन स्टील स्ट्रिप/क्वायल्स के लिये एक आयात अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) क्रमांक पी/एल/2824745 दिनांक 11-3-80 प्राप्त किया था।

2. तदुपरान्त पुनरावलोकन में यह ज्ञात हुआ कि कास्ट आयरन पाइप के निर्यात पर कोई भी आर.ई.पी.प्रनुज्ञा पत्र (लाइसेंस) उपलब्ध नहीं हो सकता था। अतः निम्न हस्ताक्षरकर्ता द्वारा आयात (नियंत्रण) आदेश दिनांक 7-12-55 यथा संशोधित की धारा 9(क) के अधीन एक कारण दिखाओ अधिसूचना इस फर्म के नाम जारी की गयी जिसमें उसे कहा गया कि वे 15 दिन की अवधि के अन्दर उत्तर दें कि क्यों न वह अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) को जो कि भारतीय दावे पर लिया गया है, और गलती से इस कार्यालय में जारी हो गया था, रद्द कर दिया जावे उपरोक्त अधिसूचना द्वारा अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) प्राप्तकर्ता अथवा कोई बैंक अथवा अन्य कोई व्यावसायिक सम्भा जिसके पास उपरोक्त अनुज्ञा पत्र (लाइसेंस) हो, तो को भी यह निर्देश दिया गया था कि वे उक्त लाइसेंस को किसी भी रूप में चालन में न लावें अथवा उसमें संबंधित कोई भी वायदे ना करें। और उसे निम्न हस्ताक्षरकर्ता को लौटा देवे। उक्त लाइसेंस प्राप्त कर्ता को यह भी कहा गया था कि वे यदि अविकाश रूप में कुछ कहना चाहते हों तो वे निम्न हस्ताक्षरकर्ता में दिन के 11 बजे दिनांक 29-1-1981 को साक्षात्कार हेतु सम्पर्क कर सकते हैं।

3. उपरोक्त अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) प्राप्तकर्ता ने ना तो उक्त अधिसूचना का उत्तर ही दिया और न ही उपरोक्त निर्धारित समय व दिवस पर साक्षात्कार हेतु उपस्थित हुआ।

4. अतः निम्न हस्ताक्षरकर्ता हम निर्णय पर पहुंचा है कि उपरोक्त अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) फर्म द्वारा भारतीय दावे पर लिया गया और इस कार्यालय में भूल से जारी हो गया था।

5. अतः निम्न हस्ताक्षर कर्ता आयात (नियंत्रण) आदेश 1955 दिनांक 7-12-1955 यथा संशोधित की धारा 9(क) व (ग) से प्रदत्त शक्तियों के अन्तर्गत रूपरे 289240 के उक्त अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) क्रमांक पी/एल/2824745 दिनांक 11-3-80 को रद्द करना है।

[क्रमांक : आर.ई.पी/ठन्जि-3, 5, 7 व 8/ओ.डी-79/डी.सी.सी.आई.एप्ल.ई/राज०]

वी० के० मेहता, उप मुख्य नियन्त्रक, आयात एवं निर्यात

ORDER

Jaipur, the 4th February, 1981

Subject : Cancellation of Import licence No. P/L/2824745 dated 11-3-80 for Rs. 289240 for the import of Hot Rolled Carbon Steel Strips/Coils issued to M/s.

Maya Metal Industries (i) 70, Tripolia Bazar, Jaipur and Road No. 12, Plot No. 161-F Vishwa Karmi Industrial Area, Jaipur.

**S.O. 615.**—M/s. Maya Metal Industries, 70, Tripolia Bazar, Jaipur had obtained an REP import licence No. P/L/2824745 dated 11-3-80 for Rs. 289240 for the import of 'Hot Rolled Carbon Steel Strips/Coils, against their export of Cast Iron pipes during the October, 1979—December, 1979 quarter classifying the exported goods under Engineering Group A-7(ii) of the Import Policy for 1979-80 from this office.

2. On subsequent scrutiny of their application, it was observed that no REP licensee was admissible against the exports of Cast Iron pipes, and therefore a show cause notice No. REP/Engg. 3, 5, 7 & 8/OD/79/DCCIE/RAJ/3999.4000 dated 13-1-81 was issued to them by the undersigned under clause 9(a) of the Imports (Control) Order, dated 7-12-1955 as amended from time to time, asking them to show cause within 15 days from the date of said notice as why the said licence should not be cancelled for the reason that it had been wrongly claimed and issued through mistake. The licensee or the bank or any other person having possession of the above mentioned licence were also directed under the said notice not to operate upon the said licence in any manner or to make any commitment against the same and return it to the undersigned. The licensee were also asked by the said notice that if they wanted to be heard in person they may call on the undersigned at 11 A.M. on 29-1-1981 for personal hearing.

3. The licensee have neither replied the said notice nor come for personal hearing on the aforesaid time and date nor returned the licence.

4. The undersigned therefore, concludes that the said licence had been wrongly claimed by the said firm and issued through mistake.

5. The undersigned, therefore, in exercise of the powers vested in him under clause 9(a) and (c) of the Imports (Control) Order, 1955, dated 7-12-1955 as amended from time to time, hereby cancels the said licence No. P/L/2824745 dated 11-3-80 for Rs. 289240.

[No. REP/Engg. 3, 5, 7 & 8/OD 79/DCCIE/RAJ]

V. K. MEHTA, Dy. Chief Controller of  
Imports and Exports.

### भारतीय पर्याप्ति मंत्रालय

नई दिल्ली, 13 फरवरी, 1981

**का. आ. 616.**—केन्द्रीय सरकार, अग्रिम मंत्रिवादा (विनियम) अधिनियम, 1952 (1952 का 74) की धारा 5 के अधीन आन्ध्र प्रदेश काटन एसोसिएशन, गन्तव्य द्वारा मान्यता के नामे करणे के लिए किये गये आवेदन पर वायदा बाजार आयोग के परामर्श से विचार करके और यह समाधान हो जाने पर कि ऐसा करना व्यापार के हित में और नोकहिन में भी होगा, एतद्वारा उक्त अधिनियम की धारा 6 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए उक्त एसोसिएशन को कपास की अग्रिम मंत्रिवादाओं के द्वारा में 15 फरवरी, 1984 को समाप्त होने वाली तीन वर्षों की अतिरिक्त कालाधिकि के लिए मान्यता प्रदान करती है।

2. एतद्वारा प्रदत्त मान्यता इस शर्त के अधीन है कि उक्त एसोसिएशन ऐसे भी निवेशों का अनुपालन करेगी जो वायदा बाजार आयोग द्वारा समय-समय पर दिए जायें।

[मिसिन मंड़ा 12 (1)-आई. टी./81]

उ. र. कर्सेकर, उप मंत्रिवा

### MINISTRY OF CIVIL SUPPLIES

New Delhi, the 13th February, 1981

**S.O. 616.**—The Central Government, having considered in consultation with the Forward Markets Commission, the application for renewal of recognition made under section 5 of the Forward Contracts (Regulation) Act, 1952 (74 of 1952), by the Andhra Pradesh Cotton Association, Guntur, and being satisfied that it would be in the interest of the trade and also in the public interest so to do, hereby grants, in exercise of the powers conferred by section 6 of the said Act, recognition to the said Association for a further period of three years ending the 15th February, 1984 in respect of forward contracts in cotton.

2. The recognition hereby granted is subject to the condition that the said Association shall comply with such directions as may, from time to time, be given by the Forward Markets Commission.

[No. F. 12(1)-I.T./81]

U. R. KURLEKAR, Dy. Secy.

### भारतीय मानक संस्था

नई दिल्ली, 1981-01-27

**का. आ. 617.**—समय पर मंशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणित चिह्न) विनियम 1955 के विनियम 4 के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि उक्त विनियम (3) के उपविनियम (1) के अनुसार प्राप्त अधिकारों के प्रतीत यहां अनुसूची में दिए भारतीय मानकों के संशोधन आर्थि किए गए हैं।

### अनुसूची

अनुसूची	संशोधन लागू होने की विधि
(1)	अम संशोधित भारतीय मानक की परमेष्ठ्या और शीर्षक संख्या
(2)	भारतीय मानक के की मंख्या और तैयार होने की विधि
(3)	सूचना अपी थी
(4)	जिस ग्रजपत्र में मंशोधित मानक की मंख्या और तैयार होने की विधि
(5)	मंशोधित मानक का भक्षिष्ठ विवरण
(6)	मंशोधन लागू होने की विधि
1. IS . 82—1973 रग गोगन के नमुकारकों द्वारा विलेयकों के लिए नमूना लेने और जोख करने की पद्धतियां (प्रथम पुनरीकाण)	संख्या 2 संशोधित की गई है। प्रैल 1977
	1977-04-30

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
2	IS 203-1972 फ्लैशपाइट के लिए सूखी बैटरी ग्रिंडरों की विशिष्टि (नीतीय पुनरीक्षण)	प्रमाणों 770 दिनांक 1975-03-08	सं० 3 प्र० 1977	1. मारणी 3, 4 और 5 के स्थान पर नई मारणी दी गई है। 2. खंड 6 1 मरणोधित किया गया है।	1977-04-30
3.	IS 273-1973 कुवालियों और रेतियों की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	प्रमाणों 2669 दिनांक 1975-08-16	संख्या 3 प्र० 1977	खंड 4 के स्थान पर तथा खंड दिया गया है।	1977-04-30
4	IS 317-1970 स्वच्छता द्वितीय ड्रेप अल मध्यम काम की विशिष्टि (वित्तीय पुनरीक्षण)	प्रमाणों 1555 दिनांक 1972-06-24	सं० 2 प्र० 1977	मारणी 1 संरोधित की गई है।	1977-02-28
5	IS 335-1972 ट्रांसफार्मरों और स्विच रीयरों के लिए नवीन रोधन तेतों की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	प्रमाणों 3256 दिनांक 1977	संख्या 2 अप्रैल 1977	मारणी 1 की टिप्पणी 2 संरोधित की गई है।	1977-04-30
6.	IS 365-1965 बिजली की हाई व्लेटों की विशिष्टि (पुनरीक्षण)	— दिनांक	संख्या 3 प्र० 1977	1. पृष्ठ 6, खंड 6 2 (प) पंक्ति 3— “95° सी” के स्थान पर “105° सी” किया गया है। 2. खंड 10 3 1 और 10. 3. 5 3 के स्थान पर तथा खंड रखे गये हैं।	1977-04-30
7	IS 369-1965 बिजली के विकारों की विशिष्टि (पुनरीक्षण)	प्रमाणों 3450 दिनांक 1965-11-06	सं० 3 अप्रैल 1977	1. (पृष्ठ 6, खंड 6. 9 पंक्ति 3)— “3 मि” के स्थान पर “2 मि” किया गया है। 2. खंड 10. 3. 1 संरोधित किया गया है। 3. (पृष्ठ 10, खंड 10 3 6. 2 (प)— बर्तमान सामग्री के स्थान पर निम्नलिखित ग्रन्थी गयी है। “(प) आरूपि में संवर्धित मात्र घटे, और” पृष्ठ 6, सारणी 1, खंड “राल बजे कांच ऊं जे के अन्तर्गत अम संक्षा (II) के मामते “24 से 28” के स्थान पर “24 से 48” रखा गया है।	1977-04-30
8	IS 661-1974 भौताभारों के ताप-रोधन की वित्ति संहिता (द्वितीय पुनरीक्षण)	प्रमाणों 3279 दिनांक 1976-09-11	सं० 2 प्र० 1977	पृष्ठ 6, सारणी 1, खंड “राल बजे कांच ऊं जे के अन्तर्गत अम संक्षा (II) के मामते “24 से 28” के स्थान पर “24 से 48” रखा गया है।	1977-04-30
9.	IS 906-1972 आग अव्याप्ति के लिए शर्फी शीर्ष वाली श्रृंखला की विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	प्रमाणों 423 दिनांक 1975-02-15	सं० 1 प्र० 1977	1. खंड 2 1 2 के स्थान पर एक तथा खंड रखा गया है। 2. (पृष्ठ 4, खंड 5 1, पंक्ति 3) “IS : 903— 1965× × के स्थान पर “IS: 903— 1975× ×” कर लीजिए। 3. (पृष्ठ 4, “11” और × “चिह्नयुक्त पादटिप्पणीयां (दोनों स्थानों पर “पुनरीक्षण” की जगह द्वितीय पुनरीक्षण कर लीजिए। 4. (पृष्ठ 6, खंड 5 2 पंक्तियों 15 और 16)— “IS : 554—1961× में निविल्ट” के स्थान पर “IS : 2643 (भाग 1) 1975 ×” का जी—2½” कर लीजिए। 5. (पृष्ठ 6, पादटिप्पणी)–बर्तमान पादटिप्पणी की जगह निम्नांकित कर सीजिए। “बोधने के काम के लिए पाठ्य की चूहियों के माप भाग 1, आधारभूत स्परसेश्न और माप (प्रथम पुनरीक्षण)	1977-04-30
10	IS 959-1966 बिजली के मनाई काड़या की विशिष्टि (पुनरीक्षण)	प्रमाणों 2119 दिनांक 1975-02-15	सं० 4 प्र० 1977	1. (खंड 10. 3 1 के स्थान पर एक तथा खंड रखा गया है। 2. (पृष्ठ 10, खंड 10 3. 4 पंक्ति 3)— “8 घटे” की जगह “7 घटे” किया गया है।	1977-04-30
11.	IS : 942-1966 आग अव्याप्ति के लिए 275 लिंग प्रति मिनट लिपट प्रमाण मेट की विशिष्टि (पुनरीक्षण)	प्रमाणों 1023 दिनांक 1966-12-31	सं० 4 प्र० 1977	1. (खंड 4 1 2. 4, 4 1 2 7, 4. 1 5, 4 1. 7 और 1. 1. 7. 1 का संरोधित किया गया है।	1977-04-30

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
12	SI 1044—1970 तुर्की नान तत्त्व की विभिन्न प्रम श्रो 1635 (प्रथम पुनरीक्षण)	म० २ दिनांक 1972-07-04	म० २ श्रेणी 1977	खट ८-२ २ २ का समाधान किया गया है।	1977-04-30
13	IS 1190—1976 ब्रिटेन के लिए दो तारों वाले शीष्ठों की विभिन्न प्रम (द्वितीय पुनरीक्षण)	— —	म० १ श्रेणी 1977	(पृष्ठ १, खट २ १ पक्ष)—"इंडिया"— इस शब्द के अन्त में निम्नांकित तार सीजिंग "प्रत्येक स्टाक में अमड़े या पी वी भी के बाहर लगाए जाए"	1977-04-30
14	IS 1441—1966 तार और टेलीफोन दो लाइन के लिए विभिन्न रोधी स्टाक (डाइया) की विभिन्न प्रम (पहला पुनरीक्षण)	प्रम श्रो 164 दिनांक 1967-02-11	म० २ श्रेणी 1977	(पृष्ठ १२) रिप्रिट वा पृष्ठ १५ (खट ४ ३) इस शब्द के अन्त में निम्नांकित तार सीजिंग "प्रत्येक स्टाक में अमड़े या पी वी भी के बाहर लगाए जाए"	1977-04-30
15	IS 1176—1971 ब्रिटेन रेफिनिंग (बोल्ट्स) की विभिन्न प्रम (प्रथम पुनरीक्षण)	प्रम श्रो 751 दिनांक 1974-03-16	म० २ फरवरी 1977	1 (खट २ १०, ४ २ ३, ४ ३ १, १० १- ३ २ (भी) और १० ५ १ २) भी का संशोधन किया गया है। 2 (खट १० ६ ३ २ और १० ६ २ ६ के स्थान पर नये खट दिए गए हैं। 3 (पृष्ठ २०, खट १० ६ २ ७) इस दिया गया है।	1977-02-28
16	IS 1555—1974 सूरी रासायनिक स्टेम्स के लिए अल्बर्ड तार सीड (द्वितीय पुनरीक्षण)	प्रम श्रो 957 दिनांक 1976-06-03	म० ३ मार्च 1977	खट १ और मार्ची १ का संशोधन किया गया है।	1977-03-31
17	IS 1651—1970 सीसा-अम्ब्र प्रकार की (नस्क-काकार धातुसमक पड़ी वाली) विषर सेलो और बैटिरियो की विभिन्न प्रम (पहला पुनरीक्षण)	प्रम श्रो 1635 दिनांक 1972-07-08	म० २ श्रेणी 1977	(पृष्ठ १, खट ३ १ पहली पक्ष)—"काक्स" शब्द के बाद "सासारेक्सिन काल्ड शब्द जोह दिए गए हैं।	1977-04-30
18	IS 1957—1961 प्रथम प्रिज्मीय कम्पास की विभिन्न प्रम	प्रम श्रो 1267 दिनांक 1962-04-28	म० १ मार्च 1977	खट ५ १० के स्थान पर नया खट दिया गया है।	1977-03-31
19	IS 1970 (भाग १) — 1974 इकाइ राशि स अल्से वाले पृष्ठवाली स्प्रेशर भाग १ वाले न रखने वाले (तीसरा पुनरीक्षण)	प्रम श्रो 1092 दिनांक 1977-04-09	म० १ फरवरी 1977	1 (खट ५ १७ ५ १८, ५ २४, ८-३ १ प-३ २ और ८-४ १ का संशोधन किया गया है। 2 (पृष्ठ १९ खट ८-५ २) इस दिया गया है। और '८-३ ३' की संज्ञा '८-५ २' कर दी गयी है। 3 (खट ८-६ ३ की पहली और दूसरी टिप्पणी भी जगह नयी टिप्पणी भी गई है। 4 (मार्ची १ का संशोधन किया गया है। 5 (पृष्ठ ११, खट ५ ३ १) — अन्त में निम्नांकित सामग्री जोशी गयी है। "गड़ी भी सूरी बयां कैनेक्स रेक्सिन और गी भी सौ ग्रामिया लासिटिक लेगिन कार्ड और उपयुक्त आवरण में तका जाए।	1977-02-28
20	IS 2071 (भाग १) — 1974 उच्च बोल्ट्स प्रमाण की प्रतिक्रिया भाग २ परीक्षण की प्रक्रिया (पहला पुनरीक्षण)	प्रम श्रो 917 दिनांक 1976-03-06	म० १ फरवरी 1977	1 (खट ४ १ ७ ३ ८-१ ३ और ८-१ १ के स्थान पर नये खट दिए गए हैं। 2 खट ४ ३ ४ ६ २ १ ८-१ २ १ ० ४ १ और ८-१ २ का संशोधन किया गया है।	1977-02-28

1	2	3	4	5	6
21	IS 2155--1962 मासान्य रार्यों के लिए ग्रिवेट एम ओ 898 (12 मिसी व्यास से कम) की विशिष्टि दिनांक 1963-03-30	स० 1 फरवरी 1977	3 (पृष्ठ 24 खण्ड ए-1 १ १ और ए-1 २ २) -- जहां पर भी 'यू' आया है वहां 'य्' कर दिया गया है।		
22	IS 2488 (भाग 1) -- 1966 और्डरेंस, रखिं मांडो के लिए नमूना लेने और परीक्षण की पटनिया भाग 1	एम ओ 2417 दिनांक 1967-07-22	स० 1 मार्च 1977	खण्ड २ १ के स्थान पर नया खण्ड दिया गया है।	1977-0-2-28
23	IS 2509--1973 बिजली लगाने के लिए मुख्य अधिनियम कार नलियों की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एम ओ 2557 दिनांक 1975-08-09	स० १ मार्च 1977	खण्ड 14 २ ५ के स्थान पर नया खण्ड दिया गया है। 1 मार्गी १ का मर्गोधन किया गया है 2 खण्ड ६ ४ २ १ के स्थान पर नया खण्ड दिया गया है।	1977-0-3-31
24	IS 2576--1975 ट्राजिस्टरो रेडियो-रिमीवरो के लिए शुक्र बैटरियों की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	— अप्रैल 1976	स० १ अप्रैल 1976	1 पृष्ठ 4, मार्गी १ -- वर्तमान मार्गी का बदल दिया गया है। 2 खण्ड ६ १ और ८ १ का मर्गोधन किया गया है।	1976-0-4-30
25	IS 2609--1972 कोब के कार्बनों की विशिष्टि (प्रथम पुनरीक्षण)	एम ओ 423 दिनांक 1975-02-15	स० २ फरवरी 1977	1 मार्गी १ और २ में ५ के वर्तमान मात्रांदल दिया गया है और दोनों मार्गरियों के खण्ड में नयी नामग्री जोड़ी गयी है। 2 पृष्ठ २ और ३ मार्गी १ और २ -- चौथी टिप्पणी के बाद निम्नावित टिप्पणी जोड़ी गयी है। “टिप्पणी ५ -- काल बोल्टों में वस शैव रखना ग्रनुमत है ऐसी स्थितियों में शैव का व्यास पिच के व्यास के बगबग बनाया जा सकता है”	1977-0-2-28
26	IS 2635--1975 डी सी बिजली के बैलिंग एम ओ जनिवो ले विशिष्टि (द्वितीय पुनरीक्षण)	स० १ फरवरी 1977	खण्ड 11 २ का मर्गोधन किया गया है।	1977-0-2-28	
27	IS 2690 (भाग १) -- 1975 पकी मिट्टी के छत के निर्माण टाइलों की विशिष्टि भाग १ हस्तान्तरिक्ष (पहला पुनरीक्षण)	— मार्च 1977	1 पृष्ठ १, खण्ड ४ १ २ -- “1000 मिमी” के स्थान पर “75 मिमी” किया गया है। 2 पृष्ठ ४, खण्ड ४ १ ४ -- “35 मिमी” के स्थान पर “25 मिमी” किया गया है।	1977-0-3-31	
28	IS 2696--1974 1125-1 प्रति मिलट ह्लै प्रति इजनों के लिए कार्य समर्थी अपेक्षाएँ (पहला पुनरीक्षण)	एम ओ 1597 दिनांक 1976-05-08	पृष्ठ ७, खण्ड ४ ५ २ (ग) -- “38 मी” के स्थान पर “25 मी” किया गया है।	1977-0-4-0	
29	IS 2712-1971 मर्पिंडिन एम्बेस्ट्राम रेण के जेंड की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एम ओ 3163 दिनांक 1973-11-10	खण्ड १ ४ के स्थान पर नया खण्ड दिया गया है।	1977-0-4-30	
30	IS 2720 (भाग 31) -- 1969 मिट्टी की परी- क्षण पद्धतिया भाग 31 केलिकानिया बैर्याग्य ग्रनुपात्र वा ध्रुव निधीरण	एम ओ 4848 दिनांक 1969-12-06	1 पृष्ठ 5, खण्ड १ ० पक्कि १ -- “IS 2809--1963” के स्थान पर “IS 2509--1972” बदल दिया गया है। 2 पृष्ठ ४ ५ और ७ पर वर्तमान पाद टिप्पणियों के स्थान पर नयी पाद टिप्पणी दी गई है। 3 खण्ड ३ ११ और ४ ८ का मर्गोधन किया गया है।	1977-0-4-28	

1	2	3	4	5	6
31. IS : 3093—1965	जंगल काटने की वाह विधिविरुद्ध	एस आ० 1081 दिनांक 1966-04-09	मं० 1 अप्रैल 1977	1. पृष्ठ 5, खंड 4. 2—“विषे हुए” की जगह “चमकाया किया हुआ” रखा गया है। 2. पृष्ठ 5, खंड 4. 3 पंक्ति 2—“जंगलक रंगरोगम के स्थान पर “संशारण-रंगक देखिए (IS : 1153—1975)। किया गया है। 3. पृष्ठ 5, पाद टिप्पणी—अन्त में निम्नांकित पाद टिप्पणी जोड़ी गयी है। “अस्थायी संशारणरंगी तरल, मध्य परन विनेय की विधिविरुद्ध (पहला पुनरीक्षण)	1977-04-30
32. IS : 3109 (भाग 1)—1970	गोल इस्पात की की काँडियों वाली (बिजली से बैलित कुम्हों की घेड 40 भाग 1 अधिकृत	एस आ० 1081 दिनांक 1972-07-08	मं० 1 मार्च 1977	1. सारणी 1 के स्थान पर नयी सारणी दी गयी है। 2. पृष्ठ 9, सारणी 2 मार्ग 1—“22” के स्थान पर “22. 4” किया गया है। 3. पृष्ठ 5, खंड 3. 1. 1. 2 (ए)---अन्त में निम्नांकित जोड़ लें:— “अन्य किसी समतल में ५ प्रान्तिणत”	1977-03-31
33. IS : 3109 (भाग 2)—1970	गोल इस्पात की काँडियों की चेन (बिजली से बैलित कुंवों की) ग्रेड विनाक 40 भाग पुली खंडों सथा अन्य उत्पादन उपकरणों के लिये छिद्रित भार खंड (पहला पुनरीक्षण)	एस आ० 3355 दिनांक 1972-10-31	मं० 1 मार्च 1977	1. सारणी 1 के स्थान पर नयी सारणी दी गयी है। 2. खंड 3-1-2. 3 का सुन्न बदल दिया है। 3. (पृष्ठ 10, सारणी 2 मार्ग 1)---“22” की जगह “22. 4” किया गया है।	1977-03-31
34. IS : 3347 (भाग 5, खंड 2)—1967	चांदी मिट्टी के द्वासकार्मरों के परिमाप भाग 5, 36 किथों के आवेन (मुश्तिग) खंड 2 धातु के पुर्जे	एस आ० 2776 दिनांक 1968-08-10	मं० 2 अप्रैल 1977	1. खंड 2. 1 के आद पक टिप्पणी जोड़ी गयी है। 2. पृष्ठ 5, पाद टिप्पणी — वर्तमान पाद टिप्पणी के आद निम्नांकित पाद टिप्पणी जोड़ी गयी है। “अंगड़ाई के लिये उपयुक्त पंचल की छड़ों दंडों और टुकड़ों की विधिविरुद्ध”। 3. खंड 2. 2 का संशोधन किया गया है। 4. खंड 2. 2. 1 और 8. 2 का संर्णविन किया गया है। 5. खंड 2. 2. 2 के स्थान पर नया खंड दिया गया गया है। 3. (पृष्ठ 1, सारणी, सोर्म टेपर 4 के लिये दी मैक्स के नीचे लात्क)---“63” की जगह “70” भर ले।	1977-04-30
35. IS : 3793—1966	साइथ केन्द्रों की विधिविरुद्ध	एस आ० 489 दिनांक 1967-02-11	मं० 1 मार्च 1977	1. खंड 4. 1. 1, 5. 1 से 5. 2. 3 तक और 7. 3 के स्थान पर नये खंड रखे गये हैं। 2. खंड 4. 1. 1 और 7. 3 2. 2 (अब खंड 7. 3. 2. 3) के बाद अमरण: खंड 4. 1. 2 और 7. 4 जोड़े गये हैं तथा बाद के खंडों की अम संख्या अद्युमात्र बदली गई है। 3. (पृष्ठ 5)---निम्नलिखित पाद टिप्पणी जोड़े लीजिए “अधमने वाली सर्जानों के गंधन- प्रतिरोधिता की परीक्षण मंदिरिक्षण” 4. (पृष्ठ 10)---निम्नांकित पादटिप्पणी जोड़े लीजिए। “तीन फेजी प्रेरण मोटर की विधिविरुद्ध (तृतीय पुनरीक्षण)	1977-03-31
36. IS : 4039—1967	तीन फेजी प्रेरण मोटरों के परीक्षण की मंदिरिक्षण	एस आ० 2417 दिनांक 1967-07-22	मं० 1 मार्च 1977	5. [पृष्ठ 12, खंड 7. 5. 4 (जिसकी सख्ता 7. 6. 4 दी गयी है)] (मी) के बाद निम्नांकित जोड़े लीजिए। “(गी) और भी कोई उपमुक्त पद्धति”	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
37. IS : 4057-1967 बड़ह के धातु ढाँचे वाले चैप रन्डों पर आ 2654 की विशिष्टि	प्रम आ 2654 दिनांक 1967-08-05	मं० 5 मार्च 1977	(पृष्ठ 7, मरणी 2, आकृति) “-2. 0 + 0. 2” के स्थान पर “2. 0 - 0. 3” किया गया है। टिप्पणी—यह संशोधन फरवरी 1969 के संशोधन मं० 1 को निरस्त करता है।	(पृष्ठ 7, मरणी 2, आकृति) “-2. 0 + 0. 2” के स्थान पर “2. 0 - 0. 3” किया गया है। टिप्पणी—यह संशोधन फरवरी 1969 के संशोधन मं० 1 को निरस्त करता है।	1977-03-31
38. IS : 4115-1974 लकड़ी के कर्तीचर और फिक्स्चर ग्रंथी तारिखिक ग्रन्थालयों (पहला पुनरीक्षण)	प्रम आ 3279 दिनांक 1976-09-11	मं० 1 मार्च 1977	1. खंड 2, 4, 4 के स्थान पर नया खंड दिया गया है। 2. खंड 2, 14, 2, 24, 2, 97, 2, 115 और 2, 116 दृष्टा दिये गये हैं। 3. खंड 2, 20, 2, 43, 2, 44, 2, 45, 2, 46, 2, 47, 2, 48, 2, 49, 2, 50, 2, 61, 2, 68 और 2, 95 का संशोधन किया गया है।	1. खंड 2, 4, 4 के स्थान पर नया खंड दिया गया है। 2. खंड 2, 14, 2, 24, 2, 97, 2, 115 और 2, 116 दृष्टा दिये गये हैं। 3. खंड 2, 20, 2, 43, 2, 44, 2, 45, 2, 46, 2, 47, 2, 48, 2, 49, 2, 50, 2, 61, 2, 68 और 2, 95 का संशोधन किया गया है।	1977-03-31
39. IS : 4480 (भाग 1)-1967 छवनि-भरने और प्रत आ 1720 फिर बजाने के लिये चुम्बकीय टेपों की विशिष्टि भाग 1 दिनांक अर्द्ध सेड	प्रम आ 1720 दिनांक 1968-05-18	मं० 2 मार्च 1977	खंड 5, 3, 1 के स्थान पर नया खंड दिया गया है।	खंड 5, 3, 1 के स्थान पर नया खंड दिया गया है।	1977-03-31
40. IS : 4610-1968 सामान्य कार्यों के लिये अथ संबंधी ग्रामांशियों के लिये काँच की नलियों की विशिष्टि	प्रम आ 3728 दिनांक 1969-09-13	मं० 1 मार्च 1977	(पृष्ठ 4, खंड 4, 1, 1) खंड के अन्त में निम्नांकित नयी टिप्पणी जोड़ी गयी है तथा वर्तमान टिप्पणी को मल्ला “टिप्पणी 3” दी गयी है। “टिप्पणी 1—350° से से ऊपर अधिकतम प्राप्त वाले तापमापियों के लिये श्रोपल बैकिंग रहित काँच नली इस्तेमाल की जा सकती है।	(पृष्ठ 4, खंड 4, 1, 1) खंड के अन्त में निम्नांकित नयी टिप्पणी जोड़ी गयी है तथा वर्तमान टिप्पणी को मल्ला “टिप्पणी 3” दी गयी है। “टिप्पणी 1—350° से से ऊपर अधिकतम प्राप्त वाले तापमापियों के लिये श्रोपल बैकिंग रहित काँच नली इस्तेमाल की जा सकती है।	1977-03-31
41. IS : 4785-1968 प्रोपेल गैस के साथ इस्तेमाल के लिए अल्पदार रेयुलेटरों की विशिष्टि	प्रम आ 543 दिनांक 1968-02-15	मं० 1 मार्च 1977	1. खंड 4, 4 और 4, 5 के स्थान पर नया खंड दिये गये हैं। 2. (पृष्ठ 7, पार्टटिप्पणी) वर्तमान पर टिप्पणी के स्थान पर निम्नांकित पार्टटिप्पणी रखी गयी है। 4. संर्वांगित गैस सिलेंडरों के लिये बाल्ड-फिटिंग की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	1. खंड 4, 4 और 4, 5 के स्थान पर नया खंड दिये गये हैं। 2. (पृष्ठ 7, पार्टटिप्पणी) वर्तमान पर टिप्पणी के स्थान पर निम्नांकित पार्टटिप्पणी रखी गयी है। 4. संर्वांगित गैस सिलेंडरों के लिये बाल्ड-फिटिंग की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	1977-03-31
42. IS : 4788-1968 वैकल्पिक पेट्रोलियम गैसों के साथ इस्तेमाल के लिये चार उच्च दार रेयुलेटरों की विशिष्टि	प्रम आ 593 दिनांक 1968-02-15	मं० 1 मार्च 1977	3. (पृष्ठ 9, परिशिष्ट 4) अन्त में निम्नांकित जोड़ लीजिए : “वैकल्पिक रूप में, वार्णिंजन तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) परीक्षण-गैस के स्पष्ट में इस्तेमाल की जा सकती है।	3. (पृष्ठ 9, परिशिष्ट 4) अन्त में निम्नांकित जोड़ लीजिए : “वैकल्पिक रूप में वार्णिंजन इक्रिन पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) परीक्षण-गैस के स्पष्ट में इस्तेमाल की जा सकती है।	1977-03-31
43. IS : 4816-1971 स्थांबों चुम्बकीय चकों की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	प्रम आ 886 दिनांक 1973-03-24	मं० 2 अप्रैल, 1977	(पृष्ठ 2, खंड 5, दृश्यरा वाक्य पंक्ति 2 और 3) - वर्तमान वाक्य को जगह निम्नांकित वाक्य रखा गया है : “परीक्षण खंड के प्रथ पहले को, जिसके परिमाप $75 \times 75$ मिमी हों और जो स्थांबों चुम्बकीय चक के कार्यकारी पहले के मध्य में रखा जाए तिग्र किया जाए।	(पृष्ठ 2, खंड 5, दृश्यरा वाक्य पंक्ति 2 और 3) - वर्तमान वाक्य को जगह निम्नांकित वाक्य रखा गया है : “परीक्षण खंड के प्रथ पहले को, जिसके परिमाप $75 \times 75$ मिमी हों और जो स्थांबों चुम्बकीय चक के कार्यकारी पहले के मध्य में रखा जाए तिग्र किया जाए।	1977-04-30

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
44. IS: 4947-1968 अभिनवामर्कों के लिये कार्बन दाइमोक्साइड कारबनों की विशिष्टि	प्रस. श्रो 1906 दिनांक 1969-05-17	सं० ३ मार्च 1977	१ (पृष्ठ ४, छंड १, १ पंक्ति ३) - "फिटर" के स्थान पर "५०० अन में" किया गया है।	१977-03-31	
45. IS: 5087-1969 नाया रोधन उतारने के प्लास्टों की विशिष्टि	एस श्रो 3728 दिनांक 1969-09-13	सं० १ अक्टूबर 1977	२ (पृष्ठ ५, छंड ४ अनौपचारिक सरणी पहला स्तरम् पंक्ति १ प्रौदर २) - "कार्बन टेट्राक्लोरोइड/कार्बन डाइमोक्साइड" के स्थान पर "कार्बन डाइमोक्साइड" कर लीजिए।	१977-03-31	
46. IS: 5878(भाग १)-1971 सुरंग निर्माण के लिये रीति संहिता भाग १ परिशुद्धता सर्वेक्षण और दिनांक निशान	एस श्रो 120 दिनांक 1978-01-13	सं० १ मार्च 1977	३ (पृष्ठ १०, ३ के स्थान पर नया छंड रखा गया है।) ४. (पृष्ठ ६ छंड ६, १) - अन्त में निम्नांकित वाक्य और दिया गया है।	१977-04-30	
47. IS: 5878(भाग ३)-1972 सुरंग निर्माण के लिये आवश्यक संहिता भाग III मुलायम स्तरों में भूमि के नीचे खुदाई	एस श्रो 2015 दिनांक 1975-06-28	सं० १ मार्च 1977	"कार्बन्स की पेटी में लोदी वीलू करने की अनुमति दी जाती है, बल्कि कि बैलिंग के बावजूद कारबन्स को क्रमशः तलान किया जाए।"	१977-04-30	
48. IS: 5878(भाग ५)-1971 सुरंग निर्माण की रीति संहिता भाग ४ सुरंग की टेक्नि	एस श्रो 115 दिनांक 1975-01-11	सं० १ मार्च 1977	(पृष्ठ ४, छंड ३, १) - छंड ३, १ के बाद निम्नांकित नया छंड जोड़ दीजिए।	१977-04-30	
49. IS: 5878(भाग ६)-1975 सुरंग निर्माण की रीति संहिता भाग ६ इस्पात का अस्तर	एस श्रो 1892 दिनांक 1977-06-11	सं० १ मार्च 1977	"३, २ प्लास ०, २० से २, ८ मिमी तक व्यास के नारों का रोधन उतारने के लिये इस्पात का प्रथम कवर पृष्ठ और पृष्ठ १ प्रौदर ३ पर बदल कर नया शीर्षक दिया गया है।"	१977-03-31	
50. IS: 5878(भाग ७)-1972 सुरंग निर्माण की रीति संहिता भाग ७ पतले समाले की भाराई	एस श्रो 3069 दिनांक 1977-09-13	सं० १ मार्च 1977	प्रथम कवर पृष्ठ और पृष्ठ १ और ३ पर नया शीर्षक बदल दिया गया है।	१977-03-31	
51. IS: 5921(भाग १)-1970 इंस्क्रिप्शन और दूरभास सर्वाधी उपकरणों में इस्पेक्टर के लिये मुद्रित मर्किटों के बास्ते बातु जू़ी आश्राम रामग्री की विशिष्टि अपेक्षाएँ भाग १ सामाज्य प्रयोक्ताओं और परीक्षण	एस श्रो 398 दिनांक 1972-02-05	सं० २ मार्च 1977	प्रथम कवर पृष्ठ और पृष्ठ १ और ३ पर बदल कर नया शीर्षक दिया गया है।	१977-03-31	
52. IS: 6067-1971 इमकल के इस्पेक्टर के लिये जन टेक्निक टाइप "एम्स" की विशिष्टि	एस श्रो 120 दिनांक 1977-01-13	सं० ४ अक्टूबर 1977	छंड ५, ३, १३, ३ के बाद छंड ५, ३, १४ से ५, ३, १४, ६ तक जोड़े गये हैं।	१977-03-31	
53. IS: 6234-1971 सवाल्य अभिन्न शामक पानी बाले (सनत यायु दाश बाले) की विशिष्टि	एस श्रो 1549 दिनांक 1973-06-03	सं० २ अक्टूबर 1977	[पृष्ठ १२, मार्गो १, कम सं० (iii) स्तरम् ४] "७, ३" के स्थान पर "७, ०" रखा गया है।	१977-04-30	
			१. छंड ४, १, ६, २, १, ७ २, २, २, २, ७, २, ३, ७, २, ६, ७, २, ७, ७, २, ९, १, और ७, २, ११ में संशोधन किया गया है।	१977-04-30	
			२. छंड ४, ३, ७ २, १, २, ७, २, ४, १०, १ और १०, १, १ के स्थान पर ये छंड दिये गये हैं।	१977-04-30	
			३. पृष्ठ ४, ४ और १० पर कमणः "४" "४" और "५" चिन्हावली वादटिप्पणीयों के स्थान पर तभी पावटिप्पणी दी गयी है।	१977-04-30	
			४. (पृ० ६, पारटिप्पणी) हटा दीजिए।	१977-04-30	
			५. (पृष्ठ ७, छंड ७, १, १ से ७, १, ६ तक) दूरा दीजिए।	१977-04-30	

1	2	3	4	5	6
54. IS : 6355-1971 जाती आंचा मिलिंग कटरों की विशिष्टि	एम ओ 231 दिनांक मं० 1 जनवरी 1977	एम ओ 231 दिनांक मं० 1 फरवरी 1977	पृष्ठ 11, सारणी 1, मन्त्र 4, क्रम सं० (1) और (ii) के सामने) - दोनों स्थानों पर "टिन मिश्र" के स्थान पर "मीमायुक्त टिन मिश्र कर नीजिए।	6. (पृष्ठ 11, सारणी 1, मन्त्र 4, क्रम सं० (1) और (ii) के सामने) - दोनों स्थानों पर "टिन मिश्र" के स्थान पर "मीमायुक्त टिन मिश्र कर नीजिए।	
55. IS: 6388-1971 जिरी काटने के भोर्म टेपर गेंड वाले मिलिंग कटरों की विशिष्टि	एम ओ 889 दिनांक मं० 1 फरवरी 1977	एम ओ 889 दिनांक मं० 1 फरवरी 1977	7. खंड 4. 1 के बाद एक टिप्पणी जोड़ी गई है।	7. खंड 4. 1 के बाद एक टिप्पणी जोड़ी गई है।	
56. IS : 6848-1972 रेलगाड़ियों में प्रकाश करने वाले वालानुकूल मेवाओं के लिये सीमकाल्प बैटरीयों की विशिष्टि	एम ओ 2015 दिनांक मं० 2 अप्रैल 1977	एम ओ 2015 दिनांक मं० 2 अप्रैल 1977	8. खंड 4. 4. 3 के बावजूद 4. 5, 4. 6 और 4. 7 जोड़े गये हैं।	8. खंड 4. 4. 3 के बावजूद 4. 5, 4. 6 और 4. 7 जोड़े गये हैं।	
57. IS: 7073(भाग 1)-1973 विमान माल वैलेटों एम ओ 2939 और कटेशरों संबंधी पारिभासिक ग्रन्थावानी भाग 1 दिनांक विमानबाही माल वैलेट	एम ओ 2939 दिनांक मं० 1 अप्रैल 1977	एम ओ 2939 दिनांक मं० 1 अप्रैल 1977	9. पृष्ठ 5 पर वर्तमान पारिटिप्पणी के बाद पाद टिप्पणियां जोड़ी गयी हैं।	9. पृष्ठ 5 पर वर्तमान पारिटिप्पणी के बाद पाद टिप्पणियां जोड़ी गयी हैं।	
58. IS : 7142-1974 अन्यथाक्र इवित गैसों के लिये बैलिंस अन्य आर्बन हम्मान गैस सिलेंडर (5 लिटर दिनांक पानी से अनक्षिक समार्थ बाले) की विशिष्टि	एम ओ 776 दिनांक मार्च 1977	एम ओ 776 दिनांक मार्च 1977	10. खंड 13. 1. 1 के बाद पाद खंड 14 और परिशिष्ट ए और बी जोड़े गये हैं।	10. खंड 13. 1. 1 के बाद पाद खंड 14 और परिशिष्ट ए और बी जोड़े गये हैं।	
59. IS : 7170-1974 अन्यथाक्र शंकुखनित (सपाट) टोपी वाले टैपिंग वेच की विशिष्टि	एम ओ 988 दिनांक मार्च 1977	एम ओ 988 दिनांक मार्च 1977	(पृष्ठ 1, खंड 3) वर्तमान पदनाम उदाहरण के स्थान पर निम्नांकित उदाहरण कर लिया जाये। "जाती आंचा मिलिंग कटर 125 × 16 एम "IS 6355"	(पृष्ठ 1, खंड 3) वर्तमान पदनाम उदाहरण के स्थान पर निम्नांकित उदाहरण कर लिया जाये। "जाती आंचा मिलिंग कटर 125 × 16 एम "IS 6355"	1977-01-31
			(पृष्ठ 1, खंड 2, सारणी, टाइप ई और एक मन्त्र ई 9 के नीचे दूसरी प्रविष्टि) "माइज 26" के स्थान पर "16" लगा गया है।	(पृष्ठ 1, खंड 2, सारणी, टाइप ई और एक मन्त्र ई 9 के नीचे दूसरी प्रविष्टि) "माइज 26" के स्थान पर "16" लगा गया है।	1977-02-28
			1. पृष्ठ 11, खंड 5. 3 दूसरी पंक्ति - "20 और 35 मे" के स्थान पर "20 और 30 मे," रखा गया है।	1. पृष्ठ 11, खंड 5. 3 दूसरी पंक्ति - "20 और 35 मे" के स्थान पर "20 और 30 मे," रखा गया है।	1977-04-30
			2. पृष्ठ 12, खंड 5. 1. 6 - वर्तमान सामग्री की व्याख्या : के = 0.0043, निविकाकार पोजीटिव लेटों और चिपकी हुई लेटों के लिये	2. पृष्ठ 12, खंड 5. 1. 6 - वर्तमान सामग्री की व्याख्या : के = 0.0043, निविकाकार पोजीटिव लेटों और चिपकी हुई लेटों के लिये	
			1. प्रथम कबर पृष्ठ और पृष्ठ 1 से 7 तक पवनम - "IS : 7073 (भाग 1)-1973" के स्थान पर "IS : 7073-1973" कर लीजिए।	1. प्रथम कबर पृष्ठ और पृष्ठ 1 से 7 तक पवनम - "IS : 7073 (भाग 1)-1973" के स्थान पर "IS : 7073-1973" कर लीजिए।	1977-04-30
			2. प्रथम कबर पृष्ठ और पृष्ठ 1 से 7 तक पवनम - "IS : 7073 (भाग 1)-1973" के स्थान पर "IS : 7073-1973" कर लीजिए।	2. प्रथम कबर पृष्ठ और पृष्ठ 1 से 7 तक पवनम - "IS : 7073 (भाग 1)-1973" के स्थान पर "IS : 7073-1973" कर लीजिए।	
			3. (पृष्ठ 3, खंड 0. 2—वर्तमान खंड हटा दीजिए। और खंड "0. 3" की मंज्या बदल कर "0. 2" कर लीजिए।	3. (पृष्ठ 3, खंड 0. 2—वर्तमान खंड हटा दीजिए। और खंड "0. 3" की मंज्या बदल कर "0. 2" कर लीजिए।	
			4. खंड 1. 1 के स्थान पर नया खंड रखा गया है।	4. खंड 1. 1 के स्थान पर नया खंड रखा गया है।	
			5. खंड 2. 50 के बाद नये पारिभासिक शब्द जोड़े गये हैं।	5. खंड 2. 50 के बाद नये पारिभासिक शब्द जोड़े गये हैं।	
			पृष्ठ 6, खंड 4. 2. 2 पंक्ति 1—"1. 5 मिमी" दे स्थान पर "1. 4 मिमी" किया गया है।	पृष्ठ 6, खंड 4. 2. 2 पंक्ति 1—"1. 5 मिमी" दे स्थान पर "1. 4 मिमी" किया गया है।	1977-03-31
			(ए) सारणी 1 की आकृति के स्थान पर नई आकृति रखी गयी है।	(ए) सारणी 1 की आकृति के स्थान पर नई आकृति रखी गयी है।	1977-03-31
			(बी) मन्त्र "वैन माइज सेल्या" "मानवी पंक्ति लूट "± 1/2 अर्डी 17" हटा दीजिए।	(बी) मन्त्र "वैन माइज सेल्या" "मानवी पंक्ति लूट "± 1/2 अर्डी 17" हटा दीजिए।	
			(सी) टिप्पणी 2 वर्तमान टिप्पणी के स्थान पर निम्नांकित टिप्पणी रखी गयी है।	(सी) टिप्पणी 2 वर्तमान टिप्पणी के स्थान पर निम्नांकित टिप्पणी रखी गयी है।	
			"टिप्पणी 2—मानक नस्वाइयां मोटी खम्बेदार रेखाओं के बीच मे है। ऊपरी मोटी खम्बेदार रेखाएं टाइप प्री और टाइप बी पेंचों की न्यूमान अवधारणी लम्हाई बनाती है।	"टिप्पणी 2—मानक नस्वाइयां मोटी खम्बेदार रेखाओं के बीच मे है। ऊपरी मोटी खम्बेदार रेखाएं टाइप प्री और टाइप बी पेंचों की न्यूमान अवधारणी लम्हाई बनाती है।	
			IS : 5957-1970 के अन्सार टूटी खम्बेदार रेखा के ऊपर छोटे पेंचों की लम्हाई हैं और टूटी खम्बेदार रेखा के नीचे लम्हे पेंचों की लम्हाई हैं।	IS : 5957-1970 के अन्सार टूटी खम्बेदार रेखा के ऊपर छोटे पेंचों की लम्हाई हैं और टूटी खम्बेदार रेखा के नीचे लम्हे पेंचों की लम्हाई हैं।	

1	2	3	4	5	6
60	IS : 7312—1974 वेस्टकॉन अल्प कार्बन डिस्पाल एम्ब्रो 2958 मं० २ के ध्रुवित प्रमाणीत रीम मिलेडगों की विशिष्टि दिनाक 1976-08-07	प्रमाणीत अल्प कार्बन डिस्पाल एम्ब्रो 2958 मं० २ के ध्रुवित प्रमाणीत रीम मिलेडगों की विशिष्टि दिनाक 1976-08-07	प्रमाणीत अल्प कार्बन डिस्पाल एम्ब्रो 2958 मं० २ के ध्रुवित प्रमाणीत रीम मिलेडगों की विशिष्टि दिनाक 1976-08-07	1. खंड 3.1 के स्थान पर नया खंड रखा गया है। 2. (पृष्ठ 4, पादटिप्पणियों)---पाद टिप्पणियों के अन्त में निम्नांकित पादटिप्पणी जोड़ी गयी है। “कम अस्वदाब रीम मिलेडगों के निर्माण के लिए गर्म बैलिंग इमान की छंदगों और पन्जियों की विशिष्टि”	1977-02-28
61.	IS : 7349—1974 बगजों और धीयरों (बाधों) एम्ब्रो 1596 मं० २ के चालन और रखरखाव की रीमि संहिता दिनाक 1976-05-07	एम्ब्रो 1596 मं० २ के चालन और रखरखाव की रीमि संहिता दिनाक 1976-05-07	एम्ब्रो 1596 मं० २ के चालन और रखरखाव की रीमि संहिता दिनाक 1977	1. (पृष्ठ 8, खंड 3. 2. 2. 1 दस्ती पंक्ति) “दिजाइन नाल ऐलिंग” के स्थान पर “डिजाइन प्रैपलिफ्ट” रखा गया है। 2. (पृष्ठ 7, खंड 3. 1) अन्त में निम्नांकित जोड़ा गया है। “गेसा करने समय बचाव कम करने के लिए अधेस्य कर्श का तटबन्ध धार, के ऊपर की धोर मसुचित हूँनी पर अनाना आहिए तथा विभाजक ढीवार या पाये और समीपवर्ती फर्श को खोड़े समय के लिए आवश्यक मात्रा तक मजबूत कर देना चाहिए।	1977-02-28
62.	IS : 7372—1974 खोटर बाह्यनों के लिए एम्ब्रो 4697 मं० १ मनिकाल्प मंग्राही बैटरियों की विशिष्टि दिनाक 1975-11-01	एम्ब्रो 4697 मं० १ मनिकाल्प मंग्राही बैटरियों की विशिष्टि दिनाक 1975-11-01	एम्ब्रो 4697 मं० १ मनिकाल्प मंग्राही बैटरियों की विशिष्टि दिनाक 1977	3. पृष्ठ 10, खंड 3. 3. 5. 8 (खंड 3. 3. 5. 8) के बाद निम्नांकित खंड जोड़ा गया है। 3. 3. 5. 9 ताल अमता रक्षा बगज में मल्युक्त जलाशय भी बत रहा है वहाँ जल भंडारण अमता की नियमकालिक मसीधा के लिए समय समय पर संस्कृत जलाशय खोक में गहराई नापी जा सकती है।	
63.	IS : 7388—1974 फोर्मस्प तत्त्व एलिंग मैट्स की विशिष्टि	एम्ब्रो 1232 मं० १ दिनाक 1976-04-03	एम्ब्रो 1232 मं० १ दिनाक 1977	1. (पृष्ठ 12, खंड 8. 7. 1 दूसरी पंक्ति) “20 मे 35°” के स्थान पर “20 मे 30° मे तक” रखा गया है। 2. (पृष्ठ 13 खंड 8. 8 चौथी पंक्ति) “और आयाम” के स्थान पर “पूर्ण विस्थापन” रखा गया है।	1977-04-30
64.	IS : 7418—1974 सपिल लोल (कंकीट और एम्ब्रो 2858 मं० १ इम्पाल ) के डिजाइन की विशिष्टि दिनाक 1976-08-07	सपिल लोल (कंकीट और एम्ब्रो 2858 मं० १ इम्पाल ) के डिजाइन की विशिष्टि दिनाक 1977	सपिल लोल (कंकीट और एम्ब्रो 2858 मं० १ इम्पाल ) के डिजाइन की विशिष्टि दिनाक 1977	1. खंड 6. 4 के स्थान पर नया खंड रखा गया है। 2. (पृष्ठ 1, खंड 1 पंक्ति 1) “एनिस पैटन के बाद” “125” शब्द जोड़ा गया है। 3. आकृति 1 के नीचे अनोपचारिक मारणी का संशोधन किया गया है। 4. खंड 3. 3 के बाद खंड 3. 4 और 3. 4. 1 जोड़े गए हैं। 1. खंड 2. 2. 1 और 7. 3 के स्थान पर नए खंड रखे गए हैं।	1977-04-30
65.	IS : 7515—1974 अन्तर्राष्ट्रिय छिक्काब यन्त्र (स्प्रेश्यों) के लिए कठ आफ युक्ति की विशिष्टि दिनाक 1977-06-11	एम्ब्रो 1882 मं० १ दिनाक 1977	एम्ब्रो 1882 मं० १ दिनाक 1977	2. पृष्ठ 7 पर बत्तमान पाव टिप्पणियों के स्थान पर नयी पादटिप्पणियों रखी गयी हैं। 3. (पृष्ठ 4, खंड 2. 2. 9 पंक्ति 1) -- “जीव” मे पहले “जाल” शब्द जोड़ा गया है। (पृष्ठ 7, खंड 6. 3 अनियम शाक्य) — वर्ष- मात सामग्री की जगह निम्नांकित रखी गयी है। “धारे की अस्त लम्बाई और मिथिल की लम्बाई त्रमण: 6 और 10 मिमी से कम तक्षी होनी चाहिए”।	1977-03-31

1	2	3	4	5	6
66. IS : 7610 (भाग 3) — 1975 मरीनादि के प्रमाणों 1892 सं० 1 कपड़ों और ऊन की विशिष्ट भाग 3 मांड देने दिनांक मार्च 1977 की फलात्तेन 1977-06-11				यह संसोधन भाष्टारभूत सूत और धागों की प्रति देसीमीटर मार्किंग काउन्ट मास्कन्डी अपेक्षाओं को सारणी 1 को स्थानान्तरित करने के लिए जारी किया जा रहा है। क्योंकि ये विवरण निर्माताओं के पथ प्रवर्शन के लिए हैं।	1977-03-31

[सं० मी०एम०डी०/13 : 5]

## INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, the 1981-01-27

**S.O. 617.**—In pursuance of regulation 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that amendment(s) to the Indian Standard(s) given in the schedule hereto annexed have been issued under the powers conferred by the sub-regulation (1) of Regulation 3 of the said Regulations.

## SCHEDULE

Sl. No. and title of the Indian No. Standard amended	No. and date of Gazette Noti- fication in which the estab- lishment of the Indian Sta- ndard was notified	No. and Date of the amendment	Brief particulars of the amendment	Date from which the amendment shall have effect	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1. IS : 82—1973 Methods of sampling and test for thinners and solvents for paints (first revision)	..	No. 2 Apr 1977	Table 2 has been amended	1977-04-30	
2. IS : 203—1972 Specification for dry batteries for flashlights (third revision)	S. O. 770 dated 1975-03-08	No. 3 Apr 1977	(i) Tables 3, 4 and 5 have been substituted by new ones (ii) Clause 6.1 has been amended	1977-04-30	
3. IS : 273—1973 Specification for picks and beaters (second revision)	S. O. 2669 dated 1975-08-16	No. 3 Apr 1977	Clause 4 has been substituted by a new one	1977-04-30	
4. IS : 317—1970 Specification for automotive hydraulic brake fluid, moderate duty (second revision)	S. O. 1555 dated 1972-06-24	No. 2 Feb 1977	Table 1 has been amended	1977-02-28	
5. IS : 335—1972 Specification for new insulating oils for transformers and switchgear (second revision)	S. O. 3256 dated 1973-11-24	No. 2 Apr 1977	Note 2 of Table 1 has been amended	1977-04-30	
6. IS : 365—1965 Specification for electric hot-plates (revised)	..	No. 3 Apr 1977	(i) [Page 6, clause 6.2 (a), line 3]—Substitute '105° C' for '95° C.' (ii) Clauses 10.3.1 and 10.3.5.3 have been substituted by new ones	1977-04-30	
7. IS : 369—1965 Specification for electric radiators (revised)	S. O. 3450 dated 1965-11-06	No. 3 Apr 1977	(i) (Page 6, clause 6.9, line 3)—substitute '2m' for '3m'. (ii) Clause 10.3.1 has been amended (iii) [Page 10, clause 10.3.6.2 (a)]—substitute the following for the existing matter : '(a) seven hours connected to supply, and'	1977-04-30	
8. IS : 661—1974 Code of practice for thermal insulation of cold storages (second revision)	S.O. 3279 dated 1976-09-11	No. 2 Apr 1977	[Page 6, Table 1, under col 'Resin Bonded Glass Wool' against Sl. No. (ii)]—Substitute '24 to 48' for '24 to 28'.	1977-04-30	

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
9.	IS : 906—1972 Specification for S.O. 423 dated branch with revolving head for fire fighting purposes (second revision)	No. 1 1975-02-15	No. 1 Apr 1977	(i) Clause 2.1.2 has been substituted by a new one (ii) (Page 4, clause 5.1, line 3)—Substitute 'IS : 903—1975**' for 'IS : 903—1965**' (iii) (Page 4, foot-notes with '11' and '**' marks)—Substitute '(second revision)' for '(revised)' at both the places (iv) (Page 6, clause 5.2, lines 15 and 16)— Substitute 'G-2-1/4 of IS : 2643 (Pt I)— 1975*' for 'specified in IS : 554-1964*.' (v) Page 6, foot-note)—Substitute the following for the existing foot-note. "Dimensions for pipe threads for fastening purposes : Part I Basic pro- file and dimensions (first revision)	1977-04-30
10.	IS : 959—1966 Specification for S.O. 2419 dated No. 4 electric soldering irons (revised)	1966-08-13	No. 4 Apr 1977	(i) Clause 10.3.1 has been substituted by a new one (ii) (Page 10, clause 10.3.4, line 3)—sub- stitute '7 hours' for '8 hours'.	1977-04-30
11.	IS : 942—1966 Specification for S.O. 4023 dated No. 4 275-l/min portable pump set for fire fighting (Revised)	1966-12-31	No. 4 Apr 1977	(i) Clauses 4.1.2.4, 4.1.2.7, 4.1.5., 4.1.7 and 4.1.7.1. have been amended (ii) (Page 5, footnote with mark '+', line 2)—Substitute '(second revision)' for '(revised)' (iii) (Page 6, footnote with mark '+')— substitute '(second revision)' for '(re- vised)'.	1977-04-30
12.	IS : 1044—1970 Specification for S.O. 1635 dated No. 2 turkey red oil (first revision)	1972-07-08	No. 2 Apr 1977	Clause A-2.2.2 has been amended	1977-04-30
13.	IS : 1190—1976 Specification for twin wire healds for weaving (second revision)	..	No. 1 Apr 1977	(i) (Page 1, clause 2.1, line 1)—delete the word 'Healds'.	1977-04-30
14.	IS : 1441—1966 Specification for S.O. 469 dated No. 2 insulator stalks for telegraphs and telephone lines (first revision)	1967-02-11	No. 2 Apr 1977	[Page 12 (page 15 of the reprint) clause 4.3)—Add the following at the end of this clause : 'Every stalk shall be provided with lea- ther or PVC washers.'	1977-04-30
15.	IS : 1476—1971 Specification for S.O. 751 dated No. 2 domestic refrigerators (mechani- cally operated) (first revision)	1974-03-16	No. 2 Feb 1977	(i) Clauses 2.10, 4.2.2, 8.3.1, 10.4.3.2 (c) and 10.5.1.2 (b) have been amen- ded (ii) Clauses 10.6.2.3 and 10.6.2.6 have been substituted by new ones (iii) (Page 20, clause 10.6.2.7)—Delete	1977-02-28
16.	IS : 1555—1974 Specification for S.O. 987 dated No. 3 pitch-bound wire reeds for use in cotton looms (second revision)	1976-06-03	No. 3 Mar 1977	Clause 1 and Table 1 have been amended	1977-03-31
17.	IS : 1651—1970 Specification for S.O. 1635 dated No. 2 stationary cells and batteries, lead- acid type (with tubular positive plates) (first revision)	1972-07-08	No. 2 Apr 1977	(Page 4, clause 3.1, first line)—Add the words 'lead-lined wood' after the word glass'.	1977-04-30
18.	IS : 1957—1961 Specification for S.O. 1267 dated No. 1 prismatic compasses, non-liquid	1962-04- 8	No. 1 Mar 1977	Clause 5.10 has been substituted by a new one	1977-03-31
19.	IS : 1970 (Pt-I)—1974 Specifica- tion for hand-operated compression kanapsack sprayer Pt I Non-pres- sure retaining type (third revision)	S.O. 1092 dated 1977-04-09	No. 1 Feb 1977	(i) Clauses 5.17, 5.18, 5.24, A-3.1, A- 3.2 and A-4.1 have been amended (ii) (Page 18, clause A-5.2)—Delete and renumber 'A-5.3' as 'A-5.2'. (iii) Notes 1 and 2 of clause A-6.3 have been substituted by new ones (iv) Table 1 has been amended	1977-02-28

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
20.	IS : 2071(Pt I)—1974 Methods of high voltage testing procedures (first revision)	S.O. 987 dated 1976-03-06	No. 1 Feb 1977	(v) (Page 11, Clause 5.3.1)—Add the following matter at the end: "The cushion shall be covered with suitable covering material, such as cotton, canvas, rexin and PVC or plastic-coated fabrics".	1977-02-28
21.	IS : 2155—1962 Specification for rivets for general purposes (below 12 mm diameter)	S.O. 898 dated 1963-03-30	No. 1 Feb 1977	(i) Clauses 4.1.7.3, A-1.3 and A-1.4 have been substituted by new ones (ii) Clauses 4.3.4, 6.2.1, A-1.2.1, 0.4.1 and A-1.2 have been amended (iii) (Page 24, clauses A-1.2.1 and A-1.2.2—Substitute 'U' for 'U' wherever it appears. (iv) Clauses A-1.2.3 and A-1.5 have been added after clauses A-1.2.2 and A. 1.4 respectively.	1977-02-28
22.	IS : 2488(Pt I)—1966 Methods of sampling and test for industrial effluents, Part 1	S.O. 2417 dated 1967-07-22	No. 1 Mar 1977	Clause 2.1 has been substituted by a new one	1977-02-28
23.	IS : 2509—1973 Specification for rigid non-metallic conduits for electrical installations (first revision)	S.O. 2557 dated 1975-08-09	No. 2 Mar 1977	(i) Table 1 has been amended (ii) Clause 6.4.2.1 has been substituted by a new one	1977-03-31
24.	IS : 2576—1975 Specification for dry batteries for transistors radio receivers (first revision)	..	No. 1 Apr 1976	(i) (Page 4, Table 1)—Substitute the table for the existing table. (ii) Clauses 6.1 and 8.1 have been amended.	1976-04-30
25.	IS : 2609—1972 Specification for coach bolts (first revision)	S.O. 423 dated 1975-02-15	No. 2 Feb 1977	(i) Existing values of S in the tables 1 and 2 have been substituted and a new matter has also been added at the beginning of both the tables. (ii) (Pages 2 and 3, Tables 1 and 2)—Add the following note after note 4 : 'Note 5—Coach bolts are permitted to have scant shank. In such cases, the shank diameter may be made equal to the pitch diameter.'	1977-02-28
26.	IS : 2635—1975 Specification for DC electric welding generators (second revision)	..	No. 1 Feb 1977	Clause 11.2 has been amended	1977-02-28
27.	IS : 2690 (Pt II)—1975 Specification for burnt clay flat terracing tiles Pt II Hand made (first revision)	..	No. 1 Mar 1977	(i) (Page 4, clause 4.1.2)—Substitute '75 mm' for '100 mm'. (ii) (Page 4, clause 4.1.3)—Substitute '25 mm' for '35 mm'.	1977-03-31
28.	IS : 2696—1974 Functional requirements for 1125-1/min light fire engine (first revision)	S.O. 1597 dated 1976-05-08	No. 2 Apr 1977	[Page 7, clause 4.5.2 (a)]—substitute '2.5°C' for '2.8°C'.	1977-04-30
29.	IS : 2712—1971 Specification for compressed asbestos fibre jointing (first revision)	S.O. 3163 dated 1973-11-10	No. 1 Apr 1977	Clause 4.4 has been substituted by a new one	1977-04-30
30.	IS : 2720 (Pt XXXI)—1969 Methods of test for soils Pt XX XI field determination of californian bearing ratio.	S.O. 4848 dated 1969-12-06	No. 1 Feb 1977	(i) (Page 4, clause 2.0, line 1)—Substitute 'IS : 2809—1972*' for 'IS : 2809-1964*. (ii) Existing foot-notes at page 4, 5 and 7 have been substituted by new ones (iii) Clauses 3.11 and 4.8 have been amended	1977-02-28

(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
31.	IS : 3093—1965 Specification for dahan, jungle cutting	S.O. 1081 dated 1966-04-09	No. 1 Apr 1977	(i) (Page 5, clause 4.2)—Substitute 'fini- shed bright' for 'ground'. (ii) (Page 5, clause 4.3, line 2)—Substi- tute 'corrosion preventive (see IS : 1153—1975+) for 'rust-preventive paint'. (iii) (Page 5, footnote)—Add the following —footnote at the end : ‘+Specification for temporary corro- sion preventive, fluid, hard film solvent deposited (first revision)’.	1977-04-30
32.	IS : 3109 (Pt I)—1970 Specification for round steel link chain (electric butt welded), grade 40 Pt I non-calibrated	S.O. 1081 dated 1972-07-08	No. 1 Mar 1977	(i) Table 1 has been substituted by a new one (ii) (Page 9, Table 2, Col 1)—Substitute '22.4' for '22'. (iii) [Page 5, clause 3.1.1.2 (a)]—Add the following at the end : 'and 35 per cent in any other plane'.	1977-03-31
33.	IS : 3109 (Pt II)—1970 Specification for round steel link chain (electric butt welded), grade 40 Pt II calibrated load chain for pulley blocks and other lifting appliances (first revision)	S.O. 3305 dated 1972-10-31	No. 1 Mar 1977	(i) Table 1 has been substituted by a new one. (ii) Formula of clause 3.1.2.3 have been substituted (iii) (page 10, table 2, col 1)—Substitute '22.4' for '22'.	1977-03-31
34.	IS : 3347 (Pt V/Sec 2)—1967 Dimensions for porcelain transformer bushings Pt V 36 KV bushings Sec 2 metal parts	S.O. 2776 dated 1968-08-10	No. 2 Apr 1977	(i) A note has been added under clause 2.1 (ii) (Page 5, footnotes)—Add the following footnote after the existing footnotes : ‘+Specification for brass bars, rods and sections suitable for forging. (iii) Clause 2.2. has been amended. (i) Clauses 2.2.1 and 8.2 have been amended (ii) Clause 2.2.2 has been substituted by a new one (iii) (Page 4, table 1, valve under D Max for Morse Taper 4)—Substitute '70' for '63'. (i) Clauses 4.1.1 , 5.1 to 5.2.3 and 7.3 have been substituted by new ones (ii) Clauses 4.1.2 and 7.4 have been added after clauses 4.1.1 and 7.3.2.2 (now clause—7.3.2.3) respectively and the subsequent clauses changed accordingly (iii) (Page 5)—Add the following foot-note : ‘*Guide for testing insulation resistance of rotating machines.’ (iv) (Page 10)—Add the following foot-note : ‘*Specification for three-phase induction motors (third revision).’ (v) [Page 12, clause 7.5.4 (renumbered as 7.6.4)]—Add the following after (c). (d) Any other suitable method. (Page 7, table 2, fig.)—Substitute '2.0 ± 0.3' for 2.0 ± 0.2’.	1977-04-30 1977-03-31 1977-03-31 1977-03-31 1977-03-31
35.	IS : 3793—1966 Specification for live centres	S.O. 469 dated 1967-02-11	No. 1 Mar 1977		
36.	IS : 4029—1967 Guide for testing three-phase induction motors	S.O. 2417 dated 1967-07-22	No. 1 Mar 1977		
37.	IS : 4057—1967 Specification for carpenters' metal bodied bench planes	S.O. 2654 dated 1967-08-05	No. 5 Mar 1977	Note—This amendment supersedes Amend- ment No. 1, February 1969.	1977-03-31

1	2	3	4	5	6
38.	IS : 4415—1974 Glossary of terms relating to wooden furniture and fixtures (first revision)	S.O. 3279 dated 1976-09-11	No. 1 Mar 1977	(i) Clause 2.4.4 has been substituted by a new one (ii) Clauses 2.14, 2.24, 2.97, 2.115 and 2.116 have been deleted (iii) Clauses 2.20, 2.43, 2.44, 2.45, 2.46, 2.47, 2.48, 2.49, 2.50, 2.61, 2.68 and 2.95 have been amended	1977-03-31
39.	IS : 4480(Pt I)—1967 Specification for magnetic tapes for sound recording and reproduction Pt I domestic grade	S.O. 1720 dated 1968-05-18	No. 2 Mar 1977	Clause 5.3.1 has been substituted by a new one	1977-03-31
40.	IS : 4610—1968 Specification for glass tubes for general purpose and reference thermometers	S.O. 3728 dated 1969-09-13	No. 1 Mar 1977	(Page 4, clause 4.1.1)—Add the following new note at the end of the clause and re-number the existing note as 'NOTE 2'. 'Note 1—For thermometers having maximum range above 350° C, glass tubing without opal backing may be used.	1977-03-31
41.	IS : 4785—1968 Specification for low pressure regulators for use with propane gas	S.O. 593 dated 1969-02-15	No. 1 Mar 1977	(i) Clauses 4.4 and 4.5 have been substituted by new ones (ii) (Page 7, foot-note)—Substitute the following for the existing foot-note : "Specification for valve fittings for compressed gas cylinders (first revision)." (iii) (Page 9, Appendix A)—Add the following at the end : 'Alternative commercial liquefied petroleum gas (LPG) may be used as the test gas.'	1977-03-31
42.	IS : 4786—1968 Specification for variable high pressure regulators for use with liquefied petroleum gases	S.O. 593 dated 1969-02-15	No. 1 Mar 1977	(i) Clauses 4.4 and 4.5 have been substituted by new ones (ii) [Page 6, foot-note with section (§) mark]—Substitute the following for the existing foot-note : '§Specification for valve fittings for compressed gas cylinders (first revision)' (iii) (Page 10 Appendix A)—Add the following at the end : 'Alternatively commercial liquefied petroleum gas (LPG) may be used as the test gas.'	1977-03-31
43.	IS : 4816—1971 Specification for permanent magnetic chucks (first revision)	S.O. 886 dated 1973-03-24	No. 2 Apr 1977	(Page 2, clause 5, second sentence, lines 2 and 3)—Substitute the following for the existing sentence : 'One face having dimensions 75 x 75 mm of the test piece which is to be kept in contact with the working face of the permanent magnetic chuck shall be smoothly ground.'	1977-04-30
44.	IS : 4947—1968 Specification for carbon dioxide cartridge for fire extinguishers	S.O. 1906 dated 1969-05-17	No. 3 Mar 1977	(i) (Page 4, clause 1.1, line 3)—Substitute '500 cc' for '1 litre'. (ii) (Page 5, clause 4.1, informal table, first col, lines 1 and 2)—Substitute 'Carbon dioxide' for 'Carbon tetrachloride/carbon dioxide'. (iii) Clause 10.3 has been substituted by a new one. (iv) (Page 6, clause 6.1)—Add the following sentence at the end : 'The hole in the bottom of the cartridge may be permitted to be welded provided the cartridge is annealed after welding.'	1977-03-31

1	2	3	4	5	6
45. IS : 5087—1969	Specification for wire stripping pliers	S.O. 3728 dated 1969-09-13	No. 1 Apr 1977	(Page 4, clause 3.1)—Add the following new clause after 3.1 : ‘3.2 The pliers are used for stripping the wires having diameter range of 0.20 to 2.8 mm.’	1977-04-30
46. IS : 5878 (Pt I)—1971	Code of practice for construction of tunnels Pt I precision survey and setting out	S.O. 120 dated 1973-01-13	No. 1 Mar 1977	Title on first cover page, pages 1 and 3 has been substituted by a new one.	1977-03-31
47. IS : 5878 (Pt III)—1972	Code of practice for construction of tunnels Pt III under ground excavation in soft strata	S.O. 2015 dated 1975-06-28	No. 1 Mar 1977	Title on first cover page, pages 1 and 3 has been substituted by a new one.	1977-03-31
48. IS : 5878 (Pt IV)—1971	Code of practice for construction of tunnels Pt IV tunnel supports	S.O. 115 dated 1975-01-11	No. 1 Mar 1977	Title on first cover page, pages 1 and 3 has been substituted by a new one.	1977-03-31
49. IS : 5878 (Pt VI)—1975	Code of practice for construction of tunnels Pt VI steel lining	S.O. 1892 dated 1977-06-11	No. 1 Mar 1977	Title on first page cover, pages 1 and 3 has been substituted by a new one.	1977-03-31
50. IS : 5878 (Pt VII)—1972	Code of practice for construction of tunnels Pt VII grouting	S.O. 3069 dated 1977-09-13	No. 1 Mar 1977	Title on first cover page, pages 1 and 3 has been substituted by a new one.	1977-03-31
51. IS : 5921 (Pt 1)—1970	Specification for metal-clad base materials for printed circuits for use in electronic and telecommunication equipment Pt I General requirements and tests	S.O. 398 dated 1972-02-05	No. 2 Mar 1977	Clause 5.3.14 to 5.3.14.6 have been added after clause 5.3.13.3	1977-03-31
52. IS : 6067—1971	Specification for water tender, type 'X' for fire brigade use	S.O. 120 dated 1977-01-13	No. 4 Apr 1977	[Page 12, table 1 Sl. No. (iii), col 4]—Substitute '7.0' for '7.3'.	1977-04-30
53. IS : 6234—1971	Specification for portable fire extinguishers, water type (constant air pressure)	S.O. 1549 dated 1973-06-03	No. 2 Apr 1977	(i) Clauses 4.1, 6.2.1, 7.2.2.2, 7.2.3, 7.2.6, 7.2.7, 7.2.9.1 and 7.2.11 have been amended. (ii) Clauses 4.3, 7.2.1.2, 7.2.4, 10.1 and 10.1.1 have been substituted by new ones. (iii) Foot-notes at pages 4, 8 and 10 with '§' ** and '†' marks respectively have been substituted by new ones. (iv) (Page 6, footnote)—Delete. (v) (Page 7, clauses 7.1.4 to 7.1.6)—Delete (vi) [Page 11, Table 1 Col 4, against Sl. No. (i) and (ii)]—Substitute 'Leaded Tin alloy' for 'Tin alloy' at both the places. (vii) A note has been added after clause 4.1. (viii) Clauses 4.5, 4.6 and 4.7 have been added after clause 4.4.3. (ix) Foot-notes have been added at page 5 after the existing foot-note. (x) Clause 14, Appendices A and B have been added after clause 13.1.1.	1977-04-30
54. IS : 6355—1971	Specification for keyway milling cutters	S.O. 231 dated 1974-01-26	No. 1 Jan 1977	(Page 1, clause 3)—Substitute the following for the existing designating example : 'Keyway Milling Cutter 125 x 16 H IS : 6355'	1977-01-31
55. IS : 6388—1971	Specification for slot milling cutters with morse taper shanks	S.O. 889 dated 1974-04-06	No. 1 Feb 1977	(Page 1, clause 2, Table, Types D, E and F, second entry under col. Dg)—Substitute '16' for size '26'.	1977-02-28
56. IS : 6848—1972	Specification for lead-acid batteries for train lighting and airconditioning services	S.O. 2015 dated 1975-06-28	No. 2 Apr 1977	(i) (Page 11, clause 5.3, second line)—Substitute '20 and 30° C' for '20 and 35° C'. (ii) (Page 12, clause 5.4.6, explanation of existing matter : 'k=0.0043 for tubular positive plates and pasted plate').	1977-04-30

1	2	3	4	5	6
57.	IS : 7073 (Pt I)--1973 Glossary of terms relating to air cargo plates and containers Pt I Air cargo pallets	S.O. 2939 dated 1975-09-6	No. 1 Apr 1977	(i) (First cover page, pages 1 to 7 designation)—Substitute 'IS : 7073—1973' for 'IS : 7073 (Pt I)—1973'. (ii) Title on first cover page, pages 1 and 3 has been substituted by a new one. (iii) (Page 3, clause 0.2)—Delete the existing clause and re-number clause '0.3' as '0.2'. (iv) Clause 1.1 has been substituted by a new one. (v) New terms have been added after clause 2.50 (Page 6, clause 4.2.2, line 1)—Substitute '1.4 mm' for '1.5mm'.	1977-04-30
58.	IS : 7142—1974 Specification for welded low carbon steel gas cylinder for low pressure liquefiable gases, not exceeding 5 litre water capacity	S.O. 776 dated 1976-02-21	No. 3 Mar 1977		1977-03-31
59.	IS : 7170~1974 Specification for slotted countersunk (flat) head tapping screws	S.O. 988 dated 1976-03-06	No. 1 Mar 1977	(a) Figure of table 1 has been substituted by a new one. (b) Col 'Screw Size No.' seventh row—delete the tolerance ' $\pm 1/2$ IT 17' (c) Note 2—Substitute the following for the existing note : 'Note 2—The standard lengths are between the bold stepped lines. The upperbold stepped lines indicate the minimum practical length of type AB and type B screws. The flat end tapping screws (Type B) with lengths above the broken stepped line are short screws and those below the broken stepped line are long screws according to IS : 5957—1970.'	1977-03-31
60.	IS : 7312—1974 Specification for welded low carbon steel dissolved acetylene gas cylinders	S.O. 2858 dated 1976-08-07	No. 2 Feb 1977	(i) Clause 3.1 has been substituted by a new one. (ii) (Page 4, foot-notes)—Add the following foot-note at the end of the foot-notes : Specification for hot-rolled steel sheets and strips for the manufacture of low pressure gas cylinders.	1977-02-28
61.	IS : 7349—1974 Code of practice for operation and maintenance of barrages and weires	S.O. 1596 dated 1976-05-08	No. 1 Feb 1977	(i) (Page 8, clause 3.2.2.1, tenth line)—Substitute 'design uplift' for 'design pond level'. (ii) (Page 7, clause 3.1)—Add the following at the end : 'while doing so, the embankment should be placed suitably upstream of the impervious floor for pressure relief and the divide wall or pier and adjacent floor provided with temporary strengthening to the extent required.'	1977-02-28
62.	IS : 7372—1974 Specification for lead-acid storage batteries for motor vehicles	S.O. 4697 dated 1975-11-01	No. 1 April 1977	(iii) (Page 10, clause 3.3.5.8)—Add the following clause after 3.3.5.8 : '3.3.5.9 Pond capacity—where the barrage is also providing balancing storage, soundings in the entire pond area may be made at suitable intervals for periodic review of storage capacity'. (i) (Page 12, clause 8.7.1, second line)—substitute '20 to 30°C' for '20 to 35°C'. (ii) (Page 13, clause 8.8, fourth line)—Substitute 'a total displacement' for 'and amplitude.'	1977-04-30

1	2	3	4	5	6
63. IS : 7388—1974—Specification for forceps, tissue, Allis' pattern	S.O. 1232 dated 1976-04-03	No. 1 Apr 1977	(i) Clause 6.4 has been substituted by a new one (ii) (Page 1, clause 1, line 1)—Add "125" after the words "Allis' pattern". (iii) Informal table under Fig 1 has been amended (iv) Clauses 3.4 and 3.4.1 have been added after clause 3.3	1977-04-30	
64. IS : 7418—1974 Criteria for design of spiral casing concrete and steel.	S.O. 2858 dated 1976-08-07	No. 1 April 1977	(i) Clauses 2.2.1 and 7.3 have been substituted by new ones (ii) Existing foot-notes at page 7 have been substituted by new ones (iii) (Page 4, clause 2.2.9, line 1)—Add the word 'net' between 'The' and 'head'.	1977-04-30	
65. IS : 7515—1974 Specification for cut-off device for manually operated sprayer	S.O. 1892 dated 1977-06-11	No. 1 Mar 1977	(Page 7, clause 6.3, last sentence)—Substitute the following for the existing matter : "The engaged length of the thread and the length of the nipple shall not be less than 6 and 10 mm respectively."	1977-03-31	
66. IS : 7610 (Pt III)—1975 Specification for machinery fabrics, wool Pt III sizing flannel	S.O. 1892 dated 1977-06-11	No. 1 Mar 1977	This amendment is being issued to transfer the requirements in respect of the nominal count of basic yarn and threads per decimetre to Table 1 since these are the particulars meant as a guide to the manufacturers.	1977-03-31	

[No. CMD/13 : 5]

का०आ० 618—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) विनियम, 1955 के विनियम 4 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था की ओर से अधिसूचित किया जाता है कि जिन मानक चिह्नों के डिजाइन उसके शास्त्रीय विवरण तथा तत्सम्बन्धी भारतीय मानक के शीर्षक सहित नीचे अनुसूची में दिया गया है वह भारतीय मानक संस्था द्वारा निर्धारित किया गया है।

भा० मा० संस्था (प्रमाणन चिह्न) अधिनियम, 1952 और उसके प्रधीन बने नियमों और विनियमों के निमित यह मानक चिह्न 1980-08-01 से लागू होगा।

### अनुसूची

क्रम संख्या	मानक चिह्न की डिजाइन उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी	तत्सम्बन्धी भारतीय मानक की परवर्त्य शीर्षक	मानक चिह्न के डिजाइन का शास्त्रीय विवरण	
1	2	3	4	5
1.	फेरोमालिझीनम IS : 1469—1970 फेरोमालिझीनम की विशिष्ट (हसरा पुनरीक्षण)	भारतीय मानक संस्था के मोरोग्राम जिसमें ISI शब्द होते हैं स्तम्भ (2) में दिखाई गई शैली और अनुपात में सीधार किया गया है और जैसा डिजाइन में दिखाया गया है उस मोरोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की संख्या तथा वर्ष दिया गया है।	भारतीय मानक संस्था के मोरोग्राम जिसमें ISI शब्द होते हैं स्तम्भ (2) में दिखाई गई शैली और अनुपात में सीधार किया गया है और जैसा डिजाइन में दिखाया गया है उस मोरोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की संख्या तथा वर्ष दिया गया है।	ISI 1469-70

[संख्या सी०ए०ही०/१३९]

S.O. 618.—In pursuance of sub-rule (1) of rule 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Rules, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the Standard Mark, design of which together with the verbal description of the design and the title of the relevant Indian Standard is given in the Schedule hereto annexed, has been specified.

This Standard Mark for the purpose of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Act, 1952 and the Rules and Regulations framed thereunder, shall come into force with effect from 1980-08-01 :

## SCHEDULE

Sl. No.	Design of the Standard Mark	Product/Class of Product	No. and Title of the Relevant Indian Standard	Verbal description of the Design of the Standard Mark
1	2	3	4	5
1.		Perromolybdenum	IS: 1469-1970 Specification for Ferromolybdenum (second revision)	The monogram of the Indian Standards Institution, consisting of letters 'ISI', drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col (2); the number of the Indian Standard, alongwith its years being superscribed on the top side of the monogram as indicated in the design.

[No. CMD/13:9]

का० ० ६१९.—भारत के राजपत्र भाग II खण्ड 3, उपखण्ड (ii) दिनांक 1978-04-22 में प्रकाशित अधिसूचना संख्या एस०ओ० 1122 द्वितीय 1978-04-04 के क्रम में भारतीय मानक संस्था द्वारा प्रधिसूचित किया जाता है कि बिट्यूमेन के ड्रमों की मानक चिह्न की प्रतिरिक्ष डिजाइन निर्धारित की गई है जिसका शास्त्रिक विवरण तत्सम्बन्धी भारतीय मानक के शीर्षक संहित नीचे अनुसूची में दिया गया है।

भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) प्रधिनियम, 1952 और इसके अधीन बने नियमों और विनियमों के नियमों के निमित मानक चिह्न यह डिजाइन 1978-04-16 से लागू होगी:

## मानक संस्था

1	2	3	4	5
1.		बिट्यूमेन के ड्रम	IS : 3575—1977 बिट्यूमेन के ड्रमों की प्रधिसूचित (पहला पुनर्गीषण)	भारतीय मानक संस्था का मोलोशाम जिसमें ISI चिह्न होने ही सत्यम् (2) में विद्याई गई तीली और अनुपात में तैयार किया गया है और डिजाइन में दियाया गया है मोलोशाम के ऊपर की ओर शब्द "ड्रम ऑफली" तथा तीली की ओर शब्द, पदनाम और भारतीय मानक की संख्या दी गई है।

[संख्या सी०एम०ठ०/13 : ९]

S.O. 619.—In continuation of the notification published under S.O. 1122 dated 1978-04-04 in the Gazette of India, Part-II, Section 3, sub-section (ii) dated 1978-04-22, the Indian Standards Institution, hereby, notifies the additional design of the Standard Mark for bitumen drums which, together with its verbal description and the title of the Indian Standard, are given in the following schedule.

This design of the standard mark, for the purposes of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Act, 1952 and the Rules and Regulations framed thereunder, shall come into force with effect from 1978-04-16.

## SCHEDULE

Sl. No.	Design of the Standard Mark	Product/Class of Product	No. and Title of the Relevant Indian Standard	Verbal description of the Design of the Standard Mark
1	2	3	4	5
1.		Bitumen drums	IS : 3575-1977 Specification for bitumen drums (first revision)	The monogram of the Indian Standards Institution, consisting of letters ISI drawn in the exact style and relative proportions as indicated in col. (2); the words 'DRUM ONLY' being superscribed on the top side, the grade designation being inscribed and the number of the Indian Standard being subscribed under the bottom side of the monogram as indicated in the design.

[No. CMD/13:9]

का०आ० 620.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) विनियम, 1955 के विनियम 4 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था की ओर से अधिसूचित किया जाता है कि जिन मानक चिह्नों के डिजाइन उनके शास्त्रीय विवरण तथा तत्सम्बन्धी भारतीय मानकों के शीर्षकों सहित नीचे सूची में दिए गए हैं वे भारतीय मानक संस्था द्वारा निर्धारित किए गए हैं।

भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) अधिनियम, 1952 और उसके अधीन बने नियमों विनियमों के निम्न ये मानक चिह्न उनके सापेक्ष गई तिथियों से लागू होंगे:

### अनुसूची

क्रम सं०	मानक चिह्न के डिजाइन	उत्पाद/उत्पाद वर्षी श्रेणी	तत्सम्बन्धी भारतीय मानक की पदस्थत्य और शीर्षक	मानक चिह्न के डिजाइन का शास्त्रीय विवरण	लागू होने की तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	IS:4224-72	कार्यालयों में प्रयुक्त स्टैपल, पिन और किलप के लिए इस्पात के तार : (क) चमकदार (ख) जस्तीकृत	IS : 4224— स्टैपल, पिन और किलप के लिए इस्पात के तार की विशिष्ट लिंग इस्पात के तार की विशिष्ट लिंग (पहला तुलीकारण) फिलिं	भारतीय मानक संस्था का मोनोग्राम जिसमें “ISI” शब्द होते हैं स्तम्भ (2) में लिखाई गई अनुपात और तीली में तैयार किया गया है जैसा डिजाइन में दिखाया गया है मोनोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की संज्ञा और वर्ण अंकित किया गया है।	1980-07-16
2.	IS:4536	स्टेनलेस इस्पात के खाना बनाने के बर्तन, मिली जूली ताली वाले, विज्ञायी द्वारा तांबा छड़े ग्रेड “भारी” और “हल्के”	IS : 4536 (भाग 1) — 1968 स्टेनलेस इस्पात के खाना बनाने के बर्तन के मिली जूली ताली वाले विज्ञायी द्वारा तांबा छड़े ग्रेड “भारी” और “हल्के”	भारतीय मानक संस्था का मोनोग्राम जिसमें “ISI” शब्द होते हैं स्तम्भ (2) में लिखाई गई अनुपात और तीली में तैयार किया गया है जैसा डिजाइन में दिखाया गया है मोनोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की संज्ञा और वर्ण अंकित किया गया है।	1980-03-01
3.	IS:8497	पैराक्वाट डाइ-फ्लोरोराइड लक्षण का जलीय घोल	IS : 8497— 1977 पैराक्वाट डाइ-फ्लोरोराइड लक्षण के जलीय घोल की विशिष्ट	भारतीय मानक संस्था का मोनोग्राम जिसमें “ISI” शब्द होते हैं स्तम्भ (2) में लिखाई गई अनुपात और तीली में तैयार किया गया है जैसा डिजाइन में दिखाया गया है मोनोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की संज्ञा और वर्ण अंकित किया गया है।	1980-09-16

[सं० सी०एम०टी/13 : 9]

S.O. 620.—In pursuance of sub-rule (1) of rule 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Rules, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the Standard Mark(s), design(s) of which together with the verbal description of the design(s) and the title(s) of the relevant Indian Standard(s) are given in the Schedule hereto annexed, have been specified.

These standard Mark(s) for the purpose of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Act, 1952 and the Rules and Regulations framed thereunder, shall come into force with effect from the dates shown against each :

### SCHEDULE

Sl. No.	Design of the standard Mark	Product/Class of product	No. and Title of the Relevant Indian Standard	Verbal description of the Design of the Standard Mark	Date of effect
1	2	3	4	5	6
1.	IS:4224-72	Steel wire for office staples, pins and clips. For the finishes: (a) Bright drawn and (b) Galvanised	IS:4224-1972 Specification for steel wire for office staples, pins and clips (first revision)	The monogram of the Indian Standards Institution, consisting of letters 'ISI', drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col. (2); the number of the Indian Standard, alongwith its year, being superscribed on the top side of the monogram as indicated in the design.	1980-07-16

1	2	3	4	5	6
2.		Composite bottom stainless steel cooking utensils, copper electro-deposited, grades 'Heavy' and 'Light'	IS:4536 (Part I)—1968 specification for composite bottom stainless steel cooking utensils: Part I Copper electro-deposited	The monogram of the Indian Standards Institution, consisting of letters 'ISI', drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col. (2); the number of the Indian Standards being superscribed on the top side of the monogram as indicated in the design.	1980-03-01
3.		Paraguat dichloride salt aqueous solution	IS:8497-1977 Specification for paraguat dichloride salt aqueous solution	The monogram of the Indian Standards Institution, consisting of letters 'ISP'; drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col. (2); the number of the Indian Standard, along with its year, being superscribed on the top side of the monogram as indicated in the design.	1980-09-16

[No. CMD/13 : 9]

कांग्रा० 621.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) के विनियम 1955 के विनियम 7 के उपविनियम (3) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा प्रधियूचित किया जाता है कि विभिन्न उत्पादों की प्रति इकाई मुहर लगाने की फीस नीचे प्रनुसूची में दिए गए और के अनुसार निर्धारित की गई है और यह फीस उनके सामने विकाई गई तिथियों से लागू होगी।

## प्रनुसूची

क्रम सं०	उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी	प्रति इकाई मुहर लगाने का शुल्क	लागू होने की तिथि
1	इकाई	इकाई	

1	2	3	4	5	6
1. कार्यालयों में प्रयुक्त स्टैपल, पिन और विलप के लिए इस्पात के तार ; (क) लम्पकदार विलप (ख) जस्तीकूस फिनिस	IS : 4224—1972 कार्यालयों में प्रयुक्त स्टैपल, पिन और विलप के लिए इस्पात के तार की विधिष्ठ (पहला पुनरीक्षण)	एक मीट्री टन	₹ 2.00		1980-07-16
2. स्टेनलेस इस्पात के मिली-जुली तली याले खाना बनाने के बर्तन विजली द्वारा तांबा चम्के ग्रेड "भा री" और "ह्लैक"	IS : 4536 (भाग 1) — 1968 स्टेनलेस इस्पात के मिली तली याले खाना बनाने के बर्तन की विधिष्ठ भाग 1 विजली द्वारा तांबा चम्के	एक बर्तन	(1) पहली 10000 इकाइयों के लिए 20 पैसे प्रति इकाई (2) 11001वीं से 20000 तक की इकाइयों के लिए 10 पैसे प्रति इकाई ; और (3) 20001वीं इकाई और इससे ऊपर की इकाइयों के लिए 5 पैसे प्रति इकाई ।	(1) पहली 10000 इकाइयों के लिए 20 पैसे प्रति इकाई (2) 11001वीं से 20000 तक की इकाइयों के लिए 10 पैसे प्रति इकाई ; और (3) 20001वीं इकाई और इससे ऊपर की इकाइयों के लिए 5 पैसे प्रति इकाई ।	1980-03-01
3. पीराक्वाइट डाइफ्लोराइड लवण का जलीय घोल	IS: 8497—1977 पीराक्वाइट डाइफ्लोराइड लवण के जलीय घोल की विधिष्ठ	100 लीटर	(1) पहली 600 इकाइयों के लिए ₹ 10.00 प्रति इकाई ; (2) 501वीं से 1500 तक की इकाइयों के लिए ₹ 5.00 प्रति इकाई ; और (3) 1501वीं इकाई और इससे ऊपर की इकाइयों के लिए ₹ 1.00 प्रति इकाई ।	(1) पहली 600 इकाइयों के लिए ₹ 10.00 प्रति इकाई ; (2) 501वीं से 1500 तक की इकाइयों के लिए ₹ 5.00 प्रति इकाई ; और (3) 1501वीं इकाई और इससे ऊपर की इकाइयों के लिए ₹ 1.00 प्रति इकाई ।	1980-09-16

S. O. 621.—In pursuance of sub-regulation (3) of regulation 7 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955 the Indian Standards Institution, hereby notifies that the marking fee(s) per unit for various products details of which are given in the Schedule hereto annexed, have been determined and the fee(s) shall come into force with effect from the dates shown against each :

#### SCHEDULE

Sl. No.	Product/Class of product	No. and Title of Relevant Indian Standard	Unit	Marking fee per Unit	Date of effect
1	2	3	4	5	6
1.	Steel wire for office staples, pins and clips. For the finishes (a) Bright drawn and (b) Galvanized	IS: 4224—1972 specification for steel wire for office staples, pins and clips (first revision)	One Tonne	Rs. 2.00	1980-07-16
2.	Composite bottom stainless steel cooking utensils, copper electro-deposited grads 'heavy' and 'Light'	IS: 4536 (Part I) —1968 specification for composite bottom stainless steel cooking utensils: Part I Copper electrodeposited	One Vessel	(i) 20 Paise per unit for the first 10000 units ; (ii) 10 Paise per unit for the 10001st to 20000 units and (iii) 5 Paise per unit for the 20001st unit and above.	1980-03-01
3.	Paraquat dichloride salt aqueous solution	IS: 8497-1977 specification for paraquat dichloride salt aqueous solution	100 Litres	(i) Rs. 10.00 per unit for the first 500 units ; (ii) Rs. 5.00 per unit for the 501st to 1500 units and (iii) Re 1.00 per unit for the 1501st unit and above.	1980-09-16

[No. CMD/13:10]

S. O. 622.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन विभाग) विनियम 1955 के विनियम 7 के उपविनियम (3) के प्रत्युत्तर भारतीय मानक संस्था द्वारा प्रधिसूचित किया जाता है कि फेरोमालिब्डीनम की प्रति इकाई मुहर लगाने की कीमत नीचे दर्शाई गई भौतिक के प्रत्युत्तर निर्धारित की गई है और यह फैस 1980-08-01 से लागू होगी :

#### प्रति इकाई

क्रम संख्या	उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी।	तत्सम्बन्धी भारतीय मानक की पद संस्था और प्रीर्णक	इकाई	प्रति इकाई मुहर लगाने की कीमत	6
1	2	3	4	5	6
1.	फेरोमालिब्डीनम	IS: 1469—1970 फेरोमालिब्डीनम की विधिविदि (दूसरा पुनरीक्षण)	एक किलोग्राम	2 पैसे	

[सं. सी.एम.डी/13 : 10]

S. O. 622.—In pursuance of sub-regulation (3) of regulation 7 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the marking fee (per unit for ferromolybdenum details of which are given in the Schedule hereto annexed, has been determined and the fee shall come into force with effect from 1980-08-01;

#### SCHEDULE

Sl. No.	Product/Class of Product	No. and Title of Relevant Indian Standard	Unit	Marking Fee per Unit
1	2	3	4	5
1.	Ferromolybdenum	IS:1469-1970 Specification for ferromolybdenum (second revision)	One Kg.	2 Paise.

[No. CMD/13 : 10]

का०आ० 623.—भारत के राजपत्र भाग II, खण्ड 3, उपलब्ध (ii) दिनांक 1978-04-29 में प्रकाशित अनुसूचीन मानरिक पूर्ति एवं सहकारिता मंत्रालय (भारतीय मानक संस्था) अविसूचिता संख्या 1224 दिनांक 1978-04-13 का अधिकारण करते हुए भारतीय मानक संस्था द्वारा अविसूचित किया जाता है कि प्रगति प्रतिरोधी ब्रैटिस कपड़े की प्रति इकाई मुहर लगाने की फीस का पुनरीक्षण किया गया है। यह मुहर लगाने की पुनरीक्षण फीस जिसके ब्यौरे नीचे अनुसूची में दिए गए हैं, 1980-09-01 से लागू होगी।

## अनुसूची

क्रम संख्या	उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी	तरमावन्दी भारतीय मानक की पदसंख्या और प्राप्तिका	इकाई	प्रति इकाई मुहर लगाने की फीस
1	2	3	4	5
1	प्रगति प्रतिरोधी ब्रैटिस कपड़ा	IS : 4355—1977 अग्नि प्रतिरोधी ब्रैटिस कपड़े का विशिष्ट (पहला पुनरीक्षण)	एक वर्ग मीटर	(1) पहली 100000 इकाइयों के लिए एक पैसा प्रति इकाई और (2) 100001वीं और इससे ऊपर की इकाइयों के लिए दो पैसा प्रति इकाई।

[संख्या सी०एम०डी०/13:10]

ए० पी० धनर्जी, अपर महानिवेशक

S.O. 623.—In supersession of the then Ministry of Civil Supplies and Co-operation (Indian Standards Institution) notification number S.O. 1224 dated 1978-04-13, published in the Gazette of India, Part-II, Section-3, Sub-section (ii) dated 1978-04-29, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the marking fee per unit for fire resistant brattice cloth, has been revised. The revised rate of marking fee, details of which are given in the following Schedule, shall come into force with effect from 1980-09-01 :

## SCHEDULE

Sl. Product/Class of Product No.	No. & Title of Relevant Indian Standard.	Unit	Marking fee per Unit	
1	2	3	4	5
1. Fire resistant brattice cloth	IS : 4355-1977 Specification for fire resistant brattice cloth (first revision)	One square meter	(i) One Paisa per unit for the first 100000 units and (ii) 1/2 Paisa per unit for the 100001st unit and above.	[No. CMD/13:10] A.P. BANERJI, Addl. Dir. General

## विदेश मंत्रालय

नई दिल्ली, 4 फरवरी, 1981

का०आ० 624.—राजनयिक तथा कोंसली अधिकारी (शपथ एवम् शुल्क) अधिनियम 1948 (1948 का 41वां) के खण्ड 2 की धारा (क) के अनुसरण में केन्द्र सरकार, इसके द्वारा, जर्मन संघीय गणराज्य में हमवर्ग स्थित भारत के कोंसलावास में सहायक श्री एस०सी० मैत्र के 1-1-81 से भारत के लिये गृह अवकाश पर जाने पर उनकी अनुपस्थिति की अवधि में श्री टीका राम, निजी सहायक को कोंसली एजेंट का कार्य करने के लिये प्राधिकृत करती है।

[फाइल सं० री० 4330/1/81]  
जे० हजारी, अवर सचिव

## MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS

New Delhi, the 4th February, 1981

S.O. 624.—In pursuance of the clause (a) of Section 2 of the Diplomatic and Consular Officers (Oaths and Fees) Act, 1948 (41 of 1948) the Central Government hereby authorises Shri Tika Ram, Personal Assistant in the Consulate of India Hamburg, Federal Republic of Germany, to perform the duties of a Consular Agent in the absence of Shri S. C. Maitra, Assistant proceeding on home leave to India w.e.f. 1-1-81.

[File No. T.4330/1/81]

J. HAZARI, Under Secy.

## पेट्रोलियम, रसायन और उर्वरक मंत्रालय

## (पेट्रोलियम विभाग)

नई दिल्ली, 30 जनवरी, 1981

का०आ० 625.—पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) के खण्ड 2 की धारा (क) के अनुसार केन्द्रीय सरकार नीचे दी गई अनुसूची के कालम 1 में वर्णित प्राधिकारी को उपरोक्त नियम के अन्तर्गत उपरोक्त अनुसूची के कालम 2 में दर्ज की गई प्रविष्टि से वर्णित प्रति के लिये सक्षम प्राधिकारी का कार्य करने के लिये प्राधिकृत करती है।

## अनुसूची

प्राधिकारी तथा उसका पता	क्षेत्र
1	2
उपायुक्त डिप्लोमाट असम	जिला डिप्लोमाट, असम

[सं० 12017/2/80-प्र००]

श्रीमति किरण घड्डा, अवर सचिव

## MINISTRY OF PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILIZERS

## (Department of Petroleum)

New Delhi, the 30th January, 1981

**S.O. 625.**—In pursuance of clause (a) of Section 2 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of Right of User in Land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government hereby authorise the authority mentioned in column 1 of the Schedule below to perform the functions of the competent authority under the said Act within the areas mentioned in the corresponding entry in column 2 of the said Schedule.

## SCHEDULE

Authority and Address	Areas
1	2
Deputy Commissioner Dibrugarh, Assam	District of Dibrugarh Assam
[No. 12017/2/80-Plod.] Mrs. KIRAN CHADHA, Under Secy.	

## उर्जा मंत्रालय

(कोयला विभाग)

गुरुवर

नई दिल्ली, 7 फरवरी, 1981

**का०आ० 626.**—भारत के राजपत्र, भाग 2, खण्ड 3, उपखण्ड (ii) तारीख 3 मई, 1980 के पृष्ठ 1307 से 1314 पर प्रकाशित भारत सरकार के इस्पात, खान और कोयला मंत्रालय (कोयला विभाग) की अधिसूचना में। का० आ० 1251 के पृष्ठ 1308 पर, टिप्पण 1 में, “कलकटर, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)” शब्दों के स्थान पर “कलकटर सीधी (मध्य प्रदेश)” पढ़ें।

[सं० 19(44)/78-सी०एल]

स्वर्ण सिंह, अवर मंचिव

## MINISTRY OF ENERGY

## (Department of Coal)

## CORRIGENDUM

New Delhi, the 7th February, 1981

**S.O. 626.**—In the notification of the Government of India in the Ministry of Steel, Mines and Coal (Department of Coal) No. S.O. 1251, dated the 18th April, 1980, published at pages from 1314 to 1319, in the Gazette of India, Part II, Section 3, sub-section (ii), dated the 31st May, 1980, at page 1314, in Note-I for the words “the Collector, Mirzapur (Uttar Pradesh)” read “the Collector, Sidhi, (Madhya Pradesh)”.

[No. 19(44)/78-CL]

SWARAN SINGH, Under Secy.

## स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

## (स्वास्थ्य विभाग)

नई दिल्ली, 7 फरवरी, 1981

**का०आ० 627.**—यह: केन्द्रीय सरकार ने भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 (1956 का 102) की धारा 3 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अनुसरण में और कर्नाटक सरकार से परामर्श लेकर डा० एम० एम० ताहिर, प्रिन्सिपल, मैडिकल कालेज, हुबली को डा० वाई० पी० रुद्रप्पा के स्थान पर भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् का सदस्य मनोनीत किया है,

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (1) के उपबंधों का पालन करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्धारा भारत सरकार के भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्रालय की 9 जनवरी, 1960 की अधिसूचना संख्या 5-13-59-एम-1 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में “उपधारा 3 के खण्ड (क) के अधीन मनोनीत” शीर्ष के अन्तर्गत क्रम संख्या 12 और उससे संबंधित प्रविष्टि के स्थान पर निम्नलिखित क्रम संख्या और प्रविष्टि प्रतिस्थापित की जाएगी, अर्थात् :—

“12. डा० एम० एम० ताहिर,  
प्रिन्सिपल,  
कर्नाटक मैडिकल कालेज,  
हुबली।”

[संख्या वी० 11013/19/80-ए०ई० (पी०)]

## MINISTRY OF HEALTH &amp; FAMILY WELFARE

## (Department of Health)

New Delhi, the 7th February, 1981

**S.O. 627.**—Whereas the Central Government in pursuance of clause (a) of sub-section (1) of section 3, of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956) and in consultation with the Government of Karnataka have nominated Dr. M. M. Tahir, Principal Medical College, Hubli to be a member of the Medical Council of India vice Dr. Y. P. Rudrappa.

Now, therefore, in pursuance of the provisions of sub-section (1) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the late Ministry of Health No. 5-13/59-M I, dated the 9th January, 1960, namely:—

In the said notification, under the heading “Nominated under clause (a) of sub-section (1) of section 3”, for serial number 12 and the entry relating thereto, the following serial number and entry shall be substituted, namely:—

“12. Dr. M. M. Tahir,  
Principal Karnataka Medical College,  
HUBLI.”

[No. V. 11013/19/80-M.E.(Policy)]

का०आ० 628.—यतः भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 (1956 का 102) की धारा 3 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के उपबन्धों के अनुसरण में पंजाब विश्वविद्यालय ने डा० पी० एन० चुटानी को 21 दिसम्बर, 1980 से भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् का सदस्य निर्वाचित किया है,

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (1) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्रालय की 9 जनवरी, 1960 की अधिसूचना संख्या 5-13/59-एम०-1 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :

उक्त अधिसूचना में “धारा 3 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के अधीन निर्वाचित” शीर्ष के अन्तर्गत क्रम संख्या 9 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित क्रम संख्या और प्रविष्टियां प्रतिस्थापित की जाएंगी, अर्थात् :

“9. 21-12-1980 डा० पी० एन० पंजाब 20-12-1985”  
चुटानी, विश्वविद्यालय  
हाउस नं० 22,  
सेक्टर 4,  
चंडीगढ़

[संख्या वी० 11013/22/80-एम०ई० (पी०)]

S.O. 628.—Whereas in pursuance of the provision of clause (b) of sub-section (1) of section 3 of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956) Dr. P.N. Chuttani has been elected by the Punjab University to be a member of the Medical Council of India with effect from the 21st December, 1980.

Now, therefore, in pursuance of sub-section (1) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the late Ministry of Health No. 5-3/59-MI, dated the 9th January, 1960, namely:

In the said notification, under the heading “Elected under clause (b) of sub-section (1) of section 3” for serial number 9 and entries relating thereto, the following shall be substituted, namely:

“9. 21-12-1980 Dr. P.N. Chuttani, Punjab 20-12-85”  
H.No. 22, Sector 4, University  
CHANDIGARH.

[No.V.11013/22/80-M.E.(Policy)]

का०आ० 629.—यतः भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 (1956 का 102) की धारा 3 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के उपबन्धों के अनुसरण में सौराष्ट्र विश्वविद्यालय ने डा० के० एम० सचदेव को 23 नवम्बर, 1980 से भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् का सदस्य निर्वाचित किया है,

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (1) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा भूतपूर्व स्वास्थ्य

मंत्रालय की 9 जनवरी, 1960 की अधिसूचना संख्या 5-13/59-एम०-1 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :

उक्त अधिसूचना में “धारा 3 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के अधीन निर्वाचित” शीर्ष के अन्तर्गत क्रम संख्या 37 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर निम्नलिखित क्रम संख्या और प्रविष्टियां प्रतिस्थापित की जाएंगी, अर्थात् :

“37. 23-11-80 डा०के० एस० सौराष्ट्र 22-11-85”  
सचदेव, विश्वविद्यालय  
एम०पी०शाह  
मेडिकल  
कालेज,  
जामनगर

[संख्या वी० 11013/24/80-एम०ई० (पी०)]

S.O. 629.—Whereas in pursuance of the provision of clause (b) of sub-section (1) of Section 3 of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956) Dr. K. S. Sachdev has been elected by the Saurashtra University to be a member of the Medical Council of India with effect from the 23rd November, 1980.

Now, therefore, in pursuance of sub-section (1) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the late Ministry of Health No. 5-13/59-MI, dated the 9th January, 1960 namely:

In the said notification, under the heading “Elected under clause (b) of sub-section (1) of section 3” for serial number 37 and the entries relating thereto the following serial number and entries shall be substituted, namely:

“37. 23.11.80 Dr. K.S. Sachdev, Saurashtra 22-11-1985”  
M.P. Shah University  
Medical College,  
JAMNAGAR.

[No. V. 11013/24/80-M.E.(Policy)]

का०आ० 630.—यतः भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम, 1956 (1956 का 102) की धारा 3 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के उपबन्धों के अनुसरण में राजस्थान विश्वविद्यालय ने डा० रामेश्वर शर्मा को 21 सितम्बर, 1980 से भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् का सदस्य निर्वाचित किया है,

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (1) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्वारा भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्रालय की 9 जनवरी, 1960 की अधिसूचना संख्या 5-13/59-एम०-1 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :

उक्त अधिसूचना में “धारा 3 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के अधीन निर्वाचित” शीर्ष के अन्तर्गत क्रम संख्या 19 और उससे संबंधित प्रविष्टियों के स्थान पर

निम्नलिखित त्रै संख्या और प्रविष्टियां प्रतिस्थापित की जाएंगी, प्रथमतः—

“19. 21-9-80 डा० रामेश्वर राजस्थान 20-9-85”

शर्मा, विश्वविद्यालय  
प्रधानाचार्य  
एवं अध्यक्ष,  
सामुदायिक  
चिकित्सा  
विभाग, एस०  
एम० एस०  
मेडिकल  
कालेज, जयपुर

[संख्या वी० 11013/25/80-एम०ई० (पी०)]

रवि दत्त, अवर सचिव

**S.O. 630.**—Whereas in pursuance of the provision of clause (b) of sub-section (1) of section 3 of the Indian Medical Council Act, 1956 (102 of 1956) Dr. Rameshwar Sharma has been elected by the Rajasthan University to be a member of the Medical Council of India with effect from the 21st September, 1980.

Now, therefore, in pursuance of sub-section (1) of section 3 of the said Act, the Central Government hereby makes the following further amendment in the notification of the late Ministry of Health No. 5-13/59-MI, dated the 9th January, 1960, namely:—

In the said notification, under the heading “elected under clause (b) of sub-section (1) of section 3” for serial number 19 and entries relating thereto, the following serial number and entries shall be substituted, namely:—

“19. 21-9-1980 Dr. Rameshwar Rajasthan 20-9-1985”

Sharma,  
University  
Principal & Head  
of the Depart-  
ment of Commu-  
nity Medicine,  
S.M.S. Medical  
College,  
JAIPUR.

[No. V. 11013/25/80-M.E.(Policy)]

RAVI DATT, Under Secy.

कृषि मंत्रालय  
(खाद्य विभाग)

नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1981

**का०आ० 631.**—केन्द्रीय सरकार राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 के नियम 10 के उप नियम (4) के अनुसरण में, कृषि मंत्रालय (खाद्य विभाग) के निम्नलिखित कार्यालय, जिसके कर्मचारी-वृन्द ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, को अधिसूचित करती है:—

1. भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, बाराणसी।

[सं० ई० 11017/3/79-हिन्दी]

रा० कि० सिंह, उप सचिव

## MINISTRY OF AGRICULTURE

(Department of Food)

New Delhi, the 6th February, 1981

**S.O. 631.**—In pursuance of sub-rule 4 of rule 10 of the Official Language (Use for official purposes of the Union) Rules 1976, the Central Government hereby notifies the following office of the Ministry of Agriculture (Department of Food), the staff whereof have acquired the working knowledge of Hindi:—

1. Food Corporation of India, District Office, Varanasi.

[No. E-11017/3/79-Hindi]

R.K. SINGH, Dy. Secy.

## सिंचाई मंत्रालय

नई दिल्ली, 4 फरवरी, 1981

**का०आ० 632.**—जबकि केन्द्रीय सरकार की यह राय है कि श्री उपानन्द प्रमाणिक, अवर सचिव, मेरीन संगठन, फरक्का बराज परियोजना, पो० श्रा० फरक्का बराज, जिला मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल) के संबंध में विभागीय जांच करने के प्रयोजन से यह जरूरी है कि बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड, पटना के सतर्कता अधिकारी को साक्षी के रूप में बुलाया जाए और उसमें कागजात भी मंगवाए जाएं।

अब इसलिए विभागीय जांच (साक्षियों की उपस्थिति तथा दस्तावेजों के प्रस्तुतीकरण का प्रवर्तन) अधिनियम डिपार्टमेंटल इंक्वारीज (एनकोर्सेमेंट आफ अटेंडेंस आफ विटनेसेंज एड प्रोडक्शन आफ डाक्यूमेंट्स) ऐक्ट, 1972 (1972 का 18) की धारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा श्री जी०आ०८० मेट्टी, कार्यकारी इंजीनियर, फरक्का बराज परियोजना को उपर्युक्त श्री उपानन्द प्रमाणिक के खिलाफ लगाए गए आरोपों के बारे में, उक्त अधिनियम की धारा 5 में निर्दिष्ट शक्तियों का प्रयोग करने के लिए जांच प्राधिकारी प्राधिकृत करती है।

[सं० 3/81/फा० सं० 2/2/81-फ०ब०प०]

एन० एल० शंकरन, संयुक्त सचिव

## MINISTRY OF IRRIGATION

New Delhi, the 4th February, 1981

**S.O. 632.**—Whereas the Central Government is of opinion that for the purpose of departmental inquiry relating to Shri Upananda Pramanik, Lower Division Clerk, Marine Organisation, Farakka Barrage Project, P.O. Farakka Barrage, Distt. Murshidabad (West Bengal), it is necessary to summon as witness and also to call for documents from the Vigilance Officer, Bihar School Examination Board, Patna.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 4 of the Departmental Inquiries (Enforcement of Attendance of Witnesses and Production of Document) Act, 1972 (18 of 1972), the Central Government hereby authorises Shri G. R. Setty, Executive Engineer, Farakka Barrage Project as the inquiring authority to exercise the power specified in Section 5 of the said Act in relation to charges framed against the said Shri Upananda Pramanik.

[No. 3/81/F. No. 2/2/81-FBP]

N. L. SHANKARAN, Jt. Secy.

नामसूचना और परिवहन मंत्रालय

## (परिवहन पक्ष)

नई दिल्ली, 5 फरवरी, 1981

का० आ० 633—दिल्ली परिवहन निगम (सदस्य) निवम 1973 के नियम 3 के साथ पठित संक परिवहन निगम अधिनियम 1950 (1950 का 64) की धारा 5 की उल्लंघन (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय वित्त विभाग द्वारा अधिसूचना द्वारा 5 फरवरी, 1981 में श्री के० सी० भट्टी, निदेशक (वित्त) नामवहन और परिवहन मंत्रालय और श्री वी० एम० एलावाडी, उपाध्यक्ष, दिल्ली विकास प्राधिकरण को उक्त निगम के सदस्य नियन्त्रक करनी है और भारत सरकार, नामवहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की दिनांक 1 मई, 1979 की अधिसूचना संख्या का० आ० 238 (ई) में निम्नलिखित मानाधन करनी है, अर्थात्—

उक्त अधिसूचना में—

(i) पैरा 1 में, सद संख्या (1)में सामने की प्रविधि के स्थान पर “श्री के० सी० भट्टी, निदेशक (वित्त), नामवहन और परिवहन मंत्रालय” शब्द रखे जाएं।

(ii) पैरा 1 में सद संख्या (1) के सामने की प्रविधि के स्थान पर “श्री वी० एम० एलावाडी, उपाध्यक्ष, दिल्ली विकास प्राधिकरण” शब्द रखे जाएं।

[का० स० टी० जी० शी० (91)/79]

—श्री आर० चवाण, उप मंचित

## MINISTRY OF SHIPPING &amp; TRANSPORT

(Transport Wing)

New Delhi, the 5th February, 1981

S.O. 633.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 5 of the Road Transport Corporations Act, 1950 (64 of 1950), read with rule 3 of the Delhi Transport Corporation (Member) Rules, 1973, the Central Government hereby appoints Shri K. C. Bhatti, Director (Finance), Ministry of Shipping and Transport and Shri V. S. Aluwadi Vice-Chairman, Delhi Development Authority, as a member of the Delhi Transport Corporation with effect from 5th February, 1981 and makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. S.O. 238 (F), dated the 1st May, 1979, namely—

In the said notification—

(i) In paragraph 1, for the entry against item number (ii), the words “Shri K. C. Bhatti, Director (Finance), Ministry of Shipping and Transport”, shall be substituted.

(ii) In paragraph 1, for the entry against item number (iv), the words “Shri V. S. Aluwadi, Vice-Chairman, Delhi Development Authority” shall be substituted.

[File No. TGD(91)/79]

B. R. CHAVAN, Dy. Secy

## संचार मंत्रालय

(डाक-तार बोर्ड)

नई दिल्ली, 5 फरवरी, 1981

का० आ० 634.—गण्डपाति, केन्द्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियन्त्रण और अपील) नियम, 1965 के नियम 9 के उप-नियम (2), नियम 12 के उप-नियम (2) के खण्ड (ख) और नियम 34 के साथ पठित नियम 24 के उप-नियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के सचार मंत्रालय (डाक तार) की अधिसूचना सं० 620, नारीख 28 फरवरी, 1957 का निम्नलिखित मणोधन करते हैं, अर्थात्—

उक्त अधिसूचना की अनुसूची में

(i) धारा 2में, माध्यारण केन्द्रीय सेवा समूह (ग) में, डाकघर शीर्षक के अधीन—

(क) समयमान डाकपाल, डाकघर नगर निरीक्षक, श्रोतरमियर, छटाई प्रवाचक पोस्टमैन, श्रोतर-सियर पोस्टमैन हैड पोस्टमैन, विभागीय शाखा डाक पाल हिस्पीच गाइडर “प्रविष्टियों के सामने स्तंभ 3 में विद्यमान” (श्रोतरमियर, पोस्टमैन, छटाई प्रवाचक पोस्टमैन, हैड पोस्टमैन, विभागीय शाखा डाकपाल की वाबत) डाकघर निरीक्षक शब्दों के स्थान पर निम्नलिखित शब्द रखे जाएंगे अर्थात्—

“श्रोतरमियर, छटाई प्रवाचक, पोस्टमैन, हैडपोस्टमैन, विभागीय शाखा डाकपाल की वाबत डाकघर निरीक्षक सहायक डाकघर अधीक्षक” शब्द रखे जाएंगे।

(ख) “सभी अन्य पद” प्रविधि के सामने, स्तंभ 2 और 3 में “डाकघर निरीक्षक (अन्य सभी कार्यालयों में)” शब्दों के स्थान पर निम्नलिखित शब्द रखे जाएंगे अर्थात्—

“डाकघर निरीक्षक/सहायक डाकघर अधीक्षक (अन्य सभी कार्यालयों में)”

(ii) धारा 3 माध्यारण केन्द्रीय सेवा समूह

(घ) में, “डाक और रेल मेल मेवा खण्ड और उप खण्ड कार्यालय” शीर्षक के अधीन सभी पद प्रविधि के सामने स्तंभ 2 और 3 में, “डाकघर निरीक्षक” शब्दों के स्थान पर निम्नलिखित शब्द रखे जाएंगे अर्थात्—

“डाकघर निरीक्षक सहायक डाकघर अधीक्षक”।

(iii) धारा 3 माध्यारण केन्द्रीय सेवा, समूह

(घ) में “डाकघर (शीर्षक के अधीन स्तंभ 2 और 3 में डाकघर निरीक्षक)

ग्रन्थ सभी डाकघरों में उपलब्ध करना तथा पर निम्नलिखित गद्द रखे जाएँगे, अर्थात् :—  
“डाकघर नियंत्रक/महायक डाकघर अधीक्षक (ग्रन्थ सभी डाकघरों से)”—।

[मं. 153/1/80-अनु. II]

MINISTRY OF COMMUNICATIONS  
(P&T Board)

New Delhi, the 5th February, 1981

S.O. 634.—In exercise of the powers conferred by sub-rule (2) of rule 9, clause (b) sub-rule (2) of rule 12, and sub-rule (1) of rule 24 read with rule 34, of the Central Civil Services (Classification, Control and Appeal) Rules, 1965, the President hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Communications (Posts and Telegraphs) No. 620, dated the 28th February, 1957, namely :

In the Schedule to the said Notification—

- (i) In Part II—General Central Service, Group 'C' under the heading "Post Offices"—
  - (a) against the entries "Post master in Time Scale; Town Inspector of Post Offices; Ministerial Staff in Clerical grades; Overseer; Overseer Postman; Sorting Reader Postman; Head Postman; Departmental Branch Postmaster; Despatch Rider", in column 2, for the words "Inspector of Post Offices, (In respect of Overseer, Overseer Postman; Sorting Reader Postman, Head Postman, Departmental Branch Postmaster), the following words shall be substituted, namely :—  
"Inspector of Post Offices/Assistant Superintendent of Post Offices (in respect of Overseer; Overseer Postman; Sorting Reader Postman; Head Postman; Departmental Branch Postmaster)";
  - (b) against the entries "All other Posts", in columns 2 and 3 for the words "Inspector of Post Offices (in all other Offices)", the following words shall be substituted, namely :—  
"Inspector of Post Offices/Assistant Superintendent of Post Offices (in all other offices)";
- (ii) In Part III—General Central Service Group 'D', under the heading "Postal and Railway Mail Service—Divisional and Sub-Divisional Offices", against the entry "All Posts", in columns 2 and 3, for the words "Inspector of Post Offices", the words shall be substituted, namely :—  
"Inspector of Post Offices/Assistant Superintendent of Post Offices";
- (iii) In Part III—General Central Service Group 'D', under the heading "Post Offices", against the entry "All Posts", in columns 2 and 3 for the words "Inspector of Post Offices (in all other post offices)", the following words shall be substituted, namely :—  
"Inspector of Post Offices/Assistant Superintendent of Post Offices (in all other Post Offices)".

[No. 153/1/80-Disc. II]

का० आ० 635.—राष्ट्रपति, केन्द्रीय मिशन मेवा (वर्गकिरण, नियंत्रण और अपील) नियम 1965 के नियम 9 के उप नियम, (2) नियम 12 के उप नियम (2) के खंड (ख) और नियम 34 के साथ पठित नियम 24 के उप नियम (1) द्वारा प्रदत्त गतियों का प्रयोग

खंड (ख) द्वारा मरम्भा, 1. मंत्रालय मंत्रालय (डाक और तार) की अधिसूचना संकातिनियम 620 तारीख 28 फरवरी, 1957 का निम्नलिखित और मंजोधन करते हैं, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना की अनुमूली ये—

(क) भाग 2 में, माधारण केन्द्रीय मेवा समूह (ग) में "मकिल कार्यालय और पत्र पुनः प्रेषण कार्यालय" शीर्षक के अधीन "उच्चतर या निम्नतर चयन श्रेणी में या समान वेतनमान पर कर्मचारी बृन्द, मकिल के अध्यक्ष का आशुलिपिक, वेतार अन्वेषण निरीक्षक, भवन आवरणियर कनिष्ठ इंजीनियर, चयन श्रेणी के ड्राफ्टस्टेनेन," दूरसंचार लेखा लिपिक और "ग्रन्थ सभी पद" प्रविष्टियों के सामने स्तंभ 2; 3 और 5 में "निदेशक दूरसंचार" शब्दों के स्थान पर "भारतीय दूरसंचार सेवा समूह 'क' के कनिष्ठ प्रशासन श्रेणी के अधिकारी" गद्द रखे जाएँगे।

(ख) भाग 3 में माधारण केन्द्रीय मेवा समूह "घ" में, "मकिल कार्यालय और पत्र पुनः प्रेषण कार्यालय" शीर्षक के अधीन "सभी पद" प्रविष्टि के सामने स्तंभ 5 में "निदेशक दूरसंचार" शब्दों के स्थान पर "भारतीय दूरसंचार सेवा समूह (क) के कनिष्ठ प्रशासन श्रेणी के अधिकारी" गद्द रखे जाएँगे।

[मं. 153/2/80-अनु. II]

जी० एन० रघू, महायक महानिदेशक (सकर्ता)

S.O. 635.—In exercise of the powers conferred by sub-rule (2) of rule 9, clause (b) of sub-rule (2) of rule 12, and sub-rule (1) of rule 24 read with rule 34 of the Central Civil Services (Classification, Control and Appeal) Rules, 1965, the President hereby makes the following further amendments in the notification of the Government of India in the Ministry of Communications (Posts and Telegraphs) No. S.R.O. 620 dated the 28th February, 1957, namely :—

In the Schedule to the said notification—

- (a) In part II, General Central Services Group 'C' under the heading "Circle Office and Returned Letter Offices", the words, "Director of Telecommunications" in columns 2, 3 and 5 against the entries "Staff in higher or Lower Selection Grade or on identical scale of pay, Stenographer to Head of Circle, Wireless Investigating Inspector, Building Overseer, Selection Grade Draftsman", "Telecommunications Accounts Clerks", and "All other Posts" shall be substituted by the words "Officer of the Junior Administrative Grade of the Indian Telecommunications Service, Group 'A'".
- (b) In Part III, Central Service, Group 'D', under the heading "Circle Office and Returned Letter Office", the words "Director of Telecommunications" in column 5 against the entry "All Posts" shall be substituted by the words "Officer of the Junior Administrative Grade of the Indian Telecommunications Service, Group 'A'".

[No. 153/2/80-Disc. III]

G. N. REU, Asstt. Director General (Vig. B)

नई दिल्ली 10 फरवरी, 1981

का० आ० 636.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खण्ड 11 के पैरा (क) के अनुसार डाक-तार महानिदेशक न हासी टेलीफोन केन्द्र से दिनांक 1-3-81 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-5/81-पी० पन० वी०]

New Delhi, the 10th February, 1981

**S.O. 636.**—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies 1-3-1981 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Huns Telephone Exchange, NW Circle

[No. 5-5/81-PHB]

नई दिल्ली, 11 फरवरी, 1981

का० आ० 637.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खण्ड 3 के पैरा (क) के अनुसार डाक-तार महानिदेशक ने जनरलियाल टेलीफोन केन्द्र से दिनांक 1-3-1981 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-6/81-पी० पंच वी०]

New Delhi, the 11th February, 1981

**S.O. 637**—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies 1st March, 1981 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Jagatiai Telephone Exchange, Andhra Pradesh Circle

[No. 5-6/81-PHB]

का० आ० 638.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खण्ड 3 के पैरा (क) के अनुसार डाक-तार महानिदेशक ने मंचिरियाल टेलीफोन केन्द्र से दिनांक 1-3-1981 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-6/81-पी० पंच वी०]

**S.O. 638.**—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies 1st March, 1981 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Mancherial Telephone Exchange, Andhra Pradesh Circle

[No. 5-6/81-PHB]

नई दिल्ली, 12 फरवरी, 1981

का० आ० 639.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1970 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खण्ड 3 के पैरा (क) के अनुसार डाक-तार महानिदेशक ने मेलम टेलीफोन केन्द्र से दिनांक 1-3-1981 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-4/81-पंच वी०]

आर० मी० कटारिगा, राहायक महानिदेशक  
(पी० पंच वी०)

New Delhi, the 12th February, 1981

**S.O. 639**—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S.O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies 1st March, 1981 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Selas Telephone Exchange, Tamil Nadu Circle

[No. 5-4/81-PHB]

R. C. KATARIYA, Asst. Director General (PHB)

(डाक-तार विभाग)

डाक महाध्यक्ष का कार्यालय, केरल परिमित  
विवेन्द्रम, 24 दिसम्बर 1980

का० आ० 640.—यह डाक महाध्यक्ष केरल परिमित की यह गय है कि श्री पंच० पी० कुम्हन्त, पंच० जी० पोस्टमैन, आलतूर (मुम्पत्तल) के संबंध में विभागीय जाच के प्रयोजन के लिए श्री पंच० अपूर्वान्त, वेन्नान्तूर, आलतूर को नाथी के बतार ममन किया जाना आवश्यक है।

अतः अब, विभागीय जाच (भारतीय का उपस्थिति नथा दम्नवेज प्रारन्तीकरण का प्रदर्शन) अधिनियम, 1972 (1972 का 18) वी० धारा 4 की उपधारा 2 के साथ पठित भारत सरकार, सचार मतालय (डाक तार बोर्ड) की अधिसूचना मं० 201/61/73-डि० ऐ० पंच० सी०-११ दिनांक 18 मई, 1976 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयाग करने हुए डाक महाध्यक्ष, केरल परिमित द्वारा उक्त श्री कुम्हन्त के विमुद्ध जाच के संबंध में उक्त अधिनियम की धारा 5 में विनिर्दिष्ट शक्तियों का प्रयाग करने के लिए श्री के० के० परविन्द्रानन, वचत निकाम अधिकारी, पालघाट को जाच प्राधिकारी प्राधिकृत किया जाता है।

[मं० पंच० प० जा० १५, ३४०, जी० टा०-]

श्री० पंच० सिरिल, डाक महाध्यक्ष

## POSTS &amp; TELEGRAPHS DEPARTMENT

(Office of Postmaster-General, Kerala Circle)

Trivandrum, the 24th December, 1980

**S.O. 640.**—Whereas the Postmaster-General, Kerala Circle, is of opinion that for the purposes of the departmental inquiry relating to Shri M. P. Kurundan, S. G. Postman, Alatur (under suspension), it is necessary to summon as witness Shri N. Appukuttan, Vengannur, Alatur.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section 2 of Section 4 of the Departmental Inquiries (Enforcement of attendance of witnesses and Production of documents) Act, 1972 (18 of 1972) read with Government of India, Ministry of Communications (P&T Board) Notification No. 201/61/75-Disc. II dated 18th May, 1976, the Postmaster-General, Kerala Circle, hereby authorizes Shri K. K. Aravindakshan, Savings Development Officer, Palghat as the inquiring authority to exercise the power specified in Section 5 of the said Act in relation to the inquiry against the said Shri Kurundan.

[No. VIG/1/9173-Pgt.]

V. N. CYRIL, Postmaster-General

## रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1981

**का० आ० 641.**—भारतीय रेल अधिनियम, 1890 (1890 का अधिनियम ix) की धारा 83-वीं द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय मरकार पत्रद्वारा श्री बी० के० द्वे, मेवानिवृति जिला पंचायत न्यायाधीश, मध्य प्रदेश, को 20-10-1980 को मध्य रेलवे पर डाटारसी के निकट 6 अप पंजाब मेल और 747 डाउन माल गाड़ी के बीच हई टक्कर के फलस्वरूप उत्पन्न मर्भी दावों का निपटारा करने के लिए, दावा प्रायुक्त के स्पष्ट में नियुक्त करती है। उनका मुख्यालय होशंगाबाद में होगा।

[सं० 80 ई० (आ०) II/1/3]

हिम्मत मिह, मंत्रिव

रेलवे बोर्ड एवं भारत मरकार के पदेन मंत्रिव सचिव

## MINISTRY OF RAILWAYS

(Railway Board)

New Delhi, the 6th February, 1981

**S.O. 641.**—In exercise of the powers conferred by Section 82-B of the Indian Railways Act, 1890 (Act IX of 1890), the Central Government hereby appoints Shri B. K. Dubey, retired District and Sessions Judge, Madhya Pradesh, as Claims Commissioner, to deal with all the claims arising out of the collision between 6 Up Punjab Mail and 747 Dn. Goods train near Itarsi on Central Railway on 20-10-1980. His headquarters will be at Hoshangabad.

[No. 80E(O)II/1/3]

HIMMAT SINGH, Secy.  
Railway Board & Ex-officio Jt. Secy.

to the Govt. of India

श्रम संत्रालय

## प्रादेश

नई दिल्ली, 17 जनवरी, 1981

**का० आ० 642.**—केन्द्रीय मरकार की धारा 7 के द्वारा उपायद्वारा अनुसूची में विनिर्दिष्ट विषय के बारे में मैमर्स द्रावनकार द्वाइटेनियम प्राइवेट लिं. विवेद्रन के प्रवंधनवाले में सम्बद्ध एक आंदोलिक विवाद नियोजकों और उनके कम्कारों के बीच विश्वासन है;

आंदोलिक विवाद को न्यायिनीयत के लिए निर्देशित करना आवश्यक समझता है।

अतः, केन्द्रीय मरकार, आंदोलिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 7 के आंदोलिक धारा 10 की उपधारा (1) के बड़े (घ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एक आंदोलिक अधिकारण गठित करती है जिसके पीछामीन अधिकारी श्री ई० मुन्द्रमनम ऐनियल होंगे, जिनका मुख्यालय मद्रास में होगा और उक्त विवाद को उक्त अधिकारण को न्यायिनीयत के लिए निर्देशित करती है।

## अनुसूची

“क्या मैमर्स द्रावनकार द्वाइटेनियम प्राइवेट लिं. कोच्चेली, विवेद्रन के नियोजकों द्वारा मंत्री के० राजेन्द्रम और के० मुरेन्द्रन, कार्य गहायकों को 17-3-1979 से 21-12-1979 तक की अवधि की मजदूरी, भेवा को जारी रखने और अन्य प्रारंभिक लाभ देने से द्वारा करना न्यायोचित है? यदि नहीं तो वे किस अनुतोष के हकदार हैं?”

[सं० एन०-29012/26/80- ई० II (वी०)]

के० के० हांडा, अवर सचिव

## MINISTRY OF LABOUR

ORDER

New Delhi, the 17th January, 1981

**S.O. 642.**—Whereas the Central Government is of opinion that an industrial dispute exists between the employers in relation to the management of M/s. Travancore Titanium Products Limited, Trivandrum and their workmen in respect of the matter specified in the Schedule hereto annexed;

And whereas the Central Government considers it desirable to refer the said dispute for adjudication;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by section 7A and clause (d) of sub-section (1) of section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby constitutes an Industrial Tribunal of which Shri T. Sudarsanam Daniel shall be the Presiding Officer, with headquarters at Madras and refers the said dispute for adjudication to the said Tribunal.

## SCHEDULE

“Whether the employers of M/s. Travancore Titanium Products Limited, Kochu Veli, Trivandrum were justified in denying the wages, continuity of service and other incidental benefits to Suryashri K. Rajendran and K. Surendran, Work Assistants for the period from 17-3-1979 to 21-12-1979? If not, what relief they are entitled to?”

[No. L-29012/26/80-D. III(B)]

K. K. HANNA, Under Secy.

## आदेश

नई दिल्ली, 20 जनवरी, 1981

**कांग आ० 643.—**केन्द्रीय सरकार की गये हे ति  
दसमें उपायद मन्त्री से विनियोग विषय के बारे में  
कार्योंरेखा वैक निमिट्टे, हवल के प्रबंधनवाले में एक एक  
आंदोलनिक विवाद फ्रोड़को और उसके कम्बारों के बीच  
विवादात है।

आंग केन्द्रीय सरकार उक्त विवाद को व्यावर्तित्वात  
के लिए निर्देशित करना बांधनीय समझती है।

अतः, केन्द्रीय सरकार, आंदोलनिक विवाद अधिनियम,  
1947 (1947 का 14) की धारा 7-के आंग धारा  
10 की उपाधारा (1) के बड़ (र) धारा प्रदन गतिशी  
का प्रयोग करने हैं, एक आंदोलनिक अधिकरण गठित  
करनी है जिसके पीठामीन अधिकारी श्री एन० जनमुखपा  
होगे, जिनका मुख्यालय कलगोदार में होगा आंग उक्त विवाद  
को उक्त आंदोलनिक अधिकरण को व्यावर्तित्वात के लिए  
निर्देशित करनी है।

## अनुसूची

क्या कार्योंरेखा वैक निमिट्टे, हवली के प्रबंधनवाले  
की अपने ऐसे कर्मचारियों को, जिन्हे हवली जावा  
में धारवाड जावा आंग धारवाड जावा में हवली  
जावा में काम के लिए भेजा जाता है, याका भत्ता  
आंग विराम भत्ता का मदांय न करने की कार्यवाली  
न्योद्योचित है यदि नहीं, तो सम्बंधित कर्मकार किस  
अनुतोष के हकदार हैं?

[सं० पल०-12011/9/80-डी०-II(ए)]  
एम० के० विम्बाम, डेस्क अधिकारी

## ORDER

New Delhi, the 20th January, 1981

**S.O. 643.—**Whereas the Central Government is of opinion  
that an industrial dispute exists between the employers in  
relation to the management of Corporation Bank Limited,  
Hubli and their workmen in respect of the matter specified  
in the Schedule hereto annexed,

And whereas the Central Government considers it desirable  
to refer the said dispute for adjudication;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by  
section 7A and clause (d) of sub-section (1) of section 10 of  
the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the  
Central Government hereby constitutes an Industrial Tribunal,  
of which Shri H. Shanmukhappa shall be the Presiding  
Officer, with headquarters at Gandhinagar, Bangalore and  
refers the said dispute for adjudication to the said Tribunal.

## SCHEDULE

Whether the action of the management of Corporation  
Bank Limited, Hubli in not paying the travelling  
allowance and halting allowance to their employees  
who are deputed to work from Hubli Branch to  
Dharwad Branch and Dharwad to Hubli Branch  
is justified? If not, to what relief are the work  
men concerned entitled?

[No. L-12011/9/80-D.II(A)]

S. K. BISWAS, Desk Officer

New Delhi, the 3rd February, 1981

**S.O. 644—**In pursuance of section 17 of the Industrial  
Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government  
hereby publishes the following award of the Central Government  
Industrial Tribunal No. 2, Dhanbad, in the industrial  
dispute between the employers in relation to the management  
Godhur Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited,  
Post Office Kusunda, District Dhanbad and their  
workmen, which was received by the Central Government  
on the 28th January, 1981

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL  
TRIBUNAL (NO. 2), DHANBAD

## Reference No. 66 of 1979

In matter of a reference under S. 10(1)(d) of the I.D.  
Act, 1947

## PARTIES.

Employers in relation to the management of Godhur  
Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited,  
Post Office Kusunda, District Dhanbad

## AND

Their workmen.

## APPEARANCES:

On behalf of the employers—Shri T. P. Choudhury;  
Advocate.

On behalf of the workmen—Shri S. Bose, Secretary,  
Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, Dhanbad.

STATE: Bihar

INDUSTRY: Coal.

Dhanbad, 23rd January, 1981

## AWARD

This is a reference under S. 10 of the I.D. Act, 1947. The  
Central Government by its notification No. L-20012/167/76  
DIII A, dated 24th November, 1976 had referred this dispute  
to this Tribunal for adjudication on the following points:

## SCHEDULE

“Whether the action of the management of Godhur  
Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited,  
Post Office Kusunda, Dist. Dhanbad in stopping  
the following workmen who had been working on  
the Overburden Removal at Quarry No. 4 of the  
colliery, after the termination of contract of Shri  
P. D. Singh, Ex. Contractor with effect from the  
20th February, 1974, is justified? If not, to what  
relief are the said workmen entitled and from  
what date?”

S. No. Name of the workmen

1. Sri Kasi Jain
2. Shri Jogi Bisal
3. Shri Kartik Naik
4. Shri Rampat Naik
5. Shri Loasimini Singh
6. Smt. Kari Kamin
7. Smt. Basanti Kamin
8. Shri Nagraj Bhuria
9. Shri Bandha Naik
10. Shri Dinabandhu Naik
11. Shri Ram Patraik
12. Shri Bidhan Naik
13. Smt. Thanma Kamin
14. Smt. Chandmuni Kamin
15. Smt. Saraswatia Kamin
16. Shri Barho Singh
17. Smt. Sovawa Kamin
18. Smt. Radhia Kamin
19. Smt. Buctia Kamin
20. Shri Thomar Bhuria
21. Shri Hari Gope

22. Shri Eipon Gope
23. Shri Pitambar Naik
24. Shri Pairagi Bisal
25. Shri Bijoy Podar
26. Shri Ram Behra
27. Shri Awadhi Naik
28. Shri Bijoy Naik
29. Shri Kuldip Rajwar
30. Smt. Gangia Kamin
31. Smt. Pemia Kamin
32. Smt. Bedimia Kamin
33. Smt. Subha Kamin
34. Smt. Phulia Kamin
35. Smt. Ajuasia Kamin
36. Shri Akin Bhuria
37. Shri Ram Lakhman Singh

2. The reference was transferred to the Central Government Industrial Tribunal (No. 3) Dhanbad on 4-3-77 for disposal. But after sometime the case was re-transferred to this Tribunal on 7-7-79. Since then efforts had been made to complete the hearing of the case and ultimately the hearing of the case has now been completed.

3. The above 37 persons claimed to be workmen of Godhur colliery which was one of the 214 coking coal mines taken over under the management of Central Government w.e.f. 17-10-71, and subsequently nationalised w.e.f. 1-5-72. According to them they were working in the quarry No 4 of Godhur colliery from before the take over of the management and they continued to work there till the month of February, 1974. The case of the workmen is that they were not regarded at par with other workers of the colliery and had raised grievances before the management. The management adopted a hard line and stopped them from work w.e.f. 20-2-74. An industrial dispute was raised and in course of the conciliation proceeding the management took the plea that they were not workmen of the colliery and were workers of a contractor Shri P. D. Singh whose contract was subsequently terminated. These workmen denied this contention at the conciliation stage. In this reference their plea is that they were never labourers of the contractor, and in fact quarry No. 4 where they were working departmentally run, and they were also paid directly by the management.

4. The management's case is that quarry No. 4 of Godhur colliery was under the process of development and the overburden removal work was entrusted to one Shri P. D. Singh a contractor duly registered under the Contract Labour (Regulation and Abolition) Act, 1970. The concerned workmen are said to be the labourers engaged by Shri P. D. Singh for the purpose of overburden removal. Shri P. D. Singh did not pay the wages of the workers employed by him in the overburden removal work from week ending 19-1-1974 to 16-2-1974. According to the management Shri P. D. Singh fled away and accordingly his contract was terminated w.e.f. 19-2-1974. The management further alleged that the workmen who had been engaged by the contractor forcibly continued to work in quarry No. 4 inspite of verbal and written warning and eventually they had to be stopped with the help of police. It was denied that the quarry No. 4 was departmentalised and that the concerned workmen had been engaged by the management.

5. There is no dispute on the point that quarry No. 4 of Godhur colliery was, under operation from before the take over of the management of the colliery by the Central Government prior to nationalisation. WW. 2 Shri Ramdhari Singh had been working in Godhur colliery since 1969 as mining sirdar. He has said that these concerned workmen were working at quarry No. 4, and engaged in cutting of earth and stone and also in raising of coal from the quarry. This witness after the take over of the colliery by the Government used to be a mining sirdar in quarry No. 4. WW. 2 Shri Toman Bhuria, one of the concerned workmen has deposed that he was working in Godhur colliery for about 1 year before nationalisation. His evidence is that altogether there were 60 persons engaged in quarry No. 4 and out of them 3 persons are not interested and have gone back home in Orissa. Management witness, NW-1 Shri

Uma Shankar Singh happened to be the colliery manager of Godhur colliery between 1972 to 1975. His evidence is that in Godhur colliery overburden removal used to be done through contractors and raising of coal was done departmentally in quarry No. 4. His evidence is that Shri P. D. Singh was contractor. In his cross-examination he made it clear that quarry No. 4 was in operation in 1972. This witness came to Godhur colliery after nationalisation and so, he is not competent to say as to how quarry No. 4 of Godhur colliery was operated before the take over. No other witness was examined by the management. WW. 1 and WW. 2 have both said that Shri P. D. Singh contractor had nothing to do with quarry No. 4. So, on this point as to whether quarry No. 4 of Godhur colliery was operated departmentally or through contractor prior to take over of the management by the Central Government, the management has produced no oral evidence. On the other hand, 2 witnesses were examined including a mining sirdar to say that Shri P. D. Singh had nothing to do with quarry No. 4 or its operation prior to take over or even thereafter.

6. Now let us see if the documentary evidence produced by the management goes to support the case that quarry No. 4 of Godhur colliery was operated through contractor Shri P. D. Singh. Ext. M1 is a certificate of registration issued by the Ministry of Labour, Government of India. It is dated 16-11-1972. This certificate of registration was issued under sub-section (ii) of S. 7 of the Contract Labour (Regulation and Abolition) Act, 1970 in respect of Godhur colliery. The annexure to Ext. M1 shows that Shri P. D. Singh as a contractor for overburden removal, and the period of contract is shown from June, 1972 to March, 1973. Along with them we have a proforma attached to Ext. M1 showing that Shri P. D. Singh was engaged in removing of overburden at No. 2 quarry (11 and 12 seams). Ext. M1 and its annexure of two documents which I have referred to above do not go to show that Shri P. D. Singh was at all a contractor engaged in overburden removal of quarry No. 4. The proforma mentioned above gives a list of 16 contractors, but none of them appear to have any work in respect of quarry No. 4. But apart from all these, the certificate of registration, Ext. M1 is dated 18-11-1972 which is a date after nationalisation. This does not show how quarry No. 4 was operated before this certificate was issued to Shri P. D. Singh. The management has not shown that there was any registered contractor prior to the issue of Ext. M1. The only mention of Shri P. D. Singh being contractor of quarry No. 4 is in Ext. M2 the letter of the manager, Godhur colliery dated 20-2-74. It was addressed to Shri P. D. Singh on the subject of the cancellation of contract of quarry No. 4 for the reason that the workers had not been paid. Ext. M3 is a reply dated 28-2-1974 of Shri P. D. Singh to that letter of the manager asking for time to pay the workers and to resume normal working. It may be mentioned that apart from Ext. M2 there is no evidence to indicate that even after nationalisation Shri P. D. Singh had been allotted the work of overburden removal in quarry No. 4. The contractor in his letter Ext. M3 has made no mention absolutely that he was engaged in the contract work of quarry No. 4. It may also be mentioned that allotment, if at all of quarry No. 4 to Shri P. D. Singh must have been made by some written order. The management has not produced any document apart from Exts. M2 and M3. I may also mention that in 1974 when Ext. M2 was written the workers of quarry No. 4 were agitating and the management had to take police help in order to stop them from work. Exts. M2 and M3 therefore cannot be regarded as unimpeachable documents to show that Shri P. D. Singh was working at quarry No. 4 as contractor. Moreover, since there was a denial by the workmen about the existence of Shri P. D. Singh as a contractor of quarry No. 4, the management should have examined Shri P. D. Singh as a witness to prove that fact. I have therefore to hold that the management has failed to prove that quarry No. 4 of Godhur colliery was being operated by the contractor Shri P. D. Singh. There is no evidence worthy the name to show that the concerned workmen were labourers of the contractor Shri P. D. Singh.

7. On behalf of the concerned workmen a petition has been filed calling for production of a number of documents

from the custody of the management. The management produced only some of them which were neither used by the workmen nor by the management as they did not relate to quarry No. 4 of Godhur colliery. The contention on behalf of the workmen is that the management has deliberately withheld documents which could go to show that the concerned workmen were the employees of the management and were paid by the colliery directly.

8. The management's contention is that the concerned workmen were engaged only in overburden removal. The evidence adduced on behalf of the workmen is that the entire work such as overburden removal and cutting of coal was done by a gang of 40 persons. We have before us 37 workmen and the evidence is that 3 of them are not interested in this dispute. So, on behalf of the workmen it has been alleged, and not disputed that they were the only persons engaged in quarry No. 4. MW-1 has not disputed this fact, and all that he has been able to say is that all the workmen of quarry No. 4 used to be utilised by the contractor Shri P. D. Singh. He was confronted with Ext. W. 1 which is a letter addressed by Shri A. K. Chatterjee, Sub-area Manager to the Manager, Godhur colliery. This letter is dated 6-4-1973. It has been countersigned by Shri Haridwar Singh, Secretary, Colliery Mazdoor Sangh, Branch Godhur colliery. Through this document there were 13 points of agreement between the Sub-Area Manager and the Secretary, Colliery Mazdoor Singh, Godhur Branch. Item No. 6 of the agreement runs as follows :

"The management will make its best efforts to make the employees of quarry No. 4 to 14 and 27 permanent."

It would thus appear that even on 6-4-73 there was an agreement that employees of quarry No. 4 were to be made permanent. MW-1 the then colliery manager has stated the following in this connection :

"We implemented para 6 of this letter, Ext. W. 1. Then says with regard to para 6, we implemented the instructions so far as the workers engaged in the coal raising work and we did not implement it so far as the workers engaged in overburden removal work. The contractors labourers were also engaged in coal raising, and we asked the contractor in terms of para 6 of Ext. W. 1 to supply the name of those labourers who were engaged in coal raising work and those records must be available in the office."

This witness has admitted that the labourers of quarry No. 4 were also engaged in coal raising work and he had asked the contractor Shri P. D. Singh to give the names of the labourers engaged in coal raising. He has further said that this could be proved by the records of the colliery which, of course, have not been produced here.

9. Thus from the above it would appear that the concerned workmen were not only engaged in overburden removal but they were also engaged in raising of coal. It further appears that since Shri P. D. Singh was one of the contractors engaged in overburden removal in Godhur colliery it suited the management to take this plea in order to defeat the case of the concerned workmen. The positive case of the concerned workmen is that the local management of the colliery including the Sub-Area Manager were giving a sympathetic consideration to their case, but a hard line was adopted due to certain instructions from the above. The conciliation officer appears to have taken this view in his letter recommending to the Government of India, Ministry of Labour for adjudication. But apart from everything else, the management has given no evidence to connect quarry No. 4 with the contractor Shri P. D. Singh nor there has been any attempt to show any relationship between the concerned workmen and the contractor Shri P. D. Singh. Ext. W1 mentions 'employees' of quarry No. 4 and no mention has been made about these employees being the employees of the contractor. This means that the use of the word 'employee' means the employee of the colliery. The question before the Sub-Area Manager was as to absorb them permanently and the agreement was that best efforts should be made to make them permanent. Instead they have been stopped from work about a year after for no reason whatsoever. In this case it is easy to find from the evidence adduced that the concerned workmen were employed by

the erstwhile employer in removal of overburden and in operation of the mine. After the take over and even after nationalisation these concerned workmen continued to work. There was an attempt made by the union to make them permanent and the Sub-Area Manager agreed to do so. The colliery manager did not do so and ultimately stopped them from work with the help of the police. Coal Nationalisation Act provides a safe-guard for the employees working in the colliery from before the take over of the management of the colliery. In order to remove them from work it was necessary that certain procedure as envisaged in the Nationalisation Act should have been followed. There is no evidence to indicate that the management followed any procedure to remove them from service. The plea taken by the management that they were labourers of the contractor has failed.

10. Thus this reference is answered accordingly :

(a) The workmen mentioned in the schedule were never the employees of contractor Shri P. D. Singh and, so after the termination of the contract of the contractor Shri P. D. Singh the action of the management of Godhur Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Kusunda, District Dhanbad in stopping them from work cannot be justified.

(b) The workmen mentioned in the schedule are held to be workmen of the Godhur Colliery of Messrs B. C. C. Ltd. and the stoppage of their work for no justifiable reason is held to be unjustified.

(c) The concerned workmen mentioned in the schedule of the reference shall be reinstated to their service with effect from 20-2-1974 with continuity of service.

(d) They will be entitled to their back wages and other emoluments admissible to them w.e.f. 20-2-1974.

This is my award.

I. P. SINGH, Presiding Officer

(No. I-20012/16/76-D. III(A))

S. H. S. IYER, Desk Officer

नई दिल्ली, 3 फरवरी, 1981

काठ आ० 645.—गुजरात राज्य सरकार ने कर्मचारी राज्य वीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 4 के खण्ड (घ) के अनुसरण में धी एन० विट्टल के स्थान पर श्री एम० एम० दयाल, मन्त्रिवाल गुजरात सरकार को कर्मचारी राज्य वीमा निगम में उम राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए नामनिर्दिष्ट किया है;

अतः श्रव केन्द्रीय सरकार, कर्मचारी राज्य वीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 4 के अनुसरण में, भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का० आ० 850 (अ), दिनांक 21 अक्टूबर, 1980 में निम्नलिखित संशोधन करनी है, अर्थात्—

उक्त अधिसूचना में, "(राज्य सरकारों द्वारा धारा 4 के खण्ड (घ) के अधीन नामनिर्दिष्ट)"

शीर्षक के नीचे मद्द 11 के मामने की प्रविष्टि के स्थान पर निम्नलिखित प्रविष्टि रखी जाएगी, ग्राहन—

श्री एम० एम० दयाल,

मन्त्रिवाल गुजरात सरकार,

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग,

गांधी नगर।

New Delhi, the 3rd February, 1981

**S.O. 645.**—Whereas the State Government of Gujarat has, in pursuance of clause (d) of section 4 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948) nominated Shri M. S. Dayal, Secretary to the Government of Gujarat to represent that State on the Employees' State Insurance Corporation, in place of Shri N. Vittal;

Now, therefore, in pursuance of section 4 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S. O. 850(F), dated the 21st October, 1980, namely :—

In the said notification, under the heading "(Nominated by the State Governments under clause (d) of section 4)", for the entry against item 11, the following entry shall be substituted, namely :—

"Shri M. S. Dayal,

Secretary to the Government of Gujarat,  
Health and Family Welfare Deptt.,  
Gandhinagar.

[No. U-16012/17/80-H.I]

नई दिल्ली, 6 फरवरी, 1981

**का० आ० 646.**—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स यूरेका केमिकल्स लिमिटेड, 4, बैंक-शाल मैट्रीट, कलकत्ता-1 जिसके अन्तर्गत हालिया, पश्चिम बंगाल स्थित उसकी शाखा भी है, नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर महमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त गतियों का प्रयोग करने हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना 30 जून, 1978 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[मं० प्र०/35017/62/79-पी० एफ० 2]

New Delhi, the 6th February, 1981

**S.O. 646.**—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Eureka Chemicals Limited, 4, Bankshail Street, Calcutta-1 including its branch at Haldia, West Bengal, have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952) should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the thirtieth day of June, 1978.

[No. S. 35017/62/79-PF. II]

**का० आ० 647.**—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स प्लैटर्स (इण्डिया) (प्राइवेट) लिमिटेड, 23, कैमक मैट्रीट, कलकत्ता-16, नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर महमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त गतियों का प्रयोग करने हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना 28 फरवरी, 1979 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[मं० प्र०-35017/88/79-पी० एफ०-2]

**S.O. 647.**—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Planters (India) (Private) Limited, 23, Camac Street, Calcutta-16, have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the twenty-eighth day of February, 1979.

[No. S. 35017/88/79-PF. II]

**का० आ० 648.**—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स जयथा एण्ड सन्स, 22/5, हादापसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट, पूना-13 नामक स्थापन में सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर महमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त गतियों का प्रयोग करने हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना 1 नवम्बर, 1977 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[मं० प्र०-35018/121/79-पी० एफ०-2]

**S.O. 648.**—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Jaitha and Sons, 22/5, Hadapsar Industrial Estate, Poona-13 have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the first day of November, 1977.

[No. S. 35018/121/79-PF. III]

का० आ० 649.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैमर्स मोक्तली इंजीनियरिंग कम्पनी, 94-A, छानी रोड, ओक्ट्रोई नाका के मामने, बड़ीदा, जिसके अन्तर्गत भी भीमनाथ मंदिर के निकट, सायाजीगंज, बड़ीदा-5, स्थित उमका कार्यालय भी है, नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना उम तारीख को प्रवृत्त होगी जिस तारीख को यह गणपत्र में प्रकाशित की जाती है।

[मं० एम०-35019/242/79-पी० एफ०-2]

**S.O. 649.**—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Moktali Engineering Company, 94-A, Chhani Road, Opposite Octroi Naka, Baroda including its Office at Near Bhimnath Temple, Sayajigunj, Baroda-5, have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment :

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall come into force on the date on which it is published in the Official Gazette.

[No. S. 35019/242/79-PF. II]

का० आ० 650.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैमर्स बीवेर इंजीनियरिंग कार्पोरेशन, यूनिट नं० 10, इलेक्ट्रोनिक्स कम्प्लेक्स, कुणगुडा, हैदराबाद-762, नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना 1 जूलाई, 1979 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[मं० एम०-35019/280/79-पी० एफ०-2]

**S.O. 650.**—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Beaver Engineering Corporation, Unit No. 10, Electronics Complex, Kushtaguda, Hyderabad-762, have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the first day of July, 1979.

[No. S-35019/280/79-PF. II]

का० आ० 651.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैमर्स होटल बेलायानी डाकघर, विवेदम, नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना 1 अप्रैल, 1979 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[मं० एम० 35019/87/80-पी० एफ०-II]

**S.O. 651.**—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Hotel Belair, Vellavani Post Office, Trivandrum, have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the first day of April, 1979.

[No. S-35019/87/80-PF. II]

का० आ० 652.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैमर्स यूनिवॉर्स कम्पनी, 22/442, इच्छाकोचीन, कोचीन-6, पौलवायी ग्राम, कोचीन तालुक, एर्नीकूलम जिला, नामक स्थापन से सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की बहुसंख्या इस बात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपबंध अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपबंध उक्त स्थापन को लागू किए जाने चाहिए;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपबंध उक्त स्थापन को लागू करती है।

यह अधिसूचना 1 मई, 1979 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[मं० एम० 35019/88/80-पी० एफ०-II]

S.O. 652.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Unibox Company, XXII/442, Eda-Cochin, Cochin-6, Palbauthy Village, Cochin Taluk, Ernakulam District have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the first day of May, 1979.

[No. S-35019/88/80-PF. II]

का० आ० 653.—केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि मैसर्स महादेव केमिकल्स इण्डस्ट्रीज, बेपोररोड, शार्कोट-3, नामक स्थान पर सम्बद्ध नियोजक और कर्मचारियों की वहसंघ्या इस वात पर सहमत हो गई है कि कर्मचारी भविष्य निधि और प्रकीर्ण उपचंद्र अधिनियम, 1952 (1952 का 19) के उपचंद्र उक्त स्थान को लागू किया जाने चाहिए;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 1 की उपचंद्र (4) द्वारा प्रदत्त जवितयों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम के उपचंद्र उक्त स्थान को लागू करनी है।

यह अधिसूचना 1 जून, 1980 को प्रवृत्त हुई समझी जाएगी।

[सं० एस० 35019(89)/80-पी० एफ० II]

S.O. 653.—Whereas it appears to the Central Government that the employer and the majority of the employees in relation to the establishment known as Messrs Mahadev Chemical Industries, Beypore Road, Calicut-3, have agreed that the provisions of the Employees' Provident Funds and Miscellaneous Provisions Act, 1952 (19 of 1952), should be made applicable to the said establishment;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 1 of the said Act, the Central Government hereby applies the provisions of the said Act to the said establishment.

This notification shall be deemed to have come into force on the first day of June, 1980.

[No. S-35019/89/80-PF. II]

नई दिल्ली, 10 फरवरी, 1981

का० आ० 654.—केन्द्रीय सरकार ने कर्मचारी राज्य वीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 4 के खण्ड (3) के अनुसरण में श्री आर० बद्रीनाथ के ग्राहन पर श्री एस० के० बज्रमश्वा श्रम आयुक्त तथा मचिव (श्रम), दिल्ली प्रशासन को कर्मचारी राज्य वीमा निगम में सदस्य के रूप में नाम-निर्दिष्ट किया है:

अतः अब केन्द्रीय सरकार, कर्मचारी राज्य वीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 4 के अनुसरण में भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधि-

नूचना संख्या आ० 850 (अ), दिनांक 21 अक्टूबर, 1980 में निम्नलिखित संशोधन करनी है, अर्थात्:—

उक्त अधिसूचना में “केन्द्रीय सरकार द्वारा धारा 4 के खण्ड (3) के अधीन नामनिर्दिष्ट” शोधक के नीचे मत 28 के सामने को प्रतिविट के स्थान पर निम्नलिखित प्रतिविट रखी जाएगी, अर्थात्:—

श्री एस० के० बज्रमश्वा,

श्रम आयुक्त तथा सचिव (श्रम)

दिल्ली प्रशासन,

दिल्ली।

[संख्या य०-16012/4/81-एन० आई०]

नवीन चावला, उप सचिव

New Delhi, the 10th February, 1981

S.O. 654.—Whereas the Central Government have in pursuance of clause (e) of section 4 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948) nominated Shri M. K. Bezboruah, Labour Commissioner and Secretary (Labour), Delhi Administration to be member of the Employees' State Insurance Corporation, in place of Shri R. Badrinath;

Now, therefore, in pursuance of section 4 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby makes the following amendment in the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S. O. 850(E), dated the 21st October, 1980, namely:—

In the said notification, under the heading “(Nominated by the Central Government under clause (e) of section 4)”, for the entry against item 28, the following entry shall be substituted, namely:—

Shri M. K. Bezboruah,

Labour Commissioner and Secretary (Labour),  
Delhi Administration,  
Delhi.

[No. U-15012/4 81-HI]

NAVIN CHAWLA, Dy. Secy.

New Delhi, the 4th February, 1981

S.O. 655.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, New Delhi, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Delhi Milk Scheme, New Delhi and their workmen, which was received by the Central Government on the 30th January, 1981.

BEFORE SHRI MAHESH CHANDRA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, NEW DELHI

I.D. No. 1 of 1978

Shri Ishwar Singh S/o Shri Gabbu Ram, B-71, Shum Nagar, New Delhi-110018..... Petitioner  
Versus

The Chairman, Delhi Milk Scheme, West Patel Nagar, New Delhi-110008..... Respondent

AWARD

The Central Govt as appropriate Govt. v/s its order No. L-42012(10)/77-D, II(B) dated 1<sup>st</sup> 2nd January, 1978 referred an Industrial Dispute u/s 10 of the I.D. Act, 1947 to this Tribunal in the following terms :

Whether the action of the management of the Delhi Milk Scheme, New Delhi in terminating the services of Shri Ishwar Singh, Mat with effect from 29-10-1971 is justified? If not, to what relief is the said workman entitled?

2. Upon receipt of the reference it was ordered to be registered and usual notice were sent to the parties, in pursuance whereof a statement of claim was filed on behalf of

the workman. Thereafter a written statement was filed by the respondent and finally a replication was filed. Upon pleadings of the parties following two issues were framed for trial :

1. Whether the termination of services of the workman is for misconduct as alleged ?

2. As in order of reference.

3. I have gone through the evidence produced by the parties and have heard the representatives of the parties and after giving my considered thought to the matter before me I have come to the following findings.

4. From the pleadings of the parties it would be found that the contention of the workman is that he was appointed as Badli worker against the post of Mate in February, 1968 in Delhi Milk Scheme where he worked till 30-10-1969 as such, that later on w.e.f. 1st November, 1969 he was appointed on regular basis as Mate; that his services were terminated w.e.f. 29-10-71; that the termination of his services was illegal, unlawful, un-forceable, ineffective and as such he was entitled to be reinstated with continuity of service.

5. The contention of the Management in this behalf is that the Delhi Milk Scheme is not a legal entity and such petition against Delhi Milk Scheme was not maintainable. The other facts of the case are not disputed except that it is contended by the Delhi Milk Scheme that the termination of services was valid.

6. It would be appropriate to first consider the preliminary objection. It is urged that Delhi Milk Scheme is not a legal entity. From the order of reference it would be found that the parties to the case are the Chairman Delhi Milk Scheme and Shri Ishwar Singh. From the perusal of statement of claim it would be found that the workman has been mentioned therein as Ishwar Singh while the employer has been mentioned as Management of Delhi Milk Scheme. In view thereof it cannot be said that the statement of claim is bad.

#### 7. Issues No. 1 and 2

It is established from the very admissions of the respondents, Delhi Milk Scheme that the workman was appointed as Badli worker against the post of Mate in Delhi Milk Scheme in February, 1968. It is similarly admitted that he served as a badli mate till 31-10-1969. Likewise it is admitted that the workman was appointed as a Mate on regular basis w.e.f. 1-11-1969 and his services were terminated w.e.f. 29-10-1971. The workman has come forward as W.W. I and has tendered his affidavit Ex. W.1 and has also stated that the documents on record filed by him may be read into evidence.

During cross-examination it is stated by him that he was a confirmed employee. It is further stated by him that it was incorrect to suggest that no person junior to him had been permanently absorbed. From the perusal of his affidavit I find that he has only reiterated what he had stated in his statement of claim. The Management has produced certain documents as the workman has. The statement of Shri S. N. Shukla, counsel for the workman and Shri D. R. Gupta, counsel for Delhi Milk Scheme was recorded on 28th February, 1980 in which it was stated by both of them that the documents on records filed by parties may be read into evidence without formal proof and the parties be heard. No other evidence proposed to be led. Keeping in view the statements above, all the documents on record from part of the evidence led by the parties in his case. The workman has produced attested copy of office order No. 644 dated 29th October, 1971 whereby the services of the workman were terminated by the Management. The workman has also filed an attested copy of the Certificated Standing Orders for the employees of Delhi Milk Scheme which in clause 4, sub clause III defines badli workmen "as a worker who is employed for the purposes of working in place of regular employees who are temporarily absent provided that a badli worker who has actually worked for not less than 240 days in any period of 12 months shall be transferred to regular establishment governed by the Fundamental and Supplementary Rules." Admittedly this workman had worked for more than 240 days in a year before he was transferred to regular establishment and therefore for all intents and purposes he was a regular employee of the respondent, Delhi Milk Scheme. I

would advert to other relevant clause of the Standing Orders later on. The Management has filed attested copy of nothing originating with a note dated the 31st September 1971 and ending with a note dated the 25th October, 1971. From the perusal of these documents it would be found that the termination of services of this workman was more for mis-conduct than a simple termination. In fact one Shri G. P. Goyal had vide his note dated the 30th September, 1971 suggested institution of disciplinary proceedings against this workman in the following terms :

"We may approach the DGM kindly to approve of instituting disciplinary proceedings against Shri Ishwar Singh S/o Gabbu Ram, Mate as far a penalty under Rules 14 of the C.C.S. (C.C.A.) Rules, 1965."

The file was marked to the Personnel Officer but the Personnel Officer vide his note dated the 8th October, 1971 suggested that since the workman was a temporary employee his services could be better terminated under rule 5 of temporary service rules. The said note reads as under :

"From the facts stated in the notes from P5/ante, it is quite evident that Shri Ishwar Singh, Mate had produced a false education certificate to get into Govt. service. Since he is a temporary employee, I would suggest that his services may be terminated under Rule 5 of the Temporary Services Rules as has been done by us in the case of certain MDs who had suppressed material information in the attestation forms in regard to the arrest etc. Alternatively above may be approved although the action suggested by me at B above would obviously yield quick result; apart from creating a deterrent effect as others".

8. From the perusal of the notes re-produced above it is established that the services of the workman were terminated for alleged mis-conduct and it was not a case of simple termination and as such it would follow that this is not a case of simple termination of the services of the workman rather it is a case of termination of services for mis-conduct. Admittedly no enquiry into the allegations of mis-conduct has been held against the workman and therefore the termination is bad. It may be mentioned here that a reference to Standing Orders is again called for and from the perusal of clause 14 it would be found that certainly the alleged act for which the services of the workman have in fact terminated qualifies as a mis-conduct and the procedure for disciplinary action for a mis-conduct has been prescribed in clause 15 of the Standing Orders. That having not been complied with the termination of services of the workman would be bad and un-forceable. From my discussions above, I hold that the termination of services of the workman was in fact for mis-conduct and resort was had to rule 5 as a camouflaged so as to avoid taking any disciplinary action and accordingly bad, illegal and un-forceable.

9. The termination of services of the workman is also bad for another reason. The termination in the instant case attracts the provisions of Section 25-F of the I.D. Act and any termination without complying with the provisions thereof is also bad. Admittedly the requirements or payment of retirement compromise etc. have not been complied with in the instant case and in view of the principle of 'lax loid down' by the Hon'ble Supreme Court of India in N. Sunderman's case the termination is illegal, unjustified and un-forceable.

10. For my discussions and findings upon issues above, it is awarded that the action of the Management of Delhi Milk Scheme, New Delhi in terminating the services of Shri Ishwar Singh, Mate w.e.f. 29-10-1971 is not justified and as such he is entitled to be reinstated in service with full back wages and other benefits and it is awarded accordingly. The workman would also be entitled to costs of these proceedings which are assessed at Rs. 500/-.

Further Ordered :

That requisite number of copies of this award may be sent to the appropriate Govt for necessary action at the end  
Dated : the 22nd December, 1980.

Dated 22nd December, 1980.

MAHFISH CHANDRA, Presiding Officer

[No. I-4202(10) /77-D.II(B)]

S. S. BHALLA, Desk Officer

नई दिल्ली, 4 फरवरी, 1981

**का० ६५६।—खान अधिनियम, 1952 (1952 का 35) की धारा 5 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त अक्षियों का प्रयोग करने हुए केन्द्रीय सरकार श्री योगेश कुमार शर्मा को मुख्य खान निरीक्षक के अधीन खान निरीक्षक के रूप में नियुक्त करता है।**

[का० सं० प्र०-12025/2/79-एम०-1]

जितेन्द्र कुमार जैन, अवार सचिव

New Delhi, the 4th February, 1981

**S.O. 656।—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 5 of the Mines Act, 1952 (35 of 1952), the Central Government hereby appoints Shri Yogesh Kumar Sharma as Inspector of Mines sub-ordinate to the Chief Inspector of Mines.**

[F. No. A-12025/2/79-M.I.]

J. K. JAIN, Under Secy.

New Delhi, the 4th February, 1981

**S.O. 657।—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Allahabad Bank, Calcutta and their workmen, which was received by the Central Government on the 30th January, 1981.**

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL,  
CALCUTTA

#### Reference No. 85 of 1980

**PARTIES : Employers in relation to the management of Allahabad Bank, Calcutta**

AND

Their Workmen

**APPEARANCES :**

On behalf of Employers : Mr. M. R. Sarbadhikari, Law Officer.

On the behalf of Workmen : Mr. Tapan Kumar Roy, Asstt. Secretary, Indian National Bank Employees Congress.

#### AWARD

This is a reference under Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 sent by the Government of India, by its Order No. I-12012/122/79-D. II.A dated 23rd October, 1980, to this Tribunal for adjudication of an industrial dispute between the employers in relation to the management of Allahabad Bank, Calcutta, hereinafter referred to as the "Bank" and their workmen represented by the Assistant General Secretary, Allahabad Bank Indian Staff Association, 14, India Exchange Place, Calcutta-1, hereinafter referred to as the "Association", in respect of an industrial dispute as mentioned in the schedule below :

"Whether the action of the management of Allahabad Bank, Calcutta in rejecting the application dated 27-3-1979 of Shri Niranjan Sardar, Sub-staff at New Alipore Branch of the Bank in Calcutta, for the post of Bill Collector is justified ? If not, to what relief is the workman concerned entitled?"

2. The parties were directed to file their respective written statement. Today was the date fixed for the purpose. Mr. M. R. Sarbadhikari, Law Officer of the Bank and Mr. Tapan

Kumar Roy, Assistant Secretary, Indian National Bank Employees Congress duly authorised by the Association filed a joint petition of Compromise duly signed by the Regional Manager of Regional Office No. 1 on behalf of the Bank and Debabrata Das, Secretary of the Association on behalf of the workman.

3. I have heard both Mr. Sarbadhikari and Mr. Roy. I have also heard Mr. Niranjan Sardar, the concerned workman who is present. It is submitted before me that the concerned workman has got his promotion which was the matter of dispute before this Tribunal and as such the Union has got no interest in this reference. It is also submitted by both the parties that a no dispute award may be passed.

4. Considering the circumstances of this case, I pass a "No dispute" award as prayed for by the parties concerned. The joint petition of compromise filed today shall form part hereof as Annexure "A".

R. BHATTACHARYA, Presiding Officer

Date : 21st January, 1981.

[No. I-12012(122) 79-D. II(A)]

#### ANNEXURE 'A'

BEFORE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, 20, ABDUL HAMID STREET, CALCUTTA-700069

In the matter of Government of India Labour Department Order No. I-12012/122/79-D.IIA dated the 23rd October, 1980

AND

In the matter of Industrial Dispute,

BETWEEN

Employers in relation to the management of Allahabad Bank (hereinafter referred to as Bank) Address, 15, India Exchange Place, Calcutta-700001

AND

Their Workman represented by Allahabad Bank Indian Staff Association (hereinafter referred to as Association) Address : 14, India Exchange Place, Calcutta-700001.

REF. 85/80

The joint petition of the above named Bank and the Association most respectfully sheweth :

1. That the above matter is now pending for adjudication before your honour under clause (d) of sub-section (1) of section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 on the issue whether the action of the management of Allahabad Bank, Calcutta in rejecting the application dated 27-3-79 of Sri Niranjan Sardar, Sub-staff at New Alipore Branch of the Bank in Calcutta, for the post of Bill Collector is justified. If not to what relief is the workman concerned entitled.

2. That the above named Association have claimed to have any interest in the above matter.

3. That the above named petitioners have jointly agreed not to contest the above dispute.

In the circumstances the above named petitioners therefore jointly pray that your honour will be graciously pleased to pass a no dispute award in the above matter.

And for this act of kindness your above named joint petitioners as in duty bound shall ever pray.

#### VERIFICATION

1. Sri Sarashi Kr. Roy Chowdhury, Regional Manager of Regional Office No. 1, Allahabad Bank hereby declare that the above statement of facts are true to my knowledge and belief.

This verification is signed at 15, India Exchange Place, Calcutta 24th on this day of December, 1980.

For and on behalf of Allahabad Bank, .....Regional Manager, Regional Office-1, Calcutta-700001. Date : 24-12-80.

For Allahabad Bank

Sri Sarashi Kr. Roy Chowdhury,  
Regional Manager of Regional Office No. 1

I, Sree Bebabrata Das, Secretary of Allahabad Bank Indian Staff Association hereby declare that the above statement of facts are true to my knowledge and belief.

This verification is signed at 15, India Exchange Place, Calcutta 24th on this day of December, 1980.

For and on behalf of Allahabad Bank Indian Staff Association Debabrata Das Secretary Allahabad Bank Indian Staff Association. Date : 24-12-80

For Allahabad Bank Indian Staff Association  
DEBABRATA DAS, Secy.

New Delhi, 6th February, 1981

**S.O. 658.**—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of United Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 30th January, 1981.

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL :  
CALCUTTA

Reference No. 73 of 1978

**PARTIES :**

Employers in relation to the management of United Bank of India.

AND

Their Workmen

**APPEARANCES :**

On behalf of Employers : Mr. Anjan Chatterjee, Asstt. Chief Officer (Personnel Dept.)

On behalf of Workmen : Absent.

**AWARD**

By the Order No. 1-12011/22/78-D.II.A. dated 10/11th August, 1978 the Government of India sent the present reference to this Tribunal for adjudication of an industrial dispute between the employers in relation to the management of United Bank of India, hereinafter described as the Bank, and their workmen represented by the General Secretary, United Bank of India Sramik Karamchari Samity (Working Committee), hereinafter called the "Union", in the following terms :

"Whether the action of the management of the United Bank of India, 16-Old Court House Street, Calcutta-700001 in suspending S/Shri Ambika Prasad Singh and Mongal Mukhia, Sub-Staff, Lake Gardens Branch of the Bank in Calcutta w.e.f. 1-12-77 before issuance of chargesheets is legal and justified ? If not, to what relief are the workmen concerned entitled ?"

2. Today was the date fixed for peremptory hearing of the case but Mr. Anjan Chatterjee, Assistant Chief Officer (Personnel Department) of the Bank duly authorised appeared with a joint petition of compromise duly signed by Deputy Chief Officer, Personnel Department, Head Office, on behalf of the Bank and Sajal Kanti Ain, President, Working Committee of the Union. It is submitted by Mr. Chatterjee that the matter has been amicably settled between the parties and the Bank is agreeable to pay the two concerned

workmen full wages during the period of their suspension less the subsistence allowance already paid and that the Union has accepted the offer made by the Bank. It is also stated that payments have already been made. Mr. Chatterjee submits that there is at present no dispute and an award may be passed stating that the dispute has been settled.

3. Although Mr. Chatterjee is present on behalf of the Bank, nobody appeared on behalf of the union in support of the joint petition of compromise. However, the fact remains that the petition has been signed by both the parties and I have no doubt that the matter has been amicably settled and that there is at present no dispute.

In the circumstances I pass a "No dispute" award in this case.

Dated, Calcutta, the 22nd January, 1981.

R. BHATTACHARYA, Presiding Officer  
[No. 1-12011(22)/78-D.II(A)]

**S.O. 659.**—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, New Delhi, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Union Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 30th January, 1981.

BEFORE SHRI MAHESH CHANDRA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, NEW DELHI

**I.D. No. 60 of 1980**

Shri Suraj Bhan S/o Shri Kali Ram,  
village Nayan, P.O. Alupur,  
District Karnal,

.....Petitioner

Versus

The Assistant General Manager,

Union Bank of India,  
Zonal Office, 26-28D, Connaught Place,  
New Delhi, ..Respondent.

**PRESENT :**

Shri Suraj Bhan, workman in person

Shri Ravindra Raj, Personnel Officer of the Bank.

**AWARD**

The Central Govt. as appropriate Govt. vide its order No. L-12012/92/79-D.II.A. dated the 30th June, 1980 referred an Industrial Dispute u/s 10 of the I.D. Act, 1947 to this Tribunal in the following terms :

"Whether the action of the management of Union Bank of India in relation to their Bhapra Branch (Haryana) in terminating the services of Shri Suraj Bhan, on 6-11-1978 is justified ? If not, to what relief is the workman concerned entitled ?"

2. On receipt of the reference it was ordered to be registered and usual notices were sent to the parties. In pursuance thereof a statement of claim was filed by the workman and before any written statement is filed, the parties appeared before me and filed a settlement Ex. S/I. After filing of the Ex. S/I, I recorded the statement of parties as under :

"The parties have settled the dispute vide S/I. A no dispute award be made in this case. The workman may be asked to report for duty on 27th January, 1981. Parties be left to bear costs."

3. In view thereof I am satisfied that the parties have settled the matter under reference. I am further satisfied from the perusal of Ex. S/I that the

settlement is for the benefit of the workman. As such it is awarded that in terms of the settlement Ex. S/1 the matter has been settled amicably and no dispute subsists any longer. The parties would be bound by the terms of settlement Ex. S/1 which will form part of this award. A no dispute award is accordingly made leaving the parties to bear their own costs.

#### Further Ordered

That requisite number of copies of this award may be sent to the appropriate Govt. for necessary action at their end.

Dated : the 26th December, 1980.

MAHESH CHANDRA, Presiding Officer.  
[No. I-12012(92)/79-DIL(V)]

The Presiding Officer,  
Central Government Industrial Tribunal,  
New Delhi.  
Sir,

Sub : Mr. Suraj Bhan V/s. Union Bank of India—  
Alleged Industrial Dispute.

This has reference to the above dispute pending before your goodself.

Though the Management denies the contentions raised by the Union as contained in the Claim Statement dated 25-9-80 to the Management, however, as a very special case has agreed to consider the request of the workman for reinstatement in the Bank's service, on the following terms and conditions :

- (1) That Mr. Suraj Bhan shall be employed afresh in the sub-staff cadre in the Bank's permanent service.
- (2) This permanent appointment of Mr. Suraj Bhan shall be in terms of Bank's rules and Regulations, Mr. Suraj Bhan shall not be entitled to any back wages or any other benefit, whatsoever, (retrospectively or otherwise) for his past temporary services.
- (3) The terms of this settlement shall not be used or quoted as a precedent in future by any one.

Mr. Suraj Bhan as a token of his accepting the aforesaid terms and conditions, is also signing this settlement hereinbelow.

You are, therefore, humbly prayed to pass a suitable award accordingly in accordance with the aforesaid settlement/ compromise.

Thanking you.

Accepted the above terms  
for offer of a permanent  
recon

Sd/-

Suraj Bhan 26-12-1980.

Signature of Mr. Suraj Bhan :

Ex. Temporary Peon.

Yours faithfully,

Sd/-

RAVINDER RAJ, Asstt Superintendent  
Union Bank of India  
Zonal Officer(N)  
26/28-D, Connaught Place  
New Delhi-110001.

New De'hi, the 7th February, 1981

S.O. 660—In pursuance of section 17 of the Industrial Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, New Delhi, in the industrial dispute bet-

ween the employers in relation to the management of State Bank of India and their workman, which was received by the Central Government on the 24th January, 1981.

BEFORE SHRI MAHESH CHANDRA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, NEW DELHI

#### I.D. No. 126 of 1977

The Assistant General Secretary,  
Delhi Circle State Bank Staff Association,  
House No. 2551, Sector-22,  
Chandigarh. . . Petitioner

#### Versus

The Regional Manager,  
State Bank of India,  
Region-V, Parliament Street,  
New Delhi. . . Respondent.

#### PRESENT :

Shri J. G. Verma, for self.  
Shri V. K. Gupta, Asstt. Law Officer of the Bank.

#### AWARD

The Central Govt. as appropriate Govt. vide its order No. I-12012/47/75/DIL/A dated the 23rd July, 1975 referred an Industrial Dispute u/s 10 of the I.D. Act, 1947 to Industrial Tribunal, Chandigarh in the following terms :

“Whether the action of the management of the State Bank of India, Region(V), New Delhi, in not considering Shri Jai Gopal Verma, clerk for the training officers test held on the 17th November, 1974, is unjustified ? If so, to what relief is the said workman entitled ?

2. On receipt of the reference it was ordered to be registered and notices were issued to the parties, in pursuance whereof the workman side filed a statement of claim. Thereafter a written statement was filed by the Bank and finally a replication was filed. Upon the pleadings of the parties following issues were framed by Shri H. R. Sodhi, for trial :

#### Preliminary Issue :

Whether the instant reference is bad in law and without jurisdiction for reasons stated in paras 1 to 3 of the preliminary objections, wherein if is pleaded inter alia that the matter of promotion is not within the competence of this Tribunal to decide, more so when disciplinary proceedings were pending against the workman and action the management was in accordance with the policy of the Bank ?

#### On Merits :

1. Whether the action of the respondent bank in not considering Shri Jai Gopal Verma, clerk, for the Training Officers' Test, held on 17th November, 1974 was unjustified ?
2. Whether the impugned action of the management of the respondent bank was activated by any vindictiveness, unfair labour practice or victimization on account of trade union activities of the concerned workman ?
3. If issues Nos. 1 and 2 are found against the management and for the workman, to what relief is the said workman entitled ?

3. The case was then adjourned for evidence but before any evidence was recorded this case was transferred to Industrial Tribunal, Delhi and it was registered by Industrial Tribunal, Delhi vide his order dated 31-10-76 and notices were issued to the parties for recording of evidence of the workman. Before the Industrial Tribunal, De'hi could record any evidence this case was transferred to this Tribunal in May 1977 and accordingly notices were issued to the parties for evidence. Evidence of the parties has been recorded, but before

arguments were heard an application for amendment of the written statement was filed which was allowed on payment of costs and following additional issue was framed in consequence of the said amendment, vide my order dated 8-8-80:

#### Additional Issue:

Whether any appeal was filed against the order of non consideration for test and if not, its effect?

4. Thereafter the arguments in the case were heard. I have gone through the evidence produced by the parties and after giving my considered thought to the matter before me I have come to the following findings.

5. The contention of the workman in his statement of claim is that he was working with the respondent bank as a clerk since 20-3-67; that during the course of his service the workman had been working diligently and honestly and had been earning regularly increments; that he has been an active trade union worker and has held different offices of the union of the Bank employees; that in 1974 a charge sheet was issued to the workman on 7-10-74 with the result that he could not take the promotion test scheduled to be held on 17-11-74 even though otherwise he was duly qualified to take the said test; that he has been suspended with a view to debar him from taking the test and the said action of the bank is malafide; discriminatory, an act of unfair labour practice and victimisation and hence this reference.

6. The Bank in its written statement has contended that the promotion is a management function and no relief can be granted to the workman in the instant case; that since disciplinary proceedings were pending against the workman and this was the policy of the bank not to admit any workman against whom disciplinary proceedings were pending in the test for promotion the bank was justified in not permitting the workman to take the said test. It is admitted by the Bank that the workman had been earning his increments and that he had been in service of the bank for more than 5 years at the time of test and that the workman was an active trade union worker but it is denied that the action of the bank in not admitting the workman to the promotion test was malafide or illegal or unjustifiable and an act of victimisation or unfair labour practice.

7. The evidence of the workman consists of his statement as W.W. 1 apart from Ex. W/1 to Ex. W/11. The evidence of the Bank consists of statements of M.W.1, Shri R. L. Mahendra, Deputy Chief Manager and M.W. 2 Shri V. K. Atora, Officer Grade I apart from Ex. M/1 to Ex. M/18, the documents.

#### Preliminary Issue:

8. I do not think that there is any merit in this issue. Keeping in view the order of reference the matter referred to this Tribunal is the justification of the action of the Management of State Bank of India in not considering Shri J. G. Verma, Clerk for the Training Officers Test held on 17-11-74. It nowhere involves the question of promotion. No doubt if the workman had taken the test and succeeded in that test this could have resulted in the promotion of the workman but what is to be considered in the instant case is the validity and justification of the action of the Bank in not permitting Shri Verma to take the test and in view thereof these objections taken in para Nos. 1, 2 and 3 of the written statement are irrelevant and do not arise and are only of academic interest. Even otherwise assuming that promotion is a Management function it has always been recognised that there are occasions when a Tribunal may have to interfere with promotions made by the Management or where some malafides and victimisation is involved in debaring a workman from promotion. May be that even after a finding of malafides or victimisation it may fall in the function of this Tribunal to decide the justification, malafides and illegality of the action of the management in debaring the workman from taking the test. It is difficult to accept that the promotion is purely a management's function in so far as the promotion or non promotion affects directly the workers and therefore this issue is decided against the Management. However it may be mentioned here that it is always for the management to lay down a general policy for promotion and in the discharge of that function the Tribunal may not interfere. With these observations this issue is decided against the Management.

#### ISSUE No. 1 and 2:

Both these issues are connected and can be dealt with in one head. It is stated by the workman in his statement of claim and in his testimony as W.W.1 that a training officer's test was due to be held on 17-11-74 by the Bank in pursuance of its circular dated the 24-10-74 copy Ex. W/1. It is further stated by him that he was eligible to the said test as he was put in 5 years of service and was below 35 years of age and had a graduate and had passed part I of the Institution of Banker's Examination and had not availed any other opportunity except once. These facts are not denied even by the Management. But the contention of the Management is that since charge sheet Ex. W/4 was pending against him therefore he was not included in the list Ex. W/2 for the purpose. The pendency of the charge sheet is not denied by the workman. It is rather admitted by him that said charge sheet was in fact pending against him. In the face of this position it would be difficult to accept the contention of the workman that the bank was not justified in not admitting the workman to the said test. The workman has not been able to find fault in any manner what so ever with the policy of the bank that those who were under charge sheet were not to be admitted to the test. Even otherwise this is a prerogative of the bank to decide the eligibility of persons to take the test. It cannot be said that the decision in the instant case to exclude those who were under disciplinary charge sheet from the test was malafide or actuated by dishonest intentions. It is also not established that the said action of the bank was an act of victimisation either. It is not that Shri Verma the workman in the instant case alone was excluded from the said test, there were others as well so excluded. There is nothing to suggest that the charge sheet Ex. W/4 had been issued only with a purpose to exclude Shri J. G. Verma and debar him from taking the said test. If at all it shows that the charge sheet was the result of inter-union rivalry and not an act of unfair labour practice or victimisation by the Bank. It may be mentioned here that the workman in the instant case had to feel sorry before he was exonerated of the charges. The said exoneration was in consequence of an agreement in the conciliation proceedings. It is admitted by the workman that Ex. M/1 is the proceeding of conciliation before the ALC(C) which bore his signatures and was correct. Keeping in view Ex. M/1 it is established beyond doubt that the exoneration was a result of sort of package deal between the union and the Management on the other hand. From the perusal of Ex. M/1 it would be found that it relates to the charge sheet dated 4-10-74 served upon this workman alongwith some other workmen by the bank authorities and it was agreed during conciliation that the matter was discussed separately with the representatives of the Association and the management including the Personnel Manager of SBI, New Delhi. In the interest of industrial peace and with a view to keep good relations in the industry, ultimately on the suggestion of the Asstt. Labour Commissioner (Central) Chandigarh, it was agreed that the individual employee involved in the matter will approach the Chief Manager, Chandigarh branch and shall express their regret for the incident of 18-1-74 orally, and assure for the future not to give opportunity for such happenings. This will be possible only on return of Mr. Kale from leave who is expected back at Chandigarh around 30th June, 1977. After the above, the Management has agreed to close the disciplinary proceedings against the above referred employee, and report to that effect shall be sent to the Asstt. Labour Commissioner (Central) Chandigarh thereafter. In view of the above, the representative of the Association did not press their demand, and accordingly the same is treated as closed. Such being the position it would be difficult to accept that the charge sheet was malafide or baseless or without any substance in it. The workman had to express their regrets for the incident of 18th January, 1974 and had to assure for not such happening in future before the disciplinary proceedings were closed against him. This itself shows that the action of the bank in serving the charge sheet was not unjustified, baseless or an act of victimisation or even an act of unfair labour practice.

7. The matter may be considered from yet another angle. Some incident took place on 18th January, 1974, whereupon letter Ex. W/5 was written by the President, Local Implementation Committee, State Bank of India, Chandigarh whereupon charge sheet Ex. W/4 was served. This fact is admitted by the workman in his statement as W.W. 1. Keeping in view

these facts and Ex. M/1 it cannot be said that the action of the bank in serving the charge sheet in the instant case was malafide, unjustified and actuated by vindictiveness or an act of unfair labour practice or an act of victimisation on account of trade union activities and as such issue No. 1 and 2 are decided against the workman and in favour of the management.

8. Issue No. 3 :

In view of my discussions and findings upon issue No. 1 and 2 above this issue is decided against the workman and it is held that he is not entitled to any relief.

9. Additional Issue No. 1 :

No evidence has been led by the workman upon this issue to show that any appeal was filed against the order of non-consideration of the test. But there is nothing which would affect the right of the workman to raise this dispute without filing the appeal, at least no such provision of law has been brought to my notice whereby this dispute to not have been raised without preferring appeal. In any case in view of my decision upon issue No. 1, 2 and 3 this issue is of academic interest only and it is held accordingly that non-filing of appeal does not in any manner affect the reference.

In view of my discussions and findings above it is held that the action of the management of the State Bank of India, Region V, New Delhi in not considering Shri Jai Gopal Verma, clerk, for the Training Officers Test held on 17th November, 1974, is justified and the workman is not entitled to any relief. The parties however are left to bear their own costs.

Further ordered :

Requisite number of copies of this award may be sent to the appropriate Government for necessary action at their end.

Dated, the 30th December, 1980.

MAHESH CHANDRA, Presiding Officer  
[No. L-12012/47/75-D.II(A)]

**S.O. 661.**—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, New Delhi, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of New Bank of India and their workmen, which was received by the Central Government on the 30th January, 1981.

BEFORE SHRI MAHESH CHANDRA, PRESIDING OFFICER, CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT, NEW DELHI

I.D. No. 54 of 1978

Shri Bhagwan Singh Arora, House No. DP 158, Jatuh-pura, Gurgaon, Haryana, ... Petitioner

Versus

The General Manager, New Bank of India Ltd., Tolstoy Marg, New Delhi-1, ... Respondent.

AWARD

The Central Government as appropriate Government vide its order No. I-12012/22/77-D.II.A dated the 4th May, 1977 referred an Industrial Dispute u/s 10 of the I.D. Act to this Tribunal in the following terms :

“Whether the action of the management of the New Bank of India, Sohna (Gurgaon) in terminating the services of Shri Bhagwan Singh Arora, clerk-cum-Cashier Sohna Branch of the Bank w.e.f. 20th January 1976 is legal and justified? If not, to what relief is the workman entitled?”

2. Upon receipt of the reference it was ordered to be registered and usual notices were sent to the parties, in pursuance whereof a statement of claim was filed by the workman and a written statement to the said statement of claim was filed by the Bank. Finally a replication was filed by the workman to the written statement. After admission and

denial of documents filed by the parties was effected following three issues were framed for trial.

1. Whether the reference is illegal as alleged by the Bank?
2. Whether the bank has lost confidence? If so, its effect?
3. Whether termination is valid as alleged by the Bank in terms of orders of reference?

3. I have gone through the evidence produced by the parties and have heard arguments at length and after giving my considered thought to the matter before me I have come to the following findings upon these issues :

4. Issue No. 1 :

From the perusal of written statement of the Bank it would be found that main objection challenging the validity of the reference taken up by the Bank, is that the reference is collective dispute and has not been espoused and no demand was raised and as such it was bad. It has been urged before me by the workman that the reference is not collective dispute and rather the reference was as a result of the demand raised by the workman. The entire stress of Id. counsel for the Management is upon the word 'workman' used in the third line of the order of reference, but I do not find much weight in the contention of the Id. counsel for the Bank. The word 'workman' appears to be a mis-print or a clerical mistake in the order of reference and the reference is in fact individual dispute. It is of course not denied by the Id. counsel for the Management that the dispute does qualify as an individual dispute u/s 2-A of the I.D. Act, 1947 in so far as it relates to the termination of services of Shri Bhagwan Singh Arora, clerk-cum-cashier. The fact that the word 'workmen' is a mis-print or a clerical error is confirmed by the fact that the copy of the order of reference has been endorsed to Shri Bhagwan Singh Arora and not to any union or association of workers and for that reason it cannot be said that the reference is bad. In so far as the reference qualifies as an individual dispute u/s 2-A no espousal or demand by any union or association of the worker was necessary and hence I do not find any weight in the contention of the Id. counsel for the management. Regarding the contention of the Id. counsel for the Bank that no demand was raised, reference may be made to Ex. R/2 which itself shows that the workman has vide said letter requested the bank to re-appoint him in the service and this would be deemed to be sufficient demand for the purposes of this dispute and it cannot be said that the workman has not raised any demand. Further more reference may be made to the admitted copy of failure of conciliation report which has been placed on record by the Management itself and a perusal thereof shows that the matter had been taken up in conciliation to the Assistant Labour Commissioner (Central) and it was thereafter that the present reference was made. Keeping in view the result of the conciliation proceedings it cannot be said that the reference was made by the Central Government as appropriate Government without any material or circumstance justifying therefor as alleged by the Id. counsel for the management. From whichever angle I may consider the matter before me I do not find any weight in the contention of the Id. counsel for the Management that the reference is bad as alleged in the preliminary objection and accordingly this issue is decided against the Management and in favour of the workman.

5. Issue No. 2 :

In order to prove this issue the Bank has produced Ex. M.W. 1/R-5, R-6, R-7 and R-8 which are the letters received by the Bank from its customers which go to show that the customers were not satisfied with the work of Shri Bhagwan Singh Arora and it is amongst others this reason which has led to the termination of the services of this workman. These documents are proved by the testimony of Shri S. K. Bhandari, Manager, Sohna Branch of the Bank who has been examined as M.W. 1. He has tendered his affidavit Ex. M.W. 1/1 which is duly sworn in, apart from tendering documents R-1 to R-10. During cross examination it is clearly stated by this witness that letters Ex. R/5 to R/8 were not specifically referred to in the termination letter though there was general reference regarding workman's behaviour towards the customers. In the affidavit Ex. M.W. 1/1 of M.W. 1 it is stated in para 5

that Shri Arora had failed to comply with the requisite conditions of his employment and his conduct towards the bank's customers and supervisors was found unsatisfactory. Shri B. S. Arora could not prove himself upto the mark and proved inefficient in discharge of his duties. His behaviour towards customers also was not satisfactory. In this connection the Bank received complaints from various customers. Complaints dated 13th January, 1976 from Shri Kanwar Lal, Harish Chand, commission agents Sohna (Gurgaon), Shri Madan Lal Ram Babu, Commission Agents Sohna (Gurgaon), and the Principal, Sant Nirankari Lok Priya College, Sohna, Gurgaon and dated 15th January, 1976 from Shri M/s. Hari Kishan Virendra Kumar, cloth commission agents, Sohna are Ex. R-5 to R-8 respectively so the bank relieved him from services in accordance with the terms and conditions of his employment. From the perusal of the statement of M.W. I read with letters Ex. R-5 to Ex. R-8 no doubt is left that the bank had lost confidence in Shri Bhagwan Singh Arora and in consequence terminated his services. It is certainly open to the bank to terminate the services of its workman when it has lost confidence in him and this having been done it cannot be said that the action of the bank on that score is illegal and unjustified and this issue is decided accordingly.

#### 6. Issue No. 3 :

The contention of the workman in his statement of claim is that he was appointed as Cashier-cum-clerk with the respondent vide appointment letter dated 26th December, 1975 after having passed the written test and he was posted at Sohna branch on 9th January, 1976 on a probation of six months and his services were terminated illegally, arbitrarily and without any reason w.e.f. 20th January, 1976 i.e. merely 11 days of his joining the services of the bank. It is contended further that the Manager had no power, or authority to terminate his services and as such the termination was illegal.

7. In reply it is not denied by the bank that the workman had joined the services as alleged. It is also not denied that he was appointed on six months probation. It is also not denied that the services of the workman were terminated as alleged. In the face of these facts the principal question which requires consideration by this Tribunal in the instant case is as to whether the termination of services of the workman has been effected by a competent person. The workman has not been able to draw my attention to any fact which shows that Shri S. K. Bhandari, the Manager of the Branch was not competent to terminate the services of the workman. Shri S. K. Bhandari has been examined as M.W. I and he has in para 10 of his affidavit stated that 'being a branch Manager of Sohna Branch and General Power of Attorney holder' on behalf of the Bank was fully competent and authorised to terminate the services of ex-employee Shri B. S. Arora who was justly, validly and legally terminated by the bank. The general power of attorney is Ex. R-10. The action was confirmed and ratified by the head office authorities of the Bank. I have perused the general power of attorney and do find that in accordance with para 14 of the said power of attorney Shri S. K. Bhandari 'had the control and supervision over the servants belonging to the said bank' which would mean that he had the power to terminate the services of the present workman as well. I would at this stage like to refer to order of termination of services of the workman copy whereof is Ex. R/2. It is not denied that the services were terminated by Shri S. K. Bhandari who was holding the rank of a Manager. Ex. R/1 is the letter of appointment which shows that the workman was appointed by an officer of the rank of a Manager. For that reason as well it cannot be said that Shri S. K. Bhandari was not competent to terminate the services of the workman. More fact that Shri S. K. Bhandari was the Manager of a Branch and the appointment letter was signed by a manager in the Central office would not make any difference because both of them are of the same status and hold the rank of a Manager and therefore it cannot be said that the termination is invalid on that score.

8. The workman had not served for more than 12 days when his services were terminated and as such the provisions of Section 25-F of the I.D. Act, 1947 are also not attracted by his case. Further more the workman was on probation for a period of six months and the services were terminated within 12 days of such probation much before he could complete his probation and for that reason also it cannot be

said that the termination is illegal. The workman had at no point of time been confirmed and had not acquired a right to continue and it was not necessary to hold any formal enquiry before his services were terminated. After the services of the workman were terminated he had submitted an application copy Ex. R/2-A. In pursuance whereof letter Ex. R/3 was issued to him by the Bank, the receipt whereof is admitted by the workman on the copy filed on record. A perusal of this document would show that copy thereof had been endorsed to Manager (Staff) as well and the action of the Manager was later approved and ratified by the higher authorities as well. The accumulative effect of my discussions above is that I have come to the conclusion that the termination of services of Shri B. S. Arora by the Management of New Bank of India, Sohna (Gurgaon) w.e.f. 20th January, 1976 is legal and justified and that the workman is not entitled to any relief what-so-ever and accordingly this issue is decided against the workman.

9. In view of my discussions and findings upon issues above, it is awarded that the action of the Management of New Bank of India, Sohna (Gurgaon) in terminating the services of Shri Bhagwan Singh Arora, Clerk-cum-cashier Sohna Branch of the Bank w.e.f. 20th January, 1976 is legal and justified and the workman is not entitled to any relief. However parties are left to bear their own costs.

Further ordered :

That requisite number of copies of this award may be sent to the appropriate Government for necessary action at their end.

Dated : 26th December, 1980.

MAHESH CHANDRA, Presiding Officer  
[No. L-12012(22)/77-D.II(A)]

**S.O. 662.**—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery, Chinakuri Sub-Area of M/s. Eastern Coalfield Limited and their workmen, which was received by the Central Government on the 2nd February, 1981.

**CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL :  
CALCUTTA  
Reference No. 54 of 1978**

**PARTIES :**

Employers in relation to the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery, Chinakuri Sub-Area of Eastern Coalfields Ltd.,

AND

Their Workmen.

**APPEARANCES :**

On behalf of Employers.—Mr. P. C. Roy, Dy. Personnel Manager, with Mr. A. N. Chatterjee, Sr. Personnel Officer.

On behalf of Workmen.—Mr. S. K. Chakravorty, Vice-President of the Union.

**STATE : West Bengal**

**INDUSTRY : Coal Mine**

**AWARD**

By the Order No. L-19012(39)/77-D-IV(B) dated 20th May, 1978, the Central Government sent this reference under Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947 to this Tribunal for adjudication of an alleged industrial dispute between the employers in relation to the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery, Chinakuri Sub-Area of Eastern Coalfields Ltd., P.O. Sunderchak (Burdwan), hereinafter referred to as the "Colliery", and their workmen represented by the Joint Secretary, Coal Mine Employees Union, P.O. Dighergarh, District Burdwan, hereinafter referred to as the "Union". The dispute has been formulated in the Schedule to the order of reference in the following words :

"Whether the action of the management of Chinakuri Sub-Area of Eastern Coalfields Limited, Sunderchak,

District Burdwan in denying the regularisation of Sarvashri Munshi Rai, Hari Mohan Dutta, Laxman Sau, Deonandan Rai, Gayadin Pandey, Balkishan Nonia, Chandrika Prasad, Sambhu Mazumdar, G. Pawan, Satyanarayan Paswan, Sudhanhu Dutta and Badal Ghosh as tyndals with effect from 1-12-75 is justified? If not, to what relief are the concerned workmen entitled?"

2. The colliery as well as the union appeared in this case and filed their respective written statements. The colliery in its written statement in paragraph 2 raised a preliminary point as to the nature of the dispute and the jurisdiction of this tribunal to adjudicate upon the alleged industrial dispute. According to the colliery the reference is incompetent inasmuch as the union has no locus standi to raise the instant dispute having no following in the Chinakuri 1/2 Pits colliery. The colliery has denied and challenges that any of the concerned workmen were members of the union and that the union was authorised to raise any dispute on their behalf.

3. In the written statement filed by the workmen it was simply stated that an industrial dispute was espoused and raised with the employers and demand was made by the union by a letter dated 7th May, 1977 and the matter was referred to the Assistant Labour Commissioner (Central), Asansol for conciliation proceedings. In reply to the written statement of the colliery, however, a rejoinder was filed by the union stating in paragraph 1 that the concerned workmen were members of the union and that it had legal right to raise the dispute. Of course, in the written statements made by both the parties statements were made with regard to the merits of their respective claims.

4. On the prayer of the colliery the Tribunal has heard the parties on preliminary issue regarding the jurisdiction of this tribunal to decide this case and also the nature of dispute. The points involved in the preliminary issue are as follows:

- (i) Whether the union represents a reasonable or appreciable number of workmen of the colliery?
- (ii) Whether the union has as its members a reasonable or appreciable number of workmen of the colliery?
- (iii) Whether the union or any officer of the union was duly authorised to espouse the case of the concerned workmen or to raise the present dispute?
- (iv) Whether the present dispute is an industrial dispute as defined by the Industrial Disputes Act?
- (v) Whether this tribunal has got jurisdiction to adjudicate upon the dispute referred to it?

5. The union has examined one of its Vice-Presidents as WW-1, whereas the colliery has examined its Headclerks as MW-1. The union has relied upon several pieces of documentary evidence and on the side of the colliery one document has been marked exhibit.

6. On the side of the union appeared Mr. S. K. Chakravorty, a Vice-President of the Union while Mr. P. C. Roy, Deputy Personnel Manager of the colliery appeared with Mr. A. N. Chatterjee, Senior Personnel Officer.

7. The contention of Mr. Chakravorty is that there are several unions working in the colliery and of them the union representing workmen in this case is one having several workmen of the colliery as its members. The concerned workmen are also members of the union and in a general meeting of the union a resolution was passed authorising the union to take up the cause of any of its members and by virtue of that authority the union is entitled to represent the workmen of the colliery. It has been further contended by Mr. Chakravorty that some workmen of the colliery made a representation to the union to take up their cause and thus the union was entitled to raise the present dispute. Mr. A. N. Chatterjee has, on the other hand, argued that no workman of the colliery was a member of the union and that the union cannot represent the workmen of the colliery because it does not have on its roll a reasonable or appreciable number of workmen of the colliery as members. Moreover, no reasonable, appreciable or sufficient number of workmen authorised the union to raise the

present dispute and, therefore, the instant dispute could not have been legally raised by the union and that the present dispute is not an industrial dispute according to the provisions of the Industrial Disputes Act. Mr. Chatterjee has submitted that the present reference is incompetent.

8. Let us now consider the evidence adduced in this case. The union has examined, as I have already stated, one witness on its side Siharsa Roy one of the Vice-Presidents. From this witness we get to know some of the employees of the colliery are members of the union and their number would be more than 100. He says that several unions work in the colliery along with his union. He has admitted that the number of workmen of the colliery would be about 2700. He has proved one Khata mentioning as membership register in respect of the present colliery and the number of the membership appearing therein is 101. The register is marked Ext. W-1. WW-1 has stated that the concerned workmen paid their subscriptions to the union and they were members and he has filed counter-foils of subscription book which have been marked Exts. W-2, W-2a and W-2b. He has also identified one application written to the union by some employees of the colliery. That has been marked Ext. W-3 and he says that the said application was not written in his presence and he knows some of the signatories. The said application consists of 113 signatures of which he has mentioned six names only whose signatures he knows. The witness has further proved the minutes of a general meeting of the union held on 24th April, 1977 marked Ext. W-4. According to this witness at this meeting the Executive Committee was authorised to take up the cases of the workers and he has admitted that no resolution was passed by the Executive Committee of the union but resolution was passed at the annual general meeting as already mentioned by him. The witness has further proved the application alleged to have been given to the union by the concerned 12 workmen. That application has been marked Ext. W-5. Of the signatures he knows only the signature of one Badal. During cross-examination the witness has stated that at present there is only 101 members of the Union. He has proved the endorsement on Ext. W-3 given by the President of the union directing the Joint Secretary to take up the case as necessary. That endorsement has been marked Ext. W-3a. That application, has admitted, was not placed before the Executive Committee meeting and that there was no separate resolution passed in respect of the application Ext. W-3. The witness's evidence is that the workmen of the colliery who became the members of the union did not apply in writing and that the 12 concerned workmen came together and became their members in February, 1977 but he cannot give the date when they were made members. He has further stated that whenever any employee was made member of the union, his signature is taken on the back of the counter-foil of the subscription receipt and those who could not write they usually put their thumb impressions on the back of the counterfoils.

9. On the side of the colliery the Headclerk of the colliery has stated that in 1977 and 1978 strength of the total workmen was more than 3000 and he has filed a copy of the monthly return of man power of the colliery in form p, marked Ext. M-1. He has admitted that several unions work in the colliery.

10. I will now consider how far and to what extent the evidence adduced in this case can be relied upon. First of all the union has contended that 101 workmen of the colliery out of 2700 are members of the union and, therefore, the union has got sufficient number of workmen of the colliery as its members to raise any industrial dispute on their behalf. For this purpose the union has relied upon certain counterfoils of subscription books, marked Ext. W-2 series. Vice-President of the union has stated in evidence that whenever any employee was made a member of the union their signatures were taken on the back of the counterfoils of the subscription receipts and those who could not write or read they usually put their thumb impressions on the back of the counterfoils. I have scrutinised the counterfoils and of the three subscription books exhibited in this case I find in one subscription book, Ext. W-2a, in first fourteen counterfoils, namely, Sl Nos. 51 to 64 some thumb impressions and signatures appear but in those counterfoils none of the names of the 12 concerned workmen appear. It is significant to note that in that book, namely Ext. W-2a, all the remaining counterfoils from 65 to 100 there is

neither any signature nor any thumb impression, to show that the subscription receipts relating to those counterfoils were ever given to any person and in these counterfoils without signature or thumb impression, the names of the concerned workmen appear. I have further examined the other two subscription books. No signature or thumb impression appears on the counterfoils in those two books and it appears to me that they have been written at one sitting and by the same man. The signature of the 12 for appearing them appear to be the same for each book. In this connection it should be noted that none of the workmen of the colliery alleged to be the members of the union including the 12 concerned workmen appeared before this Tribunal in support of the union's case that they are genuine members of the union or that they paid subscriptions to the union as such. WW-1 has said that the concerned workmen came together and became members in February 1977 but the counterfoils in Ext. W-2 show that the date of the counterfoils of the receipts in the name of these 12 workmen is of January 1977. Moreover of them one is Sambhu Majhi and not Sambhu Mazumdar as mentioned in the order of reference. In the circumstances, it cannot be stated that any workmen of the colliery, not to speak about the 12 concerned workmen, was a genuine member of the union or that the union had as its members the reasonable or appreciable or sufficient number of workmen of the colliery for raising industrial dispute. Even 101 workmen out of 2700 cannot be said to be reasonable or appreciable or sufficient number to raise any industrial dispute.

11. Regarding the authority of the union to raise the present dispute the union has further relied upon Ext. W-5, an application by the 12 workmen written to the Joint Secretary of the union. WW-1 has stated that he knows the signature of Badal one of the concerned workmen out of the 12 signatories appearing in the application. Again none of the signatories came before this Tribunal to say that they made any representation to the Joint Secretary as alleged or that they gave their signature or thumb impression as the case may be on the said application. The union has further relied upon a representation alleged to have been made in writing to the union for taking up the case of the workmen which has been marked Ext. W-3. This is a typed application in which a request has been made to the President of the Union to take up the case of the "under mentioned workers under I.D." for helping them as they suffer and the names are given as follows :

1. Ram Krishan Singh, Tindal, (not a party to this dispute).
2. Munshi Rai and other tindals.
3. Kish Bhagwan Singh for Category VI wages, and
4. Rasenoy Mahato and others for category.

Clearly, therefore, this application cannot be stated to be an authority for raising the present dispute. Again, there are 113 signatories. Of them union's witness knows only six. Again none of the signatories have been examined in this case to show whether it was a genuine document and whether it was signed by the workmen.

12. The next evidence regarding authority as relied upon by the union is the minutes of the general meeting held on 24th April, 1977. Its No. 1A as mentioned in this Ext. W-4 relates to report of the Joint Secretaries on behalf of the Executive Committee during the year 1976. It is stated here that the members of the general body appreciated the actions of the union and gave general authority to the next committee and the office-bearers to take up and sponsor industrial disputes, etc., on behalf of any workman of any establishment in the E.C.L and that it would not be necessary to have prior approval of the Executive Committee for raising any industrial dispute in respect of any member by any authorised officer of the union. It is further stated that if any workman whose grievances are to be redressed through the union the matter may be sponsored and conducted by the Joint Secretaries, Organising Secretaries, Zonal Secretary, President, Vice-President etc., who are authorised by the workmen under Section 36 of the Industrial Disputes Act. Mr. Chakravorty has argued that this resolution has authorised the union to espouse the cause of the workmen in the present case and to raise the present dispute as industrial dispute. The Vice-President has stated during his evidence that at the general meeting the Executive Committee was

authorised to take up the causes of the workmen. He has further stated that no resolution was passed by the Executive Committee of the union. He has referred to the annual general meeting for the resolution. Giving my best consideration to the resolution alleged to have been passed at the annual general meeting of the union appearing in Ext. W-4. I must hold that there was no proper, legal or regular resolution passed for espousing the cause of the workmen of the colliery to raise the present dispute as mentioned in the order of reference. The authority or the resolution must be quite explicit and clear for the purpose. I place no importance to Ext. W-4.

13. On consideration of the evidence on record and facts and circumstances of the case I must hold that the union had no reasonable, appreciable or sufficient number of workmen of the colliery as its member to raise any industrial dispute on behalf of the workmen, that the union or any of its officer, General Secretary or others, had no authority to espouse the cause of the concerned workmen or to raise the present dispute on behalf of the workmen and that the present dispute is not an industrial dispute as defined by the Industrial Disputes Act. In view of my finding above, I answer the 5 points mentioned in paragraph 4 hereinbefore in the negative and decide them against the Union and in favour of the Colliery. The reference is therefore incompetent. This Tribunal has got no jurisdiction to decide the dispute as industrial dispute as referred to it.

This is my award.

R. BHATTACHARYA, Presiding Officer  
[No. L-19012/39/77-D.II(A)]

Dated, Calcutta,  
The 27th January, 1981.

S.O. 663—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery of M/s. Eastern Coalfields Ltd. and their workmen, which was received by the Central Government on the 2nd February, 1981.

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL :  
CALCUTTA

Reference No. 55 of 1978

PARTIES :

Employers in relation to the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery, Eastern Coalfields Ltd.,

AND  
Their Workmen.

APPEARANCES :

On behalf of Employers.—Mr. P. C. Roy, Deputy Personnel Manager, with Mr. A. N. Chatterjee, Sr. Personnel Officer.

On behalf of Workmen.—Mr. Samiran Kr. Chakravorty, General Secretary (now Vice-President) of the Union.

STATE : West Bengal

INDUSTRY : Coal Mine

AWARD

This is a reference under Section 10 of the Industrial Disputes Act, 1947, sent to this Tribunal by the Government of India by its Order No. L-19012/69/77-D.IV(B) dated 20th May, 1978 in respect of an industrial dispute between the employers in relation to the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery, Eastern Coalfields Ltd. P.O. Sunderchok (Burdwan), hereinafter referred to as the "Colliery", and their workmen, represented by the Joint Secretary, Coal Mines Employees Union, P.O. Dishergharh (Burdwan), hereinafter referred to as the "Union". The

dispute has been formulated in the Schedule to the Order of Reference in the following words :

"Whether the action of the management of Chinakuri 1/2 Pits Colliery, Chinakuri Sub-Area of Eastern Coalfields Ltd. is justified :

- (a) in refusing employment to Shri Ram Krishna Singh, Tyndal from 8-3-76 to 26-9-76 ;
- (b) demoting him from tyndal (Category IV) to Mazdoor (Category-I) with effect from 27-9-76 ; and
- (c) deducting difference of wages between Category-IV and Category-I for the period 27-9-76 to 31-12-76 ?

If not, to what relief is the concerned workman entitled ?"

2. The union filed a written statement in this case on behalf of the workman, so also did the colliery in support of its case repudiating the claim of the union. The colliery prayed for hearing on the preliminary point as to whether or not the dispute involved in this reference is an industrial dispute and whether the reference is competent according to law. In this connection we may refer to the averments of the parties in their written statements on this point

3. In paragraph 5 of the written statement the Union has stated that this industrial dispute was espoused and raised by the union by its letter dated 22nd July, 1977. The company in their written statement-cum-rejoinder to the statements made in the written statement of the union has stated in paragraph 2 that the union has no locus standi to raise the dispute as it has hardly any following in the colliery and that the union was never authorised to raise any dispute on behalf of the workman. According to the colliery therefore, the reference was incompetent and without jurisdiction. A rejoinder was filed by the union and therein it has been stated "Union has members in the colliery and the said dispute has been raised being authorised by the workman concerned."

4. In view of the averments of the parties and on the prayer of the colliery, the preliminary point as to the jurisdiction of this tribunal to hear the present dispute has been heard. The points to be decided are :

- (i) whether a substantial or reasonable portion of the workmen of the colliery raised the present dispute ?
- (ii) whether a substantial or reasonable portion of the workmen authorised the union to raise the dispute and to espouse the cause of the workman mentioned in the order of reference, that is to say, whether the union has been duly authorised to raise this dispute ?
- (iii) whether the dispute is an industrial dispute, and
- (iv) whether this tribunal has got jurisdiction to adjudicate upon the dispute referred to it ?"

5. On these points the parties examined one witness each and several documents have been exhibited on both the sides.

6. Mr. Samiran Chakravorty, the Vice-President of the Union appeared on behalf of the workman and Mr. P. C. Roy, Deputy Personnel Manager with Mr. A. N. Chatterjee, Sr. Personnel Officer appeared for the colliery. The witness was examined by Mr. Chakravorty and he argued the case while Mr. Chatterjee argued on behalf of the colliery and examined one witness.

7. The contention of Mr. Chakravorty for the union is that the union has a number of employees of the colliery as its members, that several employees of the colliery made a representation to the union to take up the case of the workman, that there was a resolution in a general meeting of the union and that it was properly authorised and competent to raise the present dispute as industrial dispute espousing the cause of the workman having proper authority. Mr. Chatterjee, on the other hand, has contended that it has

not been proved that the union has any reasonable or appreciable number of workmen of the colliery as its members, that there is no evidence that the workman authorised the union to raise the present dispute and that even the union did not pass any resolution or come to a decision that the present dispute should be raised by the union. It has been argued that the present dispute is not an industrial dispute as it is not backed by the workmen of the colliery.

8. Let us now come to the evidence adduced in this case. First of all, I shall refer to the oral evidence of WW-1 Sriharsa Roy, one of the Vice-Presidents of the union. From his evidence we get that the union along with 8 or 9 other unions work in the colliery and out of the workmen of this colliery the union has got 101 as members. The witness has admitted that there are about 2700 employees of this colliery approximately and that all the employees of the colliery are not members of any of the unions. The witness has stated that the concerned workman Ram Krishan Singh is a member of the union. In support of this statement he has proved a membership register, marked Ext. W-1, two counterparts of the subscription receipts granted to Ram Krishan Singh, marked Ext. W-2 and W-2a, the minutes of a meeting where according to the witness a resolution authorising the union was passed to raise the present industrial dispute and the said minutes have been marked Ext. W-3. The witness has further produced one petition alleged to have been submitted containing signatures of some workmen, marked Ext. W-4. He has further produced one application submitted by the concerned workman Ram Krishan Singh, marked Ext. W-5 and lastly a copy of an application filed by the union addressing the colliery has been marked Ext. W-6. During cross-examination the witness has stated that he has no personal knowledge about the strength of the employees of the colliery but he has heard it from some persons. He has stated that there is no form or proforma on the basis of which a member is enlisted in the union. According to the witness, Ram Krishan did not apply in writing to the union for taking up his case nor was there any application in writing for being a member. The witness has further stated during cross-examination that whenever any subscription receipt is granted to the member, his signature or thumb impression is taken on the counterpart of the receipt. He has admitted also that there is no specific resolution for taking up the case of the present workman, namely Ram Krishan Singh mentioning his name.

9. As against this evidence the colliery has examined its Headclerk, Kailash Tiwari who has filed a copy of the return of the man power of the colliery in form P relating to workmen, marked Ext. M-1. According to him in 1977 the number of workmen of Chinakuri 1/2 Pits colliery was 3009. Of course in this list are included officers and casual labourers.

10. Ext. W-1 is a membership register in respect of the union. In the exhibit the name of one Ram Krishan Singh appears in Sl. No. 13. In Ext. W-2 and W-2a the counterparts of the subscription receipts in respect of the concerned workman, I do not find any signature or thumb impression of the member concerned on the back of it, but the Vice-President of the union has stated that whenever any subscription receipt is granted the member's signature or thumb impression is taken on the back of the counterpart. The concerned workman has not come forward to say that he is a genuine member of the union. In these circumstances, it is very difficult to say that Ram Krishan Singh the concerned workman was in fact a member of the Union.

11. The union's witness has stated that there are about 2700 workmen in the colliery and that the union has got only 101 out of them as its members. The question, therefore, is whether 101 workmen constitute a reasonable and substantial portion of the workmen of the colliery to raise an industrial dispute. This number is far from being reasonable or appreciable for the purpose of raising an industrial dispute. The union, therefore, did not represent reasonable or substantial portion of the workmen of the colliery.

12. Let us now see whether there was any authority for the union to raise the present dispute. For this purpose Mr. Chakravorty has relied upon the minutes of the meeting held on 24-4-1977, marked Ext. W-3. My attention has been drawn to Agenda 1A in Ext. W-3 wherein it has been stated that the members of the general body appreciated the

action of the union, gave general authority to the next committee and office-bearers to take and sponsor industrial dispute, etc. on behalf of any workmen of any establishment under ECL and that it would not be necessary to have prior approval of the Executive Committee to raise any industrial dispute in respect of any member by any authorised office bearers of the union. Mr. Chakravorty has argued that in view of this resolution any office-bearer of the union may raise an industrial dispute and in this connection my attention has been drawn to Ext. W-4, a typed petition to the President of the Union with 113 signatures. Out of the signatures WW-1 knows only the signatures of Munshi Roy, Gurupada Karmakar, Manik Ghose and Badal Ghose. But none of these 113 persons came before this Tribunal and gave evidence to say that the petition, Ext. W-4 is a genuine and bona fide application duly signed by 113 workmen of the colliery and no reason has been assigned as to why no workman of the colliery has been examined in this case in support of the union. I place no importance to this Ext. W-4. According to the union also this petition was signed by 113 out of the total number of 2700. That again, is not a reasonable or appreciable number for raising an industrial dispute. With regard to the resolution it has been made in general and although it is stated in one place that general authority was given to the next committee and the office-bearers to take and sponsor industrial dispute on behalf of the workmen, still there is no evidence that any committee considered the grievance of the workman relating to the present dispute and decided to take up and espouse the cause. This sort of resolution gives no authority to the union or any officer of the union to spouse the cause of workman in particular or workmen in general and to raise any dispute like the present one. Ext. W-3 does not, in my view, give any authority and valid authority to the union to raise the present dispute.

13. Ext. W-5 is a copy of a letter written to the Sub-Area Manager, Chinakuri Group alleged to have been forwarded to the Joint Secretary of the Union. It bears the thumb impression alleged to have been given by Ram Krishan Singh but Ram Krishan Singh has not come forward to depose in support of the evidence of WW-1. Ext. W-6 is a copy of the letter written by the Union to the Sub-Area Manager, Chinakuri group dated 22-7-1977. In this letter the union made certain demands in respect of the concerned workman.

14. Mr. Chakravorty relied on some copy of letters exhibited in this case to show that the union was asked to see the colliery authority for discussion regarding some industrial cases or disputes. His argument is that when the authority asked the union for discussion, certainly they represented the workmen. It appears that the union wrote several letters to the colliery regarding some complaints and the management of the colliery invited them for discussion. This invitation for discussion does not mean that the management of the colliery admitted the union as representative body. It was a good gesture on the part of the management to invite the union for discussion when union made some grievances. Even if individual workman wants some redress in respect of some grievances and if the management invites him for discussion that does not mean that the workman is representative of the workman and that they have authority to raise industrial disputes as defined by the Act. Moreover, there is no evidence that the colliery recognised the present union as proper representative on behalf of the workmen to raise industrial dispute. I place no importance to these letters referred to by Mr. Chakravorty.

15. Considering the evidence adduced in this case, I have no doubt that the union did not have any appreciable or reasonable number of workmen of the colliery on its roll as members, that no reasonable or appreciable number of workmen of the colliery authorised the union to raise the present dispute or take up the cause of the concerned workman Ram Krishan Singh and that the union had no authority to espouse and take up the cause of the concerned workman or to raise the present dispute on behalf of the workman.

16. In consequence of my findings above, I hold that the preliminary points as indicated earlier are all decided against the union and in favour of the colliery. I hold that the union did not represent any reasonable or appreciable number of workmen of the colliery, that they had no authority to espouse the cause of the workman and to raise the present dispute and that the present dispute is not an industrial

dispute as defined in Section 2(k) of the Industrial Disputes Act. As a result of these findings, this tribunal has got no jurisdiction to adjudicate upon the dispute in question. The present reference is incompetent.

This is my award.

Dated, Calcutta,  
The 27th January, 1981.

Sd/-  
R. BHATTACHARYA, Presiding Officer.  
[No. L-19012/69/77-D.IV(B)]

**S.O. 644.**—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Kuardih Colliery, Tirath Sub-Area of M/s. Eastern Coalfields Limited and their workmen, which was received by the Central Government on the 2nd February, 1981.

#### CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL

#### CALCUTTA

Reference No. 63 of 1978

#### PARTIES :

Employers in relation to the management of Kuardih Colliery, Tirath Sub-Area of M/s. Eastern Coalfields Limited.

AND

Their Workmen.

#### APPEARANCES .

On behalf of Employers.—Mr. P. L. Ojha, Sr. Personnel Officer, Satgram Area.

On behalf of Workmen.—Mr. A. Das Choudhury, Advocate.

STATE : West Bengal

INDUSTRY : Coal Mines.

#### AWARD

The Government of India by its Order No. L-19012(8)/78-D.IV(B) dated 4th July, 1978 sent the instant reference to this Tribunal for adjudication of an industrial dispute between the employers in relation to the management of Kuardih Colliery Tirath Sub-Area of M/s. Eastern Coalfields Limited, P.O. Kalipahari (Burdwan), hereinafter referred to as the "Colliery" and their workmen represented by the Joint General Secretary, Colliery Mazdoor Union (INTUC), Bastin Bazar, 27 G.T. Road, Asansol, District, Burdwan, hereinafter called "Union". The dispute has been formulated as follows :

"Whether the action of the management of Kuardih Colliery Tirath Sub-Area of M/s. Eastern Coalfields Ltd., P.O. Kalipahari, Distt. Burdwan in not appointing Shri Kadam Dey as Canteen Boy for the reason that he was not of 18 years under the Mines Act, '52 is justified ? If not, to what relief is the said workman entitled ?"

2. During the pendency of the present proceeding there was a talk of compromise between the union and the colliery and today a joint petition of compromise has been filed by both the parties. Mr. Anil Das Choudhury, learned Advocate appears on behalf of the union and Mr. P. L. Ojha, Sr. Personnel Officer represents the colliery. The concerned workman Kadam Dey is also present. It is submitted that an award may be passed in terms of the joint petition of compromise filed today.

3. I have heard all the parties concerned. I have also gone through the terms of compromise embodied in the joint petition of compromise. I am satisfied that the compromise is voluntary, legal and reasonable giving benefit to the concerned workman. As prayed for by the parties, I pass an award in terms of the joint petition of compromise filed today which shall form part hereof as Annexure "A".

Dated, Calcutta,  
The 28th January, 1981.

Sd/-  
R. BHATTACHARYA, Presiding Officer.  
[No. L-19012/8/78-D.IV(B)]

## ANNEXURE 'A'

BEFORE THE HON'BLE PRESIDING OFFICER CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL  
Reference No. 63 of 1978

## PARTIES :

Employers in relation to the Management of Kuardi Colliery, Tista Sub-Area of M/s. Eastern Coalfields Limited, P.O. Kalipahari, Distt; Burdwan

AND

Their Workmen

The employers and the workmen jointly beg to submit most respectfully that the Industrial Dispute which is the subject matter of the above reference has been agreed to be settled by the parties amicably on the following terms :--

## TERMS

- (1) That, the employers will provide an employment to the concerned workman Sri Kadam Dey in any of the collieries/establishments of the employers Co. and he will be appointed in any job of Cat. I (one as per Coal Wage Board Recommendations).
- (2) That, the employers will provide the said employment to the concerned workman within one month from the date of the settlement and the workman will be informed about the said offer through the union sponsoring the dispute.
- (3) That, the concerned workman will report for his duties at the Colliery/establishment mentioned in the said letter of the employers offering employment within 15 (fifteen) days of the date of receipt of the said letter through the union and on the failure of the concerned workman to report for his duties at the place offered by the employers, the employers will have no further obligation to provide any employment to the concerned workman.
- (4) That, an ex-gratia consideration, the employers will pay a sum of Rs. 2000 (Rupees two thousand only) to the concerned workman through Sri Provat Goswami, General Secretary of the Colliery Mazdoor Union (INTUC) within one month from the date of the settlement and the concerned workmen will give a stamped receipt acknowledging the payment of the said amount witnessed by Sri Provat Goswami.
- (5) That, the concerned workman or the union sponsoring the dispute will have no further claim for any other payment or cost.
- (6) That, the parties, therefore, jointly pray that the Hon'ble Tribunal will be pleased to accord its approval for settlement of the dispute on aforesaid terms and to pass an award accordingly by treating this petition as a part thereof.

For Workmen

Sd/-

1. (Provat Goswami)  
General Secretary,  
CMU (INTUC)  
Sd/-

2. (Subhendu Choudhury)  
Treasurer,  
CMU (INTUC)

For Employers

Sd/-

1. (S. K. Mondal)  
General Manager,  
Satgram Area.  
Sd/-

2. (Md. Jamaluddin)  
Dy. Chief Personnel Officer,  
Satgram Area.

Sd/-  
Concerned Workmen  
(Kadam Dey)  
Witness :

Dated, 16th January, 1981.  
Satgram Area, ECL

Sd/-

1. (P. I. Ojha)  
Sr. Personnel Officer,  
Satgram Area.  
19-1-81  
Sd/-

2. (Basudeb Gupta)  
Secretary, CMU (INTUC).  
Kuardi Colliery Branch.

**S.O. 665.**--In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Calcutta, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Victoria Colliery of M/s. Bharat Coking Coal Ltd. and their workmen, which was received by the Central Government on the 2-2-1981.

CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL,  
CALCUTTA

## Reference No. 91 of 1980

## PARTIES :

Employers in relation to the management of Victoria Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Barakar, District Burdwan.

AND

Their Workmen

## APPEARANCES :

On behalf of Employers.—Absent.  
On behalf of Workmen.—Absent.

STATE : West Bengal

INDUSTRY : Coal Mines.

## AWARD

The Government of India by its Order No. L. 19012(21)/80-D.IV(B) dated 12th/17th November, 1980 sent the present reference to this Tribunal for adjudication of an industrial dispute between the employers in relation to the management of Victoria Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Barakar, District Burdwan (West Bengal), herein-after referred to as the "Colliery", and their workmen represented by the Vice-President, Colliery Mazdoor Congress (HMS), C/o Victoria West Colliery, P.O. Barakar, District Burdwan herein-after referred to as the "Union". The dispute mentioned in the Order Reference is as follows :

"Whether the management of Victoria Colliery of Messrs Bharat Coking Coal Limited, Post Office Barakar, District Burdwan (West Bengal) is justified in not regularising Shri Monilal Mandal in the post of Register Keeper, Grade II (Clerical) with effect from 14th April, 1978 ? If not, to what relief is the concerned workman entitled ?"

2. On receipt of the reference notices were issued to the parties concerned for filing their respective written statement regarding the dispute on 22-1-1981. It appears from the acknowledgement receipts that the colliery received the notice on 22-12-1980 and the Vice-President of the Union received the same on 19-12-1980. But in spite of the receipt of the notice none of the parties appeared or filed any written statement on the date fixed, namely 22-1-1981.

3. Today was fixed for passing orders. Even today none of the parties has taken any step whatsoever to file their written statement or to pursue the dispute. In the circumstances, I presume and hold that the parties are not interested in the dispute and that, at present, there is no dispute between the parties. I, therefore, pass a "No dispute" award.

Dated, Calcutta,  
The 27th January, 1981.

R. BHATTACHARYA, Presiding Officer.

[No. L-19012/21/80-D.IV(B)]

**S.O. 666.**--In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal, Hyderabad, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of Singareni Collieries Co. Ltd., Shanti Khani, Bellampalli Division II and their workmen, which was received by the Central Government on the 4th February, 1981.

BEFORE THE INDUSTRIAL TRIBUNAL (CENTRAL) AT  
HYDERABAD

## Industrial Dispute No. 34 of 1978

## BETWEEN

Workmen of Singareni Collieries Co. Ltd., Shanti Khani, Bellampalli Division-II, Bellampalli, Adilabad District (A.P.).

AND

The Management of Singareni Collieries Co. Ltd., Shanti Khani, Bellampalli Division-II, Bellampalli, Adilabad District (A.P.).

## APPEARANCES:

- (1) Sri A. Lakshmana Rao, Advocate—for the Workman.
- (2) Sri K. Srinivasa Murthy, Hon. Secretary, Federation of Chambers of Commerce and Industry for Management.

## AWARD

Under Sections 7A and 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, the Government of India, Ministry of Labour referred to this Tribunal the following dispute between the Workmen and the Management of M/s. Singareni Collieries Company Limited, Shanti Khani, Bellampalli Division-II, Bellampalli, Adilabad District, Andhra Pradesh by its letter F. No L-21012(16)/78-D-IV(B) dated 20th October, 1978.

## SCHEDULE

"Whether the action of the Divisional Superintendent, Bellampalli Division-II, Messrs. Singareni, Collieries Company Limited, Bellampalli, Adilabad District (Andhra Pradesh) in dismissing Shri Bade Ramaswamy from service with effect from 31st July, 1977 is justified? If not, to what relief is the concerned workman entitled?"

2. By my order dated 4th December, 1980, I held that the enquiry conducted by M.W. 1 in this matter was fair and proper. So the only other points to be considered are 'whether the finding arrived at by the Enquiry Officer is just, and whether the punishment awarded warrants any interference', and so I will refer to the pleadings relevant to the same.

3. The case of the workman is as follows:—The finding of the Enquiry Officer is contrary to the evidence on record. It is perverse as no prudent person would have arrived at that finding on the basis of the material on record. It is highly doubtful whether the morning incident took place at all. The complainant himself admitted that he did not report the matter to his superiors. If such thing has really happened, no employer would have kept quiet without reporting to superiors. The incident is stated to have taken place at the worksite where number of employees will usually be working. But none was produced before the Enquiry Officer, apart from the complainant, to speak about the morning incident. As the delinquent and his witnesses were not cross-examined, their versions should have been held as true especially when there are material contradictions in the evidence of the witnesses for the complainant. The workman herein was an active member of the Singareni Collieries Workers' Union, a recognised trade union in Singareni Collieries Company Limited. He is a delegate of the said union at Bellampalli. Taking advantage of the minor incident that took place at about 4.00 P.M. on 17th April, 1977, the Management issued a charge-sheet connecting it with the alleged incident that took place on the same day morning. The accident which took place at 4.00 P.M. on 17th April, 1977 outside the mine premises has nothing to do with employment or any of its conditions. But the Management connected it with morning incident to show that it had something to do with discipline of the employees working in the mine. This is a clear case of victimisation, and the services of this workman were terminated mainly for his lawful trade union activities rather than for mis-conduct. Under any circumstances, the punishment is harsh and grossly dis-proportionate to the gravity of offence if any.

4. The case of the Management is briefly as follows:—The findings of the Enquiry Officer are supported by legal

evidence. It is not correct to say that they are perverse or not based on material on record. No person can come to a different conclusion than what has been arrived at by the Enquiry Officer on the basis of the material on record. Singareni Collieries Workers Union is not a recognised trade union of this Company at Bellampalli Division. This workman never represented the other workmen of this Company in any joint or conciliation meetings. He never represented individual workman's case in any of the grievance committee meetings. This Management is not aware of any trade union activities of this workman. The allegation that the Petitioner was dismissed for his trade union activities is concocted and an after thought devised for the purpose of this case.

5. The points for consideration are:—

- (1) Whether the finding of guilt arrived at by M.W. 1 the Enquiry Officer is just?
- (2) Whether there are any circumstances to warrant interference with the punishment of dismissal?

6. POINT 1.—Mansoor Hussain is working as Mining Sirdar in the mine of this Company in Shanti Khani, and this workman was working as a Tyndoor workman in the same mine. The case of the Management is that on the morning of 17th April, 1977 Mansoor Hussain distributed work to workmen and went to bank-head at about 8 A.M. Then this workman went to Mansoor Hussain and enquired him whether he would give acting allowance to Pamula Bhumaiah who was drafted to work as a 'Tyndal' on that day and then Mansoor Hussain informed this workman that if a person is acting in replacement, he would definitely get acting allowance, and then this workman heckled by stating that such 'good behaviour should be there and not loud thinking and then Mansoor Hussain replied that whether he had broad mind or narrow mind, it would be appreciated if he had broad mind, and he asked him to mind his work. When this workman questioned Mansoor Hussain as to whether he would test his mind and that he would show that evening at Melahar Cafe. Mansoor Hussain did not take it seriously and then he attended to his work. After the end of the shift, he along with Dasari Narsaiah left the mine at 4.00 or 4.30 P.M. on that day and they were going on cycles to their houses. At the magazine road corner (turning), this workman came on cycle from behind and dashed against the front wheel of the cycle of Mansoor Hussain. Then he slowed down the cycle and got down and this workman also got down from his cycle and took a sprag from the carrier of his cycle and lifted it to strike him, and when he questioned him as to why he was behaving like that, he beat him with that sprag on his right thigh which resulted in bleeding injuries. When this workman raised his sprag to beat him again, Dasari Narsaiah who was with Mansoor Hussain, and Thippa Odello who was coming from behind, intervened and stopped this workman from further beating Mansoor Hussain. After that, this workman went away and Dasari Narsaiah and Odello took Mansoor Hussain to his house. Because of that injury, he could not attend to his work on the following day and then the Colliery Manager interrogated him as to what happened and asked him to give in writing and accordingly he gave a written complaint. Dasari Narsaiah and Thippa Odello supported the version of Mansoor Hussain in regard to the evening incident. Both of them stated that this workman beat Mansoor Hussain with a sprag.

7. The case of this workman is that no incident took place on the morning of 17th April, 1977, and on that evening he went with Pamula Bhumaiah, his witness on cycle with speed, and due to the narrowness of the path, his cycle hit the cycle of Mansoor Hussain and he fell on the bushes and this workman also fell on bushes. Then both himself and Mansoor Hussain got up and then he found small injuries on Mansoor Hussain but they were not heavily bleeding. Later he and Pamula Bhumaiah went away.

8. The Enquiry Officer had given cogent reasons for believing the evidence of Odello, who stated that there was sprag in the hand of this workman. The learned counsel for workman had not referred to any material to show that the finding is perverse or that it is not based on material. It is true that except the evidence of the complainant, there is no other evidence about the alleged incident in the morning. But the material on record clearly speaks about the incident in the evening. The Enquiry Officer inspected the scene of offence and he also stated that the injuries on the thigh of Mansoor Hussain could not have been caused with a cycle. Even this workman had not stated that it was caused with a cycle.

9. Nothing is referred to dis-credit the evidence of Odeloo. Further the injury was on the thigh and there were no injuries on the palms or on the knees of Mansoor Hussain. If it is a case of fall with face downwards, there would have been injuries on the palms or on the knees even before the thigh had come into contact with the ground. So that circumstance also supports the version of Hussain that it was caused by this workman. So even though it was a case of uncorroborated testimony of the complainant in regard to the alleged incident in the morning, still as his version in regard to the incident in the evening is supported by oral evidence and also the circumstances in regard to the incident, it can be stated that the finding of the Enquiry Officer in regard to the guilt of this workman can be treated as just and I find accordingly.

10. POINT 2.—Even though in the claims statement it is stated that this workman was an active member of the trade union and it is a case of victimisation, the learned counsel for the workman had not advanced arguments in regard to the same, for the obvious reason that there is no material to support the same.

11. This workman is aged 31 years. He joined service in this mine in 1967. The learned counsel for this workman urged as follows:—He is a mazdoor workman of the lowest cadre and hence he can be treated as village rustic. Even the complainant stated that alteration with the workman is normal and hence he had not reported the alleged morning incident on 17th April, 1977. Further it is a case where only one blow was given, if the case of the complainant is believed. So in such a case the Management ought to have taken lenient view instead of dismissing this workman for such a minor incident.

12. It was urged for the Management as follows:—It is a case where on the morning of 17th April, 1977 this workman heckled Mansoor Hussain, his immediate superior officer and challenged as a threat also. Hence he took a sprag with him and beat Mansoor Hussain on the way to his house. So it is a pre-planned attack. It is also a case where this workman aimed a second blow, and it had not fallen on Mansoor Hussain as the persons present prevented it. It is a case of bleeding injury. Supervisory staff cannot be placed at the mercy of workers. Moreover this workman was not having unblemished career. In 1972 he was suspended for 10 days after enquiry, as he abused and assaulted another mining Sirdar. On 28th March, 1977 he was suspended for 4 days after enquiry for threatening Surveyor in Building Department, on 3rd September, 1976. Hence the Management is justified in dismissing this workman and it is not proper to allow him to continue in service as mining Sirdars would be afraid to supervise his work.

13. The version of Mansoor Hussain shows that on the morning of 17th April, 1977 this workman heckled him in the course of enquiry by him (this workman) about the acting allowance payable to Pamula Bhumaiah. So it is not even a case where this workman was interested in that allowance. It is also a case of challenging threat in the morning and beating the mining Sirdar in the evening. It is also a case of causing bleeding injury to the mining Sirdar with a sprag. Of course while it is stated for the Management that this workman took sprag with him for beating Hussain, it was stated for the workman that took that tool in an usual manner; and then it was replied for the Management at the time of arguments that no one is allowed to take tools from the mine and that this workman had no need to use sprag during the course of his work. But there is no evidence to support either of the two versions.

14. Anyhow within 5 years after this workman joined in mine, he assaulted the mining Sirdar. Again in September, 1976 he behaved in an indecent manner with Surveyor in Building Department and for that he was punished on 28th March, 1977 and he was suspended from 30th March, 1977 to 2-4-1977 while this incident had taken place on 17th April, 1977. It shows that even the punishment which he suffered about a fortnight prior to this incident did not make any change in his attitude. It is also a case of beating his immediate superior causing bleeding injuries. So in the circumstances even though the workman is young and put in service for a decade prior to this incident, the punishment of dismissal cannot be treated as harsh or severe, and I find accordingly.

15. It may be noted that the earlier punishments were put to this workman during the course of enquiry after second show cause notice was given after the Enquiry Officer found this workman guilty for the incident on the evening April, 17, 1977. So it can be stated that the Management gave this workman opportunity to explain if any in regard to the earlier punishments.

16. Before concluding it has to be stated that even though in the claims statement it was pleaded that the incident which took place on 17th April, 1977 at 4.00 P.M. outside the mine premises has nothing to do with employment or any of its conditions, the learned counsel for workman had not pressed that point for the obvious reason that the material on record disclosed that the said incident in the evening is in regard to the threat made by this workman to Mansoor Hussain in the morning in the mine and so this incident can be treated as an incident arising out of employment in view of the decision referred to in 1975(4) Supreme Court Cases page 731 MULCHANDANI ELECTRICAL AND RADIO INDUSTRIES LTD. v. WORKMEN (GUPTA J.). Therein it was held that the allegation of assault was an act subversive of discipline and on a plain reading of the clause, the words 'within the premises or precincts of the establishment' refer not to the place where the act which is subversive of discipline or good behaviour is committed but where the consequence of such an act manifests itself. In other words an act, wherever committed, if it has the effect of subverting discipline or good behaviour within the premises or precincts of the establishment, will amount to misconduct under the Standing Order.

17. Standing Order 16(5) of this Company is as follows:— "Drunkenness, fighting, riotous or disorderly or indecent behaviour denotes misconduct". (vide page 2 of Ex. M1).

It does not even refer to such conduct in the precincts of the Management. Anyhow as the assault of the mining Sirdar by this workman on the road was in pursuance of the challenge made by him in the mine on that morning, in view of the above decision of the Supreme Court, it can be stated that the said act on the part of this workman was in regard to his employment.

18. In the result, I find that the action of the Divisional Superintendent, Bellampalli Division-II, Messrs. Singareni Collieries Company Limited, Bellampalli, Adilabad District (Andhra Pradesh) in dismissing Shri Bade Ramaswamy from service with effect from 31st July, 1977 is justified. Award is passed accordingly.

Dictated to the Stenographer, transcribed by him and corrected by me and given under my hand and seal of this Tribunal, this the 24th day of January, 1981.

#### APPENDIX OF EVIDENCE

#### WITNESS EXAMINED

#### FOR WORKMAN :

W.W. 1 Sri Bade Ramaswamy.

#### DOCUMENTS EXHIBITED FOR THE WORKMAN :

Ex. W. 1 Letter addressed by Sri Bade Ramaswamy to Sri S. M. E.

#### DOCUMENTS EXHIBITED FOR THE MANAGEMENT :

Ex. M 1 Domestic Enquiry file of Sri Bade Ramaswamy.

Ex. M 1(a) Statement of Sri Bade Ramaswamy recorded by K. DANIEL (at page No. 36 in Ex. M1).

Ex. M 1(b) Statement recorded by the Enquiry Officer at page 57 in Ex. M1.

#### FOR MANAGEMENT :

M.W. 1 Sri K. Daniel.  
V. NEELADRI RAO, Presiding Officer

INDUSTRIAL TRIBUNAL

[No. I-21012/16/78-D.IV(B)]

S. S. MEHTA, Desk Officer